न्यायसम्बोधन-2

(दिनांक 01-01-2007 को प्रथम राष्ट्रीय महासम्मेलन के शुभ अवसर पर श्री गुरुदेव द्वारा दिए गए सम्बोधन के संपादित अंश)

न्यायधर्म अपनाओ!
समस्त राष्ट्रीय समस्याओं से छुटकारा पाओ!!

लेखक

श्री अरविन्द 'अंकुर'

न्यायधर्मसभा

जगजीतपुर, कनखल, हरिद्वार (उत्तरांचल)

फोन : 01334 - 244760, मोबाइल : 09319360554

वेबसाइट : www.nyayadharmsabha.org

ईमेल : info@nyayadharmsabha.org

© : All Rights Reserved to Dharm Sansthapak Sangh, Haridwar

न्यायनिवेदन

हे प्रभो! सत्बुद्धि दो समता सदा मन में पले।
न्याय सामन्जस्य का दीपक सदा जग में जले।।

अर्थ में संस्कार में व्यवहार में भी न्याय हो।
आत्महित सबका सधे अध्यात्म का समुपाय हो।।

न्याय ही आधार हो विधि के उचित निर्माण का।
राष्ट्रधर्म यही सदा है न्यायपथ कल्याण का।।

व्यक्ति को शिक्षा मिले परिवार को आजीविका।
क्षेत्र को सुविधा सुखद हो सृष्टि को संरक्षिका।।

इस धरा पर हे प्रभो! शुभ न्याय का विस्तार हो।
तज विषमता भेद मानव में परस्पर प्यार हो।।

❀❀❀

1 जनवरी 2007 को प्रथम न्यायसम्मेलन के अवसर पर श्रीगुरुजी द्वारा दिए गए सम्बोधन के सम्पादित अंश

प्रिय मित्रों,

*जब तक हम सोई हुई दशा में रहते हैं तब तक हम अन्याय से नहीं बच सकते। जंगल से मंगल की ओर जाने के लिए हमें जागरूक होना पड़ता है, शिक्षित और सुसभ्य होना पड़ता है। कहावत प्रसिद्ध है–**'तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग जरा।'** अगर हम सोचें कि जंग से अन्याय मिट जाता है, तो यह सम्भव नहीं है। जंग तो जंगलीपन का ही पर्याय है। जंग का मतलब है कि हमने अपना जंगलीपन नहीं छोड़ा। जंग नहीं जागरूकता चाहिए, शक्ति नहीं सत्य चाहिए। खूनी जेहाद और रक्तक्रान्ति किसी समस्या के मानवीय समाधान नहीं हैं। जंग के लिए शक्ति चाहिए, जागरूकता के लिए सत्य चाहिए। अगर आपके पास सत्य नहीं है, तो आपकी शक्ति को शक्ति का दर्जा प्राप्त नहीं होगा। अंधकार की कोई ताकत नहीं होती। सत्य प्रकाश है, असत्य अंधकार है। अंधकार में कोई ताकत नहीं होती। जो कुछ भी ताकत होती है, वह सत्य में ही होती है। इसलिए धर्म का आधार शक्ति नहीं बन पाई। सत्य ही धर्म का आधार बना। शास्त्रवचन है–**'यो वै स धर्मः सत्यं वै तत्'** अर्थात् 'निश्चय ही जो यह धर्म है, सत्य ही है।' शक्ति को धर्म का आधार स्वीकार नहीं किया गया और यदि स्वीकार किया भी जाता, तो जंगलराज से आगे यात्रा नहीं होती। हमारी आर्षमनीषा ने इस पर चिन्तन किया और पाया कि इस जंगलीपन से बचने का एक ही उपाय है; वह यह है– सही बात की जानकारी और तदनुकूल आचार–व्यवहार। अतः सत्य की खोज की गई और पाया गया कि इस जगत में दूसरा कोई नहीं। एक ही ईश्वरीय तत्त्व से सारी सृष्टि की रचना हुई है। यहाँ दूसरा कोई नहीं है तो जो एक के लिए है, वही संसार में दूसरे के लिए हो, इसी व्यवहार को न्याय कहा गया है। जब सत्य की खोज हुई तो उस सत्य के आधार पर जो कानून बना वह न्याय का कानून था, न्याय का नियम था, न्याय का विधान था। यह न्याय का नियम, विधान, कानून कहता है– 'जंगल की जो व्यवस्था है, उसके जैसा मत चलो।' न्याय का कानून कहता है कि इस जंगलत्व में मंगलत्व की प्रतिष्ठा करो। न्याय ही मंगलराज है, अन्याय ही जंगलराज है। 'नय' धातु से 'न्याय' शब्द बना है। 'न्याय' शब्द में ही 'नियम' समाहित है। संस्कृत की 'णीञ्' धातु है। 'नि' ध ातु भी वही है, जिससे नीति, नियम, नयन, नेत्र, नेतृत्व, नेता, न्याय आदि शब्द बने हैं। नेत्र खुल जायें तो नेतृत्त्व करना आसान हो जाता है। अन्यथा **'अन्धो अन्धा ठेलिया, दोनों कूप पड़न्त।'** प्राचीनकाल में गुरु का पद नेतृत्त्व का पद था। ब्राह्मण ही गुरु कहलाता था। ब्राह्मण कौन था–**'ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।'** अर्थात् 'जो ब्रह्म को जान गया, वह ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है।' यह भी कहा गया है कि ब्रह्मज्ञान ही नयन है, नेत्र है। सामान्य नेत्रों से तो भ्रम ही दिखाई देता है, लेकिन ज्ञानचक्षु से, ज्ञाननेत्र से भ्रम का उन्मूलन हो जाता है। ज्ञानचक्षु से देखने पर समदर्शिता दिखाई पड़ती है। समदर्शिता इस ज्ञानचक्षु का गुण है। सत्य के दर्पण में दो नहीं दिखते। एक ही आकाशरूपी आत्मा सबमें भीतर–बाहर उपस्थित है। एक ही प्राणवायु सबमें सूत्र की भाँति स्थित है, एक ही वायु श्वाँस के रूप में सबकी नाक में नकेल की भाँति पिरोई हुई है। एक ही ऊर्जा सभी रोबोटों को चला रही है। जीवनीशक्ति एक ही है। आपकी निर्माणसामग्री एक ही है। उस एक ही तत्त्व से सब कुछ निर्मित हुआ। पंचतत्त्वों में सबसे पहले आकाश उत्पन्न हुआ। फिर वेद कहता है–*

'आकाशात् वायुः वायोरग्निः अग्निर्जलः जलात्पृथिवी' *अर्थात् आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी क्रमशः उत्पन्न हुए। यह क्रमबद्ध स्थिति पता चली। खोजने पर ऋषियों ने कहा–* ***'सच्चाई यह है कि ये आकाश के परमाणु सघन होकर वायु हो जाते हैं, वायु ही सघन होकर अग्नि हो जाता है, अग्नि ही सघन होकर जल हो जाता है और जल ही सघन होकर पृथ्वी हो जाता है।'*** *वास्तव में पूर्ववर्ती तत्त्व पश्चात्वर्ती तत्त्वों का सृजन करते हैं। वह ब्रह्म ही आकाश होकर प्रकट है। आकाश ही वायु को प्रकट करता है। आकाश और वायु ही अग्नि को प्रकट करते हैं। आकाश, वायु और अग्नि ही जल को प्रकट करते हैं। आकाश, वायु, अग्नि और जल ही पृथ्वी को प्रकट करते हैं। अतः एक ब्रह्मतत्त्व से ही इन पंचतत्त्वों का निर्माण हुआ है। सभी सनातन ग्रंथ अनादिकाल से हजारों स्थानों पर इस तत्त्वदर्शन की चर्चा करते हैं। इन पंचतत्त्वों से ही सब कुछ बना है–* ***'क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंचतत्त्व यह रचित शरीरा॥'*** *जो कुछ भी आपके शरीर में ठोस है, वह सब पृथ्वीतत्त्व है। शरीर में जो कुछ भी रस–रक्त है, वह सब जलतत्त्व है। शरीर में जो कुछ भी तापक्रम है, 98 डिग्री वह अग्नितत्त्व है। शरीर में जो कुछ भी हलचल है, गति है, ताकत है, बल है, शक्ति है, वह सब वायुतत्त्व है। शरीर में जो कुछ भी पोला भाग है, खाली जगह है, आयतन है, विस्तार है, वह सब आकाशतत्त्व है। अब आज का विज्ञान भी इन सब बातों से सहमत है, कोई बच नहीं रहा। अब देखें पूर्व का ज्ञान जहाँ तक गया था, आज का विज्ञान भी वहीं तक पहुँच गया है। सारी थ्योरी इसी प्रतिपादन पर आकर ठहर जाती है–* ***'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।'*** *अर्थात् 'इस संसार में ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरी किसी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है।' एक ही ब्रह्मतत्त्व से क्रमशः पंचतत्त्वों का विकास हुआ है और इन पंचतत्त्वों से ही सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ है। जब कोई दूसरा नहीं है, तो दूसरे की खिलाफत क्यों? यह दूसरा कौन आया बीच में? जब अनादिकाल से आपकी संस्कृति, आपकी सभ्यता, आपका सिद्धान्त, आपका दर्शन, आपका ज्ञान, आपका विज्ञान सब कुछ यही कहता रहा है, तो फिर ये पारस्परिक द्वैत–द्वन्द्व का उपद्रव कहाँ से आया? कौन लेकर आया? दूसरे की खिलाफत क्यों शुरु हुई? ये मुसलमान कहाँ से पैदा हो गया? ये सिख कहाँ से पैदा हो गया? ये ईसाई कहाँ से पैदा हो गया? ये हिन्दू कहाँ से पैदा हो गया बीच में अचानक? तुम्हारी दृष्टि में ये भ्रम क्यों पैदा हो गया कि तुमने एक को शिक्षा दी और दूसरे को नहीं दी? तुमने एक को रोजगार दिया और दूसरे को नहीं दिया? तुमने एक को सुखसुविधा दी और दूसरे को नहीं दी? तुमने एक को संरक्षण दिया और दूसरे को नहीं दिया? ये क्या था? क्या ये धोखा था कि संसाधनों का तुमने समुचित बँटवारा नहीं किया? शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण आदि का जनाधिकार कुछ लोगों से छीन लिया गया। वही काम हिन्दू ने किया, वही काम मुसलमान ने किया, वही काम सिख ने किया, वही काम ईसाई ने किया, वही काम डाकू ने किया, वही काम साधू ने किया। इस अन्याय के मत में सभी एक थे। अन्याय के मुद्दे पर डाकू और साधू दोनों एक थे। नियम–विधान की अनैतिकता के मुद्दे पर दोनों एक थे।*

'विधान' शब्द बना है 'विद्' धातु से, जिसका अभिप्राय 'ज्ञान' से है। सत्य का अत्यन्तिम प्रतिपादन ही 'ज्ञान' है। अतः सत्ज्ञान ही विधान का आधार है। सत् क्या है? अद्वैत ही सत् है। चिरपुरातन काल से सत्य का यही प्रतिपादन है। आदिशंकराचार्य ने भी इस अद्वैत को परिभाषित किया है– ***'न द्वैतः इति अद्वैतः।'*** *आपके आदिशंकराचार्य ने इस दार्शनिकता पर काफी काम किया। उन्होंने कहा–* ***'न द्वैतः इति अद्वैतः।'*** *अर्थात् जहाँ पर द्वैत गिर जाता है, द्वैत नहीं रह जाता है, वहीं अद्वैत है। आपकी दृष्टि में जब दो व्यक्तियों अथवा*

दो वस्तुओं के बीच द्वैत दिखना बंद हो जाए तभी आप ज्ञानी हैं, पंडित हैं। पंडित समदर्शी होता है–***'विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि । शुनि चैव श्वपाके च पण्डितः समदर्शिनः॥'*** आपकी गीता, आपके भागवत्, आपकी कुरान, आपके पुराण, आपकी बाइबिल, आपके वेद, आपके उपनिषद् सब यही कहते हैं, लेकिन आप सभी ग्रन्थ रखे बैठे हो; उसे पढ़ना नहीं चाहते। सारा हिन्दुस्तान, सारा पाकिस्तान सब मूर्खिस्तान में कनवर्ट (परिवर्तित) हो गया है। आजादी के समय लगभग 90% लोग यहाँ कृषिकर्म में संलग्न थे। ***'कृषिप्रधान देश गौप्रधान कृषि'*** का नारा लगाते हुए पिछड़ते चले गए थे। शिक्षा के अभाव में लोग अविकसित रह गए और कृषि पर आश्रित हो गए। वाणिज्य आदि कर्म करने की सामर्थ्य का विकास ही नहीं हुआ। मन और वाणी विकसित होने पर ही वाणिज्यकर्म की सामर्थ्य प्राप्त होती है। अशिक्षा के कारण विकट परिस्थिति में फँसे हुए कृषि पर आश्रित मनुष्यों की कृषिभूमि भी छीन ली गई। राजाओं, नवाबों, बादशाहों, जमींदारों द्वारा आदमी का रोजगार छीन लिया गया था। साधारण लोग दास बनने के लिए मजबूर हो गए थे, बँधुआमजदूरीप्रथा चल पड़ी थी। परिणामस्वरूप लोग गरीब होते गए। गरीबी ने लोगों की कमर तोड़ दी। इस देश में लगभग 50 करोड़ लोग आजादी के 60 वर्ष बाद भी दो जून की रोटी नहीं जुटा पाते। इस देश में लाखों लोग गरीबी अथवा बेरोजगारी के कारण आत्महत्या कर रहे हैं। इस देश में 20 करोड़ लोग संसाधनविहीन हैं, आजीविकाविहीन हैं, बेरोजगारी से ग्रस्त हैं। इसी देश में 70 करोड़ लोग अनपढ़ घूम रहे हैं। बाकी देशों का हाल बताने की ज़रूरत नहीं कि सोमालिया का क्या हाल है? आँकड़े बताते हैं कि अमेरिका में भी लगभग 15 करोड़ लोग भुखमरी के शिकार हैं। आप सभी जानते हैं। सब कुछ होते हुए भी तुम भिखारी बने घूम रहे हो क्योंकि समुद्र के तट पर एक डकैत कुर्सी लगाकर और बन्दूक लेकर बैठ गया। उसने कहा कि यह सब कुछ मेरा है। हालाँकि अरबों-खरबों आदमी उस समुद्र का पानी पीते तो भी कोई कमी होने वाली नहीं थी। लेकिन हुआ क्या कि एक गुण्डा बंदूक लेकर कुर्सी लगाकर किनारे पर बैठ गया। उसने कहा–***'अगर किसी ने भी दूर-दूर तक कहीं से चुल्लू भर पानी भी उठाया तो गोली मार दूँगा।'*** उस गुण्डाराज ने ऐसा कहकर सारी जनता को डरा दिया। सारी जनता डर गई! अज्ञान ही भय का मूल कारण है। पहले तो उनकी शिक्षा छीन ली गई ताकि ये अज्ञानी हो जाएँ, बौद्धिकरुप से ये कंगाल हो जाएँ। बौद्धिकरूप से कंगाल होने के बाद जब ये डर की वृत्ति से पीड़ित हो जायेंगे, तब इनको डरा दिया जाएगा और डरा हुआ आदमी प्यासा मरेगा, उफ तक नहीं करेगा, चुप रहेगा। न्यायशीलता के मुद्दे पर सारा साधुसमाज चुप है। श्री श्रीरविशंकर महाराज चुप हैं। श्री पायलट बाबा चुप हैं। बाबा रामदेव जी चुप हैं। श्री सुधांशु जी चुप हैं। बापू आशाराम जी चुप हैं। शान्तिकुँज शान्त है, ब्रह्माकुमारीज मिशन 'ॐ शान्ति' किए बैठा है। सभी कथावाचक चुप हैं। कई सन्त-महात्मा तो उन्हीं अन्यायकारी राजनीतिज्ञों से मिले हुए हैं। इनमें से कई लोग न्याय का जनमत सर्वेक्षण पत्र देखकर भाग जाते हैं। देखो लीला इनकी! लेकिन इनके नीचे की सारी जनता इनकी टाँगों के नीचे से निकलती चली जा रही है। इनकी कुर्सी के पाँव निकलते जा रहे हैं। इन सबके अनुयायी न्याय के मुद्दे पर हमसे सहमत हैं और इनका मुखिया भाग रहा है, मतदान फॉर्म लेकर। इनके नीचे के पदाधिकारी सब हमारी बात से सहमत है। सब कहते हैं कि ***'हाँ! हाँ! यह न्याय तो होना ही चाहिए। शिक्षा, रोजगार, सुअसुविधा, संरक्षण आदि चारों न्यायशील जनाधिकार जनता को मिलने ही चाहिए।'*** हम लोगों के भी शायद यही अभियान थे लेकिन पता नहीं आजकल क्या कर रहे हैं? शान्तिकुंज का भी यही हाल है। उनके यहाँ मुखिया के अतिरिक्त लगभग

*सारे बड़े पदाधिकारियों का सर्वेक्षण हो चुका है। डर के मारे कोई दिख नहीं रहा आज, पीले कपड़े वाला। जबकि सभी को बुलाया गया था। कार्ड देने पर भी, मुखियाओं के डर के मारे कोई नहीं आता कि वहाँ से उसको जो कुछ रुपये वेतन या निर्वाहभत्ते के रूप में दिए जाते हैं वे रुपये मारे जायेंगे और वह स्वयं भूखों मर जाएगा। बाहर सरकार भी नौकरी देने वाली नहीं है। गलती से *शान्तिकुंज में प्रवेश कर गया है। फिर उसका क्या हाल होगा। उनमें से कई हमसे सहमत हैं। हमसे टेलीफोन पर भी बात करते हैं। बाहर आने की हिम्मत नहीं है। वे कहते हैं कि अगर हमको रोज़गार दिला दोगे तो ठीक है। फिर आ जायेंगे। *शान्तिकुंज की कथनी और करनी में भारी भेद उत्पन्न हो गया है। युगनिर्माणयोजना के अभियान पहले कुछ और थे, वर्तमान कार्यक्रम बिल्कुल विपरीत हो गए हैं। उनके सद्गुरु श्रीरामशर्मा द्वारा लिखी गई पुस्तकों में सर्वत्र सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य के समर्थन में बातें लिखी गई हैं। किन्तु उनके अनुयायी भटके हुए देवता बनकर घूम रहे हैं। सत्युग और रामराज्य की बातें कहीं पीछे छूट चुकी हैं। हर संगठन का यही हाल है। पहले वे सत्युग (सत्य-प्रेम-न्याय-पुण्य का युग) लाना चाहते थे। अब कलियुग (असत्य-घृणा-अन्याय-पाप का युग) स्वीकार किए बैठे हैं।*

*शान्तिकुंज की कथनी

विश्वव्यापी अर्थसंकट (गरीबी) वास्तविक नहीं, पूर्णतया कृत्रिम (बनावटी) है। धरतीमाता की उर्वरता इतनी न्यून नहीं है कि अपनी संतानों का भरण-पोषण न कर सके। ***कुछ लोगों ने सम्पत्ति के उपार्जन के साधनों को अपने कब्जे में कर रखा है। फलतः सर्वसाधारण को उससे वंचित रहना पड़ रहा है।*** *.....व्यक्तिवादी आपाधापी जितनी बढ़ेगी, उतनी ही विषमता बढ़ेगी। एक ओर खड्डे होंगे दूसरी ओर टीले। टीले आकर्षक हो सकते हैं, खड्डों की भयंकरता आतंकित कर सकती है। उपयोगिता तो समतल भूमि की ही है। .. ..मानवसमाज की प्रगति एकता-समता के आधार पर ही संभव है, अन्यथा एक ओर अहंकार अट्टहास कर रहा होगा, दूसरी ओर पिछड़ेपन के सींखचे में फँसी हुई अधिकांश जनता चीत्कार करती हुई मरती-खपती चली जाएगी। .....छुट-पुट पृथक-पृथक राष्ट्रों की सत्ता एक विश्व राष्ट्र में विलीन हो सकती है। जिसप्रकार एक देश के कई प्रान्त कई जिले होते हैं उसीप्रकार एक विश्वराष्ट्र के अंतर्गत समस्त देश रहें और उनकी सीमारेखाएँ भौगोलिक आधार पर एक नए सिरे से निर्धारित कर ली जाएँ, तो उसमें किसका क्या हर्ज होगा? विश्व राष्ट्र की फौज ही सर्वत्र सुरक्षा व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होगी। देश और विदेश के बीच आए दिन होते रहने वाले युद्धों के लिए कहीं कोई कारण शेष न रहेगा। भूमि पर, प्राकृतिक सम्पदा पर किसी क्षेत्र के निवासी अपना एकाधिकार न रख सकेंगे। जलमार्ग, थलमार्ग, नभमार्ग से सर्वत्र सबको जाने की सुविधा हो। सुविधासाधनों के अनुरूप जनसंख्या की बसावट कर दी जाये। खनिज तथा दूसरे प्राकृतिक साधनों का उपयोग सभी लोगों के लिए सुलभ बनाया जाए। हर किसी को श्रम करना पड़े और हर किसी को उत्पादन में हिस्सा मिले तो विषमता कहीं रहेगी ही नहीं। तब विद्वेष और विद्रोह के कारण ही बचे नहीं रहेंगे। युद्ध कौन करेगा? आज की सर्वनाशी युद्ध विभीषिका में अणुअस्त्रों का समावेश हो जाने से मानवी अस्तित्व के लिए संकट खड़ा हो गया है। इनकी सामयिक रोकथाम जिस किसी भी उपाय से संभव हो, की जानी चाहिए। पर इस तथ्य को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि अंतिम विश्वशांति की स्थापना युद्धों की पूर्णतया समाप्ति विश्वराष्ट्र का निर्माण होने से ही संभव होगी। .....* ***समय ने, विवेक ने, न्याय ने यदि वही कुछ परिवर्तन चाहा, तो उसे स्वीकार करने में भी हिचक की आवश्यकता नहीं है।*** *.....अद्वैत-सिद्धान्त में सर्वत्र एक ही आत्मा का अस्तित्व माना गया है। सबमें एक ही आलोक प्रतिबिम्ब जगमगा रहा है। हम सब मणि-माणिकों की तरह पृथक होते हुए भी एक सूत्र में बँधे हुए हैं। हम सब एक हैं। एकात्मक भाव ही आत्मविकास की धुरी है। सीमित अहंता को क्षुद्रता का चिह्न माना गया है। बिलगाव तथा संकीर्ण-स्वार्थपरता की आत्मिक तत्त्वज्ञान ने पग-पग पर भर्त्सना की है और उसके असीम दुष्परिणामों का विस्तारपूर्वक दिग्दर्शन कराया है। संकीर्णता के सीमाबंधन ही असंख्य समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। उसी के कारण मानवी गरिमा का ह्रास होता है और अनेकानेक संकट खड़े होते हैं। स्नेह-सौजन्य की, एकता और समानता की नीति अपनाई जा सके, तो वर्तमान साधनों से ही अपने संसार में, अपने युग में, सुख-संपदा का बाहुल्य और आनंद का सर्वत्र हर्षोल्लास बिखरता देखा जा सकता है। .....कमी साधनों की नहीं, समस्या संकटों की नहीं, कठिनाई एक ही है कि आत्मिक एकता के दृष्टिकोण की उपेक्षा की गई और उसका उपहास किया गया।*

-(श्रीरामशर्मा आचार्य, पुस्तक : समस्त समस्याओं का समाधान : अध्यात्म)

*एक आदमी समुद्र के किनारे कुर्सी लगाकर बैठ जाता है, बन्दूक लेकर, और कहता है–**'अगर किसी ने पानी को हाथ लगाया तो उसका बुरा हाल कर दूँगा।'** अब ये अज्ञानी और डरी हुई जनता चुपचाप एक किनारे डर-दब कर बैठ गई कि **'भाई चुप रहना! कुछ बोलना ठीक नहीं।'** ऐसे ही डर के मारे चुप बैठे रहे आप। हिन्दुस्तान में पहले तो हिन्दू राजा ही प्रजा को लूटते रहे, फिर 800 साल आपको मुगल बादशाह लूटते रहे, 200 साल आपको अँग्रेजी किंग लूटते रहे, पुर्तगाली लूटते रहे, दूसरे लोग लूटते रहे। मिश्र, फारस, फ्रांस, यूनान, शक, हूण जो कोई भी थे सबने आप पर हमला किया और लूटा। किन्तु आप अपनी बहादुरी बताते रहे कि हम बड़े श्रेष्ठ हैं, महान है, हमारे पास ज्ञान है। अच्छा चलो मान लिया कि ज्ञान था तो फिर डर क्यों रहे थे? हार (defeat) बताती है और तुम्हारे चेहरे का भय बताता है कि तुम डरपोक, कायर, बुज़दिल और बेईमान बने बैठे थे। एक-एक रोटी के लिए डर रहा है हिन्दुस्तान का आदमी कि कहीं उसकी रोटी न छिन जाए। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय देश के कई नागरिक अँग्रेजी राज के कर्मचारी-अधिकारी बनकर भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनकारियों के विरुद्ध क्रूरतम व्यवहार करते रहे, अँग्रेजों द्वारा प्रदत्त अपनी रोजी-रोटी के लिए। इस रोजी-रोटी के भय ने तुम्हें कायर, बुजदिल, बेईमान और मक्कार बना रखा है। आज भी सरकार के कई बड़े-बड़े उच्चाधिकारी सर्वेक्षण अभियान में सम्मिलित हुए। किन्तु उन्होंने स्पष्ट कहा कि बात तो आपकी ठीक है लेकिन अगर हम सरकारी कर्मचारी इसमें खुलकर सामने आयेंगे, तो सरकार हमें बर्खास्त कर देगी। न्याय के पक्ष में खड़े होने के लिए सरकार से डर रहें हैं! क्या सरकार अन्यायी है, अनैतिक है। सरकार बनी थी आपको अभय देने के लिए, आपको अन्याय से बचाने के लिए। राष्ट्र में न्याय और नैतिकता की रक्षा के लिए ही सरकार बनी थी, तो सरकार से डर कैसा? आप कहते रहे कि आपको स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है। फिर भी डर रहे हैं। सही बात कहने से डर रहे हैं। हर प्रशासनिक अधिकारी डर रहा है, एस.पी. रैंक का आदमी डर रहा है, कलेक्टर रैंक का आदमी डर रहा है। हमने कहा डरो मत! हम तुम्हारे साथ हैं। घबराने की कोई जरूरत नहीं है। ये सारा डर का वातावरण अभी दूर हो जाएगा। बहुत से लोगों को तो अभी तक यही लगता है कि वे अभी भी गुलाम हैं। इन डरे हुए लोगों की किसप्रकार से सिट्टी-पिट्टी गुम है। ये हमारी संस्था के कार्यक्रमों में आने से भी घबराते हैं। सोचते हैं कि ये तो पता नहीं क्या कर रहे हैं? और पता नहीं क्या-क्या बोलते हैं? और वे सोचते हैं कि कहीं कोई बात सरकार के खिलाफ न चली जाए? कहीं सरकार कोई एक्शन न ले बैठे? अगर तुम न्याय की बात करते हो, अगर सत्य की बात करते हो, तो ये सरकार के खिलाफ कैसे चला जाता है? सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य की बातें सरकार के खिलाफ क्यों चली जाती हैं? इसका मतलब है कि सरकार असत्य, घृणा, अन्याय, पाप पर खड़ी हुई है और फिर वही तुम्हारा भाग्य निर्धारित करती है। तो तुम्हारी जिन्दगी का कच्चा चिट्ठा कहाँ पहुँचेगा यमलोक (नर्क) में या फिर इन्द्रलोक (स्वर्ग) में, यह सोचने वाली बात है। डर-डर कर काम नहीं चलेगा। सही बात कहना सीखो। आज प्रत्येक महापुरुष की बातें सरकार के खिलाफ सिद्ध हो रही हैं। गाँधी, अम्बेडकर, सुभाष, विवेकानन्द, अरविन्दोघोष, सरदार भगत, राम, कृष्ण, मुहम्मद, जीसस, कबीर, नानक, बुद्ध, महावीर आदि सभी सत्पुरुषों की बातें सरकार के खिलाफ हैं, क्योंकि ये सभी लोग सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य के पक्षधर हैं। अब तो प्रायः दुनिया के सब देशों की सरकारें अपने-अपने देशों के न्यायालयों से भी घबरा रही हैं, क्योंकि न्यायालयों के निर्णय भी सरकारों के खिलाफ जा रहे हैं। कई देशों के राष्ट्रपतियों ने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को बर्खास्त करके अपने भय का प्रमाण दिया है।*

आजादी के आंदोलन के समय अँग्रेजों ने गीता पर पाबंदी लगा दी थी कि इसको छापा न जाए। क्यों न छापा जाए ? क्योंकि इसको पढ़ने के बाद लोग हिम्मती हो जाते हैं। इसको जो पढ़ लेता है, उसके अन्दर हिम्मत पैदा हो जाती है। उन्होनें कहा कि इसे छापना बन्द करो, बेन लगा दिया पूरे देश में गीता पर। प्रायः सभी लोग यह जानते हैं। गीता में लिखा है-**'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।'** अर्थात् 'शरीर की मृत्यु से तुम्हारी मृत्यु नहीं होती। तुम्हारी आत्मा अमर है। उसे न शस्त्र काट सकता है, न आग जला सकती है।' तो बड़ी दिक्कत हुई अँग्रेजों को। वे चाहते थे कि तुम मरने से डरो। किन्तु सत्य कहता है, तुम मरने से मत डरो। गीता कहती है-**'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि'** अर्थात् 'तुम्हारी आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते।' लोग कहते हैं- 'तलवार लगती है तो दर्द होता है, शस्त्र काटता तो है।' लेकिन भगवद्गीता ऐसी बात क्यों कर रही है ? वह तुम्हारी आत्मिक दशा की बात कह रही है, तुम्हारी शारीरिक दशा की बात नहीं कह रही है। तुम्हारे अंदर एक सूक्ष्मशरीर भी होता है, जो न कटता है, न जलता है, न मरता है। वह शाश्वत है, सनातन है। तो एक सूक्ष्मशरीर भी आपके अंदर होता है जो स्थूलशरीर के कटने से कटता नहीं, इसके मरने से मरता नहीं, इसके बिगड़ने से बिगड़ता नहीं, इसके खराब होने से खराब नहीं होता और गीता में आगे कहा गया है कि वह बार-बार ऐसे स्थूलशरीर धारण भी कर सकता है। इस बात का प्रचार है गीता में, कृष्ण के वचनों में। तो अँग्रेजों ने इस पर पाबंदी लगा दी, क्योंकि भारतीय इसे पढ़ने के बाद बहुत गुर्राते हैं। ये कहते हैं कि तुम हमको मार नहीं सकते क्योंकि हम तो अमर हैं। हम फिर से ज़न्म ले लेंगे। हम फिर से तुम से लड़ेंगे। तो अँग्रजों ने कहा कि यह गीता इस टाइप का भ्रामक प्रचार कर रही है। इससे तो राजद्रोह पनप जाएगा क्योंकि ये मरने से जब नहीं डरेंगे तो कहेंगे कि हम फिर आकर आंदोलन करेंगे-**'अंग्रेजों भारत छोड़ो।'** तिलक गीता पढ़ते थे, इन्होंने गीता पर भाष्य भी लिखा। गाँधी गीता पढ़ते थे, इनका भी गीता पर भाष्य है। सरदार भगतसिंह गीता पढ़ते थे, फाँसी पर चढ़ते समय भी गीता उनके साथ थी। दूसरे बहुत से आन्दोलनकारी लोग भी गीता पढ़ते थे। सुभाष गीता पढ़ते थे। सबने गीता पढ़ी और पाया कि **'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।'** अतः लोगों में साहस जाग गया। लोगों ने कहा कि भाई ये अँग्रेज लोग हमको मरने से ही तो डरा रहे हैं तो फिर अब डर खत्म हुआ। अब इनसे पूछो कि तुम यहाँ राज क्यों कर रहे हो ? तुम अपने घर जाओ। हमें विदेशी जूते खाने का कोई शौक नहीं है। हम तो विगत हजारों वर्षों से देशी जूते खाने के अभ्यस्त हैं। हम देशी जूते खायेंगे। अंग्रेजी नहीं, काँग्रेसी जूते खायेंगे, तो काँग्रेस को बैठा लिया। महात्मा गाँधी जी का अन्तिम संदेश क्या था ?

***गाँधी जी ने अपने आखिरी वसीयतनामा में कहा- 'देखना काँग्रेसियों ! तुम आगे राजनीति न करना, आज़ादी के बाद तुम काँग्रेस को भंग कर देना।'** यह संस्था डाकुओं का गिरोह बन

*महात्मा गाँधी का आखिरी वसीयतनामा

देश का बँटवारा होते हुए भी भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस द्वारा मुहैया किए गए साधनों के जरिए हिन्दुस्तान को आजादी मिल जाने के कारण मौजूदा स्वरूप वाली काँग्रेस का काम अब खत्म हुआ। ..... उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो गई है। **शहरों और कस्बों से भिन्न उसके सात लाख गाँवों की दृष्टि से हिन्दुस्तान की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है।** लोकशाही के मकसद की तरफ हिन्दुस्तान की प्रगति के दरमियान सैनिक सत्ता पर नागरिक सत्ता को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है। काँग्रेस को हमें राजनीतिक पार्टियों और साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ की गन्दी होड़ से बचाना चाहिए। इन और ऐसे ही दूसरे कारणों से अखिल भारत काँग्रेस कमेटी अपनी मौजूदा संस्था को तोड़ने और लोकसेवकसंघ के रूप में प्रकट होने का निश्चय करे। गाँववाले पाँच वयस्क पुरुषों या स्त्रियों की बनी हुई हर एक पंचायत एक इकाई बनेगी। **-(महात्मा गाँधी, 29-01-1948, पु०- मेरे सपनों का भारत)**

❀❀❀

गई है। ये सबको लूट खाएगी। अब गिरोहपूर्वक नहीं न्यायपूर्वक शासन चलाओ। अपने उस वसीयतनामा में गाँधी जी ने लोकतान्त्रिक पंचायती व्यवस्था अपनाए जाने का भी सुझाव दिया था। मूर्खों, दुष्टों, अनपढ़ों, अपराधियों की सभा को लोकतन्त्र नहीं कहा जा सकता। जो भी योग्य है उसे पूरी जनता में से चुना जाए। लेकिन आप पूरी जनता में से कहाँ चुनते हो? किसी गिरोह में से चुनते हो, दल में से चुनते हो और पुलिस रिकार्ड कहता है कि काँग्रेस आदि सभी दलों में अधिकांश गुण्डे, बदमाश, अपराधी प्रतिष्ठित हैं। आजादी के बाद गाँधी जैसे पवित्र जनों के विचारों को ताक पर रख दिया गया। जनता को पता भी नहीं चला कि जनता के साथ कुत्सित पालिटिक्स खेली गई। वर्तमान लोकतंत्र में लोकमत के आधार पर कुछ हो ही नहीं रहा है। लोकतन्त्र की लोकतान्त्रिकता भी सिद्ध नहीं हो पा रही है। 'लोक' शब्द का अभिप्राय सार्वजनिकता से है। आप सार्वजनिक जनता में से अपना प्रतिनिधि नहीं चुन रहे हो, ध्यान रखना! आप दल में से चुनते हो। थोड़े से गुर्गे हैं। वही गुर्गा कभी बी.जे.पी. में, कभी कांग्रेस में और कभी किसी अन्य गिरोह में चला जाता है। किसी भी नाम से दल का गठन कर लो, हर हाल में वे चन्द गुर्गे ही सभी दलों में विद्यमान रहते हैं। वह गुर्गा कभी एक गैंग से गुस्सा होकर दूसरी गैंग में चला जाता है तो कभी दूसरी गैंग से गुस्सा होकर पहली गैंग में आ जाता है अथवा किसी तीसरी गैंग में चला जाता है या अपनी नई गैंग बना लेता है। यही उठापटक सब कर रहे हैं। गुर्गे निश्चित होते हैं। यही गुर्गे पूरी जनता को मुर्गा समझते हैं और उनसे अपना उल्लू सीधा करते हैं। इन राजनैतिक गिरोहों में जो कोई अच्छे लोग फँस जाते हैं, वे भी इन गुर्गों की गन्दी राजनीति के शिकार होकर इन्हीं के जैसा कारबार करने को विवश हो जाते हैं। इन राजनैतिक दलों की सदस्यता प्राप्त करने का कोई नैतिक योग्यतामूलक मापदण्ड निर्धारित नहीं है। चोर, उचक्के, मुजरिम, अपराधी, मूर्ख, गँवार, अनपढ़, अनगढ़ सभी प्रकार के प्राणी इन दलों में प्रतिष्ठित हैं। तोड़-फोड़, मार-पीट, हिंसा-हत्या, आतंक-आक्रमण, धरना-हड़ताल करना या कराना ही इनका कार्य होता है। यही इनकी जनसेवा है। यही इनका लोकतंत्र है, जबकि सच्चा लोकतंत्र तो यह है कि किसी भी नीति-नियम, विधि-विधान आदि के निर्धारण हेतु जनता की सहमति ली जाए। लोकसहमति के आधार पर ही कार्य किए जाएँ, तभी लोकतंत्र सिद्ध होगा। प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक जाति, प्रत्येक लिंग, प्रत्येक रंग, प्रत्येक क्षेत्र के 50% से अधिक लोगों की सहमति को इस निर्धारण का आधार माना जाए।

अभी आप लोकजीवन में से अपना प्रतिनिधि नहीं चुन रहे हो। आप तो किसी दल में से चुनने को मजबूर हो। इसप्रकार की व्यवस्था पैदा कर दी गई। दल का प्राविजन लाया गया। दल का प्राविजन क्यों किया गया? जब गाँधी जी ने दल को भंग करने का सुझाव दिया था। गाँधी जी की अवहेलना ही गाँधी जी का अपमान है। गाँधी जी का अपमान सत्य और न्याय का अपमान है, क्योंकि महात्मा गाँधी के अधिकांश विचार सत्य और न्याय के बहुत करीब हैं। महात्मा गाँधी ने अपनी पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' में लिखा है- ***'अन्यायकारी कानून को भी मानना, पालना हम पर फर्ज है, यह वहम जब तक हमारे दिमाग से दूर न होगा, तब तक हमारी गुलामी जाने वाली नहीं और केवल सत्याग्रही ऐसे वहम को दूर कर सकता है।'*** *लोग कहते हैं कि जिन्ना और नेहरू दोनों खुद प्रधानमन्त्री बनना चाहते थे। अतः दोनों को अपने पीछे बहुत से गुर्गों का गिरोह चाहिए था, तो कैसे भंग करते काँग्रेसरूपी गिरोह को? अतः मातृभूमि को ही भंग कर डाला। दो देश बनेंगे तभी दो प्रधानमन्त्री बन पाएँगे। किन्तु न्याय की बात तो यह है कि सार्वजनिक जनता में से जो प्रधानमन्त्री बनने के लिए सबसे अधिक योग्य है, उसको प्रधानमन्त्री बनाया जाए। सार्वजनिक*

जनता में से प्रतियोगी परीक्षणों द्वारा जो सबसे अधिक योग्य सिद्ध हो, उसे आप राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर बैठा दो, चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम या अन्य कोई भी हो, तो यही लोकतांत्रिक प्रक्रिया सिद्ध होगी। योग्यता सिद्ध होने के पश्चात् लोकप्रियता की जाँच भी की जा सकती है– जनमत संग्रह द्वारा। लोकतांत्रिक का अभिप्राय सार्वजनिक से है। न्यायशील राष्ट्र की लोकतांत्रिक संरचना होनी ही चाहिए। किन्तु आजादी के बाद पुराने राजा–राजा लोगों ने अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु संगठन बना लिया। जो फालतू थे, जो कोई काम करना नहीं चाहते थे, जो खेती करना नहीं चाहते थे, जो व्यापार में दुकान पर बैठना नहीं चाहते थे, प्रशासनिक सेवा में जिनकी रूचि नहीं थी और योग्यता भी नहीं थी। अतः जो अपराधी या फर्जी टाइप के आदमी थे, वे सभी राजनीति में चले गए और राजनीतिक दल बना डाले। उन दलों में प्रवेश करने की कोई पात्रता निर्धारित नहीं थी। चोर, उचक्का, गुण्डा, बदमाश, अपराधी, लुटेरा, अनपढ़, मूर्ख, दुष्ट, उद्दण्ड, हिंसक, मांसाहारी, नशेबाज, बलात्कारी, अपहर्ता, अपराधी आदि वीभत्स चरित्र के लोग भी उन दलों के सदस्य बन गए। उन्हीं दलों के द्वारा शासन चलने लगा। विदेशी डण्डे तो ठण्डे हो गए लेकिन देशी डण्डे पड़ने लगे। न तो आजादी के पहले आपको न्यायशील जनाधिकार प्राप्त थे और न ही अब आजादी के बाद प्राप्त हो सके। सार्वजनिक धन रूपी राष्ट्रकोष को पहले विदेशी गुण्डे लूटते थे, अब देशी गुण्डे लूट रहे हैं। सार्वजनिक धन सार्वजनिक कार्यों पर व्यय नहीं हो रहा है। केवल पाँच या दश प्रतिशत लोग सम्पूर्ण सार्वजनिक धन को भोग रहे हैं। शेष जनता अपना हिस्सा गँवाकर लुटी–पिटी बैठी है। गुलामी देने वाले लोग बदल गए, गुलामी की व्यवस्था नहीं बदली। व्यवस्था के नीति–नियम, विधि–विधान, कार्य–कलाप वही रहे। व्यवस्थापक बदल गए व्यवस्था नहीं बदली। न्यायशील व्यवस्था अभी प्रतीक्षित है।

न्यायशील जनाधिकार ही तो स्वतन्त्रता है। अगर आपके साथ न्याय ही नहीं हुआ तो किस बात की स्वतन्त्रता? व्यक्ति को शिक्षा नहीं, परिवार को रोजगार नहीं, क्षेत्र को सुविधाएँ नहीं, समष्टिजीवन को संरक्षण नहीं, तो स्वतन्त्रता किस बात की? राष्ट्रकोष रूपी सार्वजनिक धन का सार्वजनिक जीवन में न्यायशील समुचित वितरण नहीं, तो स्वतन्त्रता किस बात की? सार्वजनिक धन की लूट ही तो जनता को गुलाम बनाती है। आपके कपड़े उतार लिए जाएँ, आपका धन छीन लिया जाए, आपका हिस्सा छीन लिया जाए, आपकी अभिरुचियों को दबाया जाए और कहा जाए कि आप स्वतंत्र हैं, तो ये किसप्रकार की स्वतंत्रता है? मानव की स्वतन्त्रता में ही मानवता सुरक्षित रह सकती है। मनुष्य को अपनी रुचियों के अनुसार जीने के लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता होनी ही चाहिए। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का अभिप्राय यह है कि किसी नागरिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता उसी सीमा तक है, जहाँ तक कि दूसरों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आँच न आती हो। क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की स्वतन्त्रता में बाधा नहीं पहुँचाए, यही व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की परिभाषा है। आप जो खाना चाहें वह खा नहीं सकते, आप जो पीना चाहें वह पी नहीं सकते, जो पहनना चाहें वह पहन नहीं सकते, जो करना चाहें, वह कर नहीं सकते, तो फिर किस बात की स्वतन्त्रता? ये राजनीतिक लोग आपको बंदूक के बल पर बुर्का पहनाने के लिए खड़े हो जाते हैं कि अगर किसी स्त्री ने बुर्का नहीं पहना तो गोली से उड़ा दिया जाएगा। अरे, उन स्त्रियों की इच्छा भी तो पूछ लो कि वे बुर्का पहनना भी चाहती हैं या नहीं? वे पहनना चाहती हैं तो पहनें, नहीं पहनना चाहतीं हों तो न पहनें। तुम जबरदस्ती क्यों पहनाना चाहते हो, किसी की इच्छा के विपरीत? लोगों की इच्छाओं की स्वतन्त्रता ही वास्तविक स्वतन्त्रता है। वयस्क को

स्वेच्छापूर्वक जीवन जीने की स्वतन्त्रता ही न्याय है। विशिष्ट सार्वजनिक कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त अपने निजी रहन-सहन, आहार-विहार, वेश-भूषा, बोली-भाषा आदि के लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता होनी ही चाहिए। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए स्वतन्त्र हो, यही न्याय है। ऐसी कोई भी इच्छा जो दूसरों की इच्छा को बाधित न करती हो, उस इच्छा की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही न्यायशील स्वतन्त्रता है। आप अगर दूध भी किसी को जबरदस्ती पिलाओगे तो दूध भी उसे नुकसान कर जाएगा। लेकिन पूरे देश में यही चलता रहा। पूरी दुनिया में यही जंगलराज चलता रहा। जो सबल था, उसने अबल का शोषण किया, उसकी स्वेच्छा को दबाया, उसकी स्वतन्त्रता का नाश किया, क्योंकि न्यायशील व्यवस्था न थी। 'न्यायधर्मसभा' ने इस कुराज को हटाने के लिए कार्यक्रम संचालित किया और कहा कि जंगलराजपूर्वक नहीं मंगलराजपूर्वक काम करो। मंगलराज यानि कि राज्य न्यायशील हो, नेतृत्व न्यायशील हो। नियम न्यायशील हो, विधान न्यायशील हो, व्यवस्था न्यायशील हो। लोगों को समुचित अधिकार और कर्तव्य प्राप्त हों, यही न्यायशीलता है। न्यायशीलता छोटी सी बात है- समुचित अधिकारों और कर्तव्यों का निर्धारण। समुचित माने समान और उचित। जैसे- सबको शिक्षा पाने का समान अधिकार है उचितरूप से। उचित अर्थात् जो पहली कक्षा में बैठने के योग्य हो उसे पहली कक्षा में बैठने दिया जाए, जो दूसरी कक्षा में बैठने लायक हो उसे दूसरी कक्षा में बैठने दिया जाए। जो जिस योग्य है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो, यही उचित है। समुचितता ही न्यायशीलता है। समता और औचित्यता दो बातों का मिश्रित रुप ही 'समुचित' शब्द है। न्याय की इतनी सी बात समझने में देश को बड़ा समय लग गया। स्वार्थान्धता के कारण शायद समझना ही नहीं चाहते थे। कुछ लोगों ने कहा कि न्याय और अन्याय का निर्धारण बड़ा कठिन है तो आर्षमनीषा ने इस पर चिन्तन किया और कहा- 'ये बिलकुल सरल है।' पूछा गया- कैसे सरल है? तो उन्होंने कहा कि इसमें कोई कठिनाई नहीं है। न्यायशील जनाधिकारों का निर्धारण अथवा न्यायशील मानवाधिकारों का निर्धारण करना है तो उन्होंने सीधे-सीधे कहा कि आपके जीवन की सार्थकता, आपके पौरुष की पुरुषार्थता किस बात में निहित है? आपका जीवन सार्थक कैसे सिद्ध होगा? उन्होंने कहा- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। चिरपुरातन काल से मानवजीवन की सार्थकता के लिए यही चार पुरुषार्थ निर्धारित हैं। गुण ही धर्म है, धन ही अर्थ है, सुख ही काम है, स्वस्ति ही मोक्ष है। इसका मतलब मनुष्यों के लिए पहले से ही ये चार मानवाधिकार निर्धारित हैं। किन्तु बीच में मानवाधिकार आयोग बनाकर बैठ जाते हैं फिर से। ये राजनीतिक लोग पता नहीं कौन सा मानवाधिकार देना चाहते हैं? जबकि मानवाधिकार पहले से ही निर्धारित हैं- गुणप्राप्ति का अधिकार, धनप्राप्ति का अधिकार, सुखप्राप्ति का अधिकार, स्वस्तिप्राप्ति का अधिकार। ये मानवाधिकार तो आपके लिए पहले से ही निर्धारित कर रखे हैं। इसी के लिए राष्ट्रीय व्यवस्था का गठन किया गया और कहा गया कि राष्ट्र की जनता को इन्हीं चारों बातों के अनुकूल जनाधिकार दे दिया जाए। इस पर प्रश्न किया गया कि गुण कैसे प्राप्त होगा? तो बताया गया कि शिक्षा-प्रशिक्षण के द्वारा। धन कैसे प्राप्त होगा? तो बोले संसाधन-रोजगार के द्वारा। संसाधन से ही धन प्राप्त होता है। संसाधन न हो, रोजगार का साधन न हो, तो आप धन कमा नहीं सकते। कृषिभूमि न हो अन्न नहीं उगा सकते। इसप्रकार धन के बाद सुखप्राप्ति का भी अधिकार है। प्रश्न उठा कि सुख कहाँ से मिलेगा? तो बोले सुविधाओं से। इसीप्रकार स्वस्ति (स्वास्थ्य, स्वामित्व, स्वतन्त्रता) कैसे प्राप्त होगी? तो बोले संरक्षण से। कोई आपको पीटने लगा तो उससे कौन

बचायेगा तो बोले कि सुरक्षा चाहिए। कीटाणु हमला कर दे तो चिकित्सा चाहिए। चोर हमला कर दे, तो पुलिस चाहिए। तूफान-बाढ़ आदि भारी आपदाओं का हमला हो, तो सेना चाहिए। कोई भी दुष्ट आदमी हमला कर दे तो उससे बचने के लिए संरक्षण चाहिए, सिपाही चाहिए, सुरक्षा चाहिए। जो जनता को सेती है, खतरे से बचाती है वही सेना है। जनता को सेने के कारण ही वह सेना है। जैसे पक्षी अण्डा सेता है।

राष्ट्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत जनता के लिए चार ही तो जनाधिकार बनते हैं- शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण। मानवता के प्रारम्भ से ही सभी बातें प्रेसक्राइब्ड हैं, प्रशस्त हैं, निर्धारित हैं। न्याय का निर्धारण कोई कठिन नहीं, बहुत सरल है। प्राचीन ऋषियों (वैज्ञानिकों) ने संक्षेप में कहा कि चारों जनाधिकार अगर आप दे दें, तो राष्ट्रीय जनजीवन की सार्थकता सिद्ध हो जाएगी। पुरुष की सार्थकता उसके पुरुषार्थ में ही निहित है। आत्मचेतना को ही ऋषियों ने पुरुष कहा, जो सभी शरीरों के भीतर स्थित है। यह आत्मचेतना ही समस्त कर्मों की प्रेरक है। कर्म करने की पात्रता ही अधिकार है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों पुरुषार्थ ही मौलिक मानवाधिकार हैं। गुण, धन, सुख, स्वस्ति प्राप्त करने का अधिकार ही मूलभूत मानवाधिकार है। इन मूलभूत मानवाधिकारों की पूर्ति के लिए ही सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रीय व्यवस्था के अन्तर्गत चार प्रकार के जनाधिकार निर्धारित होते हैं- पहला शिक्षा, दूसरा रोजगार, तीसरा सुखसुविधा और चौथा संरक्षण। अँग्रेजी में इन्हें ही चार प्रकार के पब्लिक राइट्स कहा गया है- एजूकेशन, एम्पलायमेन्ट, एकमोडेशन, प्रोटेक्शन। इन जनाधिकारों का निर्धारण बहुत सरल है। अब प्रश्न यह है कि ये चारों जनाधिकारों की पूर्ति कैसे होगी? आप जनाधिकार देना नहीं चाहते और कहते हैं कि ये चारों चीजें पूरी कैसे होंगी! आइये इस पर विचार करें यह निश्चित है कि ये चारों जनाधिकार सार्वजनिक मुद्दे हैं, अतः इनकी पूर्ति के लिए राष्ट्रीय कोष रूपी सार्वजनिक धन का न्यायशील समुचित नियोजन किया जाए। सार्वजनिक करप्रणाली अपनाई जाए। इससे एक सार्वजनिक कोष बन जाता है। उसके द्वारा जनता को शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण प्रदान करने का कार्य कीजिए। अब प्रश्न उठा कि ये सब कार्य कौन करे? तो उन्होंने कहा कि इसके लिए लोकनेतृत्व और लोकप्रशासन का गठन कर दो। ब्राह्मण स्तर के लोगों को नेतृत्वकर्म करने दो, क्षत्रिय स्तर के लोगों को प्रशासनकर्म करने दो और इसमें कोई खतरे की बात नहीं थी। कर्म विभाजन का यह स्वरूप वरीयताक्रम पर आधारित किया गया। वरीयताक्रम को ही 'वर्णव्यवस्था' कहा गया। शारीरिक क्षमता ही कृषिकर्म की पात्रता है। मानसिक क्षमता ही वाणिज्यकर्म की पात्रता है क्योंकि मन से ही वाणी विकसित होती है। वाणी से ही वाणिज्य होता है। इसीप्रकार भावनात्मक क्षमता ही प्रशासनिककर्म की पात्रता है। प्रेमभाव ही सेवाभाव है। लोकसेवा आयोग ऐसे हृदयशील, छातीवान, सेवाभावी जनों को प्रशासनिक पदों पर नियुक्त करे।। इसीप्रकार आत्मिक क्षमता ही नेतृत्वकर्म की पात्रता है। यह वरीयताक्रम ही सच्ची वर्णव्यवस्था है। शैक्षणिक योग्यता के आधार पर भी इस वरीयताक्रम का निर्धारण किया जा सकता है- जैसे 25% तक, 50% तक, 75% तक और उससे ऊपर 100% तक परीक्षांक प्राप्त करने वालों की चार श्रेणियाँ बनती हैं जो कृषि, वाणिज्य, प्रशासन, नेतृत्व आदि चारों कर्मों के न्यायशील विभाजन का आधार बन सकती हैं। इसीप्रकार मनुष्यों की अभिरूचि के आधार पर भी वरीयताक्रम का निर्धारण किया जा सकता है। अन्न, धन, यश, श्रेय की लिप्सा को मानव की वरीयता के स्तर निर्धारण हेतु अभिरूचि

के रूप में देखा जा सकता है। अन्नलिप्सा ही शूद्रत्व है जो कृषिकर्म के लिए पात्रता है। धनलिप्सा ही वैश्यत्त्व है जो वाणिज्य कर्म के लिए पात्रता है। धनलिप्सा वाले को प्रशासन और नेतृत्व के पदों पर न ले जाओ तो कोई आर्थिक भ्रष्टाचार नहीं होगा। भ्रष्टाचार की बात ही खत्म हो जाएगी। जो अन्न और धन से अधिक यश का भूखा है वही क्षत्रिय है। यश, कीर्ति, प्रशंसा की भूख ही क्षत्रियत्व है। किन्तु जो अन्न, धन और यश से अधिक श्रेय का भूखा है वही ब्राह्मण है। उसे नेतृत्व करने दो। श्रेय का अभिप्राय है– उद्धार, उत्थान, कल्याण। इसप्रकार बल, वाणी, व्रत, विवेक ही क्रमशः चार वर्ण हैं। क्रिया, विचार, भव, चेतना ही चार वर्ण हैं। तन, मन, प्राण, आत्मा ही चार वर्ण हैं। तन से बल, मन से वाणी, प्राण से व्रत (प्रण–संकल्प), आत्मा से विवेक का सम्बन्ध है। जाँचो और कर्म सौंपो।

न्याय का थोड़ा सा परिचय मैं आपको दे रहा हूँ। धर्म में न्याय के सारे स्रोत मौजूद हैं। सनातन धर्म अपने आप में एक न्यायशील धर्म था। आपने उसकी बखिया उधेड़ दी। अब आप हिन्दू हो, मुस्लिम हो, सिख हो, ईसाई हो, जैन हो, बौद्ध हो, पारसी हो, बहाई हो। अब आप हिन्दू, मुस्लिम आदि अनेक प्रकार के धर्मों को मानने वाले हो। सनातन धर्म को आपने नष्ट कर दिया। सत्य, प्रेम, न्याय, पुण्य ही चार आयामी सनातन धर्म था। लेकिन अब तो आप गीता और रामायण के मानने वाले हो। कृष्ण के अनुयायी बन रहे हो। राम के अनुयायी बन रहे हो। बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, ओशो, मुहम्मद, यीशु और पता नहीं किस–किस के अनुयायी बन रहे हो। किन्तु अब आप सत्य के अनुयायी नहीं रह गये हो। सत्य के अनुकूल भाव ही प्रेम है। सत्य के अनुकूल निर्णय ही न्याय है। सत्य के अनुकूल कर्म ही पुण्य है। वास्तव में सत्य ही धर्म का एकमात्र आधार है। किन्तु ***'सत्यमेव जयते'*** *को आप भूल चुके हो। अब आप सत्य की जय नहीं बोलते। अब कृष्ण की जय, राम की जय, कबीर की जय, नानक की जय, मुहम्मद की जय, बुद्ध की जय, महावीर की जय, यीशु की जय, ओशो की जय, अम्बेडकर की जय, गाँधी की जय, नेहरू की जय, गुरुओं की जय बोलते हो; बहुत धोखा किया आपके गुरुओं ने आपके साथ। आपके नेताओं ने आपके साथ बहुत छल किया। अब आप सत्य के अनुयायी नहीं रह गए हो। मरने के बाद कहते हो–* ***'राम नाम सत्य है, सत्य बोलो गत्य है।'*** *यह बात केवल शवयात्रा के समय कहते हो। बाद में आकर कहते हो राम–नाम जपो। बाद में बोलना तो राम नाम ही है। किसी ने ठीक ही कहा है–* ***'सत्ता की पूजा चले सत्य न पूजा जाय। यदि पूजा हो सत्य की युग सत्युग कहलाय।।'*** *किन्तु धूर्तों के लिए 'सत्य' कुछ नहीं होता। सत्य कहीं पीछे छूट जाता है, राम आगे आ जाता है। राम नाम की आड़ में सत्य को पीछे धकेल देते हो। सत्य गया अब तुम्हारे लिए अच्छा हो गया। अब राम की भक्ति होगी, कृष्ण की भक्ति होगी, मोहम्मद की भक्ति होगी, ज़ीसस की भक्ति होगी, कबीर की भक्ति होगी, नानक की भक्ति होगी, बुद्ध की भक्ति होगी, महावीर की भक्ति होगी। ध्यान रखो कि सत्य के कारण ही इन राम आदि महापुरुषों की आदरणीयता सिद्ध होती है। यदि सत्य को इनसे अलग कर दिया जाए, तो ये सभी मूल्यहीन हो जाएँगे, अमान्य हो जाएँगे। लेकिन तुम बहुत ही चालाक हो। सत्य की भक्ति करने से तुम्हारा कलेजा काँपता है, थर्राता है। जबकि सत्य थोड़ा सा ही था कि इस संसार में दूसरा कोई नहीं है। सब कुछ एक ही तत्त्व से निर्मित है। संसार के सभी पदार्थ एक ही ब्रह्मऊर्जा के घनीभूत रूप हैं। इतना ही सत्य का सम्पूर्ण ज्ञान है। आधुनिक विज्ञान भी यही कहता है। आइंस्टीन की 'थ्योरी ऑफ रिलेटीविटी' तुम्हें परस्पर*

*रिलेटिव (सम्बन्धी) बनाती है, जोड़ती है। लेकिन राजनीति तुम्हें तोड़ती है, यह फूट डालती है और राज करती है। सत्य कहता है– **'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।'** एक ब्रह्म ही है, संसार में दूसरा कोई है ही नहीं। अतः सबके साथ प्रेमपूर्ण और न्यायपूर्ण व्यवहार करो। सबके साथ प्रेम रखो और सबके साथ न्याय करो। दूसरों को सताओ नहीं। दूसरों के अधिकार मत छीनो। दूसरों से उनके जीवन की सार्थकता मत छीनो। मानवीय पुरुषार्थों का नाश मत करो। मानवाधिकारों का हनन मत करो। जनाधिकारों का हरण मत करो। किन्तु दूसरों के भौतिक संसाधनों का अपहरण करने के पश्चात् तुम बोले– 'हम पर विदेशियों की भौतिकवादी संस्कृति का हमला हुआ है।' जैसे तुम्हारी संस्कृति और सभ्यता कोई बहुत टॉप लेवल पर बैठी हुई है। तुम भुखमरे लोग आध्यात्मिक हो गए। धर्म माने होता है धारण करना। तुम त्यागी पुरुष बनने में लग गए। धारण करना समाप्त हो गया। धारण करना ही धर्म था। तुमने धर्म का नाश कर डाला। सत्य के गुणों की धारणा ही सद्गुण है। सद्गुण ही धर्म है। लेकिन तुम गुणों के त्याग का उपदेश करने लगे। तुमने कहा– 'संसार माया है, जगत मिथ्या है। जन्म और मृत्यु के बंधन से छुटकारा पाओ किसीप्रकार।' जबकि वेदों ने कहा– 'जगत ब्रह्म है। माया तो नाम, रूप, गुण का आवरणमात्र है। इन नाम–रूप–गुण के सात्त्विक स्वरूप को धारण करना ही धर्म है। शास्त्रवचन है–**'धारयति इति धर्मः'।** यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति है, इसे धारण करो। वेदवचन है–**'सर्वं ऋलु इदं ब्रह्म।'** अतः सच्ची ध र्मव्यवस्था तो यह थी कि जीवन को धारण करो। तुम जिंदगी से पलायन का पाठ पढ़ गए। धर्म ने कहा–**'पहले व्यक्तित्व को धारण करो।'** विद्यारम्भ संस्कार कराके प्रथम 25 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्राप्त करो, शुभ व्यक्तित्व का निर्माण करो। फिर धर्म ने कहा–**'परिवार को धारण करो।'** विवाहसंस्कार कराके एक जीवनसाथी को धारण करा दिया गया, गृहस्थ बना दिया गया। फिर धर्म ने कहा–**'समाज को धारण करो।'** वानप्रस्थी बनाकर समाजसेवा में लगा दिया। उपनयन संस्कार कराके लोकनेतृत्व में लगा दिया। फिर धर्म ने कहा– **'समष्टि को धारण करो।'** संन्यासी बनाकर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण हेतु परिव्रजन में लगा दिया। धर्म तो व्यक्ति, परिवार, समाज, समष्टि को धारण करने की बात करता है। धर्म तो गुण, धन, सुख, स्वतंत्रता को धारण करने की बात करता है। धर्म तो शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण को धारण करने की बात करता है। धर्म चार प्रकार के कर्तव्यों और चार प्रकार के अधिकारों को धारण करने की बात करता है। धर्म से ही अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्म की धारणा के लिए ही विद्यारम्भ, विवाह, उपनयन, अन्त्येष्टि आदि कर्मसंस्कारों का निर्धारण हुआ है। विद्या से व्यक्तित्व निर्मित होता है, विवाह से परिवार निर्मित होता है, पौरोहित्य से समाज निर्मित होता है, परिव्रजन से समष्टि निर्मित होती है।*

*समाज अर्थात् पुर या राष्ट्र। पुर जैसे कानपुर, नागपुर आदि। इसप्रकार पुर का हित चाहने वालों को धर्म ने पुरोहित बना दिया। वानप्रस्थी ही पुरोहित है किन्तु अब तो कोई भी पुरोहित है, गृहस्थ भी, संन्यासी भी। ऊपर से नीचे तक सब पुरोहित हैं। वास्तविकता यह है कि ये सब पुरद्रोही हैं पुरोहित नहीं। ये पुर का हित नहीं चाहते। अब तो इन्हें पता भी नहीं कि पुरोहित माने क्या होता है? डिक्शनरी भी नहीं देखना चाहते, क्योंकि कभी स्कूल नहीं जाना चाहते थे। ये तो किसी पुल के नीचे घुसे रहते थे। न भाषा पढ़ी, न गणित पढ़ी, न संज्ञान पढ़ा, न ही दर्शन पढ़ा। कहा गया है कि **'मात-पिता बालकन्ह पढ़ावहिं। उदर भरै जेहि भाँति सिखावहिं॥'** अब माता–पिता क्या सिखा–पढ़ा रहे हैं आपको? यह आपकी*

कलियुगी लीला का वर्णन है। आपके ग्रन्थों में ये सब चौपाईयाँ उपलब्ध हैं। अब देखिए क्या शिक्षा दी जाती है कि जिसप्रकार से कुत्ता अपना पेट भर लेता है, पेट भरने के लिए ही प्रयत्न करता है, उसीप्रकार से आप अपना पेट भर लीजिए। कालरात्रि की प्रतीक्षा में किसी भी प्रकार से जिन्दगी के दिन काटिए। देखिए कितनी गंभीर दशा में आपको पहुँचा दिया गया कि जानवर की भाँति अपना पेट भर लीजिए बस।

*सत्य की भक्ति करने की आवश्यकता थी। लेकिन तुम लोगों को कोई गाँधी का भक्त बना देना चाहता है, कोई अम्बेडकर का भक्त बना देना चाहता है, कोई मायावती का भक्त बना देना चाहता है, कोई काशीराम का भक्त बना देना चाहता है, तो कोई लोहिया का भक्त बना देना चाहता है, कोई मार्क्स-लेनिन-माओ का भक्त बना देना चाहता है, कोई राम का भक्त बना देना चाहता है, कोई कबीर का भक्त बना देना चाहता है, कोई नानक का भक्त बना देना चाहता है, कोई गुरुगोविन्द का भक्त बना देना चाहता है, कोई बुद्ध-महावीर-मुहम्मद-यीशु का भक्त बना देना चाहता है। जबकि आपके ग्रन्थों में साफ कहा गया है- **'धर्म न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना ॥'** कल्याण तो सत्य में ही है। लेकिन तुमको सत्य से कोई मतलब न था। तुम्हें कुछ भी पढ़ाया जाए, कुछ भी सिखाया जाए, तुम करोगे वही जिससे पशुओं की भाँति तुम्हारी तात्कालिक वृत्ति पूरी हो सके। चाहे बाद में दुःख और दण्ड ही भुगतना पड़े। तुम पशुओं की भाँति यह आचरण इसलिए करते हो क्योंकि तुम पिछड़े रह गए हो अथवा तुम्हें पिछड़ा दिया गया है। धक्का देकर ज़मीन में गाड़ दिया गया है। उच्च मनोवृत्तियाँ ज्ञान-विज्ञान के बिना नहीं जागतीं, इसलिए ब्रह्मचर्य आश्रम के विद्यार्थीजीवन में विद्यारम्भसंस्कार कराके लोगों को पहले विद् धातु से परिचित कराओ। पहले उसे ब्रह्म जैसी चर्या उपलब्ध करा दो। ब्रह्म जैसा चरित्र उपलब्ध करा दो तो दम्भचर्य समाप्त हो जाएगा। ब्रह्मचर्य आ जाए तो दम्भचर्य समाप्त हो जाएगा। स्वहितपरायणता ही दम्भचर्य है। सर्वहितपरायणता ही ब्रह्मचर्य है। स्वात्मक चरित्र ही दम्भचर्य है, सर्वात्मक चरित्र ही ब्रह्मचर्य है। सर्वत्व ही ब्रह्मत्व है। वेदवचन है- **'सर्वं ब्रह्म।'** अर्थात् 'सर्व ही ब्रह्म है।' जो ब्रह्म को जान लेता है, वह सर्वव्यापक प्रवृत्ति वाला हो जाता है। संकुचन ही दम्भ है, विस्तार ही ब्रह्म है। अतः ब्रह्म आए तो दम्भ विदा हो। अंधकार कुछ नहीं है बल्कि यह तो प्रकाश की अनुपस्थिति मात्र है। अन्याय कुछ नहीं होता, यह तो न्याय की अनुपस्थिति मात्र है। न्याय अनुपस्थित है इसलिए अन्याय है। बहुत सारे संगठन खड़े हो गये। उन्होंने कहा- 'अन्याय के खिलाफ संघर्ष करो।' हर राजनेता यही कहता है। वह ऐसा कदापि नहीं कहता कि न्याय के लिए कार्य करो, न्याय को स्थापित करो। इसके विपरीत वह कहता है- 'अन्याय से लड़ो, अंधकार से लड़ो, अज्ञान से संघर्ष करो, भय-भूख-भ्रष्टाचार मिटाओ, गरीबी हटाओ, बेरोजगारी भगाओ, अशिक्षा को दूर करो।' देखो! उपदेश तो देखो! इन गुरुओं और नेताओं के। कितनी चालाक लोमड़ी हैं ये। ये अज्ञान से लड़ाते रहे। ज्ञान की चर्चा न करते थे क्योंकि ज्ञान इनके निहित स्वार्थों के लिए हानिकारक था। वैसे भी द्वन्द्वग्रस्त होने के कारण इन नेताओं और गुरुओं के भीतर हर बात के विरोध की प्रवृत्ति थी। अतः उन्होंने अज्ञान के विरुद्ध आवाज उठाई। ज्ञान के पक्ष में चुप रहे क्योंकि भीतर सिर्फ द्वन्द्ववृत्ति है। यह द्वन्द्ववृत्ति ही दैत्यता है। यही आसुरी प्रवृत्ति है। अब तो अखबार भी इसीप्रकार के लेख छापने लगे हैं- 'भारत ने पाकिस्तान को 38 रनों से रौंद दिया।' अब ये रौंद रहे हैं एक-दूसरे को। 'आस्ट्रेलिया ने इंग्लैण्ड को रौंद दिया।' 'पाकिस्तान ने पिछली हार का बदला चुकाया।' 'बैट्समैन ने एक रन चुरा लिया।' ऐसे वचन बोले और लिखे जा रहे हैं। कुत्सित मानसिकता चारों ओर फैल चुकी है।*

कर्म, वचन, मन कुत्सित हो रहे हैं। ये गुरु और नेता लोग दूसरों की खिलाफत करते रहे, प्रतियोगिता के स्थान पर प्रतिद्वन्द्विता को जन्म देते रहे। जिसका परिणाम यह हुआ कि ***'अंधों अंधा ठेलिया सबरे कूप पड़न्त।'*** *सत्य और अद्वैतज्ञान तुम्हें परस्पर जोड़ता है। द्वन्द्व और द्वैत रूपी अज्ञान तुम्हें परस्पर तोड़ता है। द्वन्द्ववादी राजनीति फूट डालती है और राज करती है। अतः सत्य का ज्ञान तो कुछ और था कि जो हिन्दू है वही मुसलमान है, जो सिख है वही ईसाई है, जो ईसाई है वही हिन्दू है और जो हिन्दू है वही ईसाई है। ये अलग-अलग कहने की ज़रूरत क्या थी? सत्य का ज्ञान परस्पर प्रेम और न्याय सिखाता है। जीसस ने भी यही सत्य कहा था कि-* ***'मैं न्याय के लिए पैदा हुआ हूँ।'*** *आपस में प्रेम रखो यही मेरा उपदेश है। राम ने भी विषमता मिटाई थी-* ***'रामप्रताप विषमता खोई।'*** *राम को भी प्रेम प्रिय था-* ***'रामहिं केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जेहि जाननिहारा॥'*** *मुहम्मद भी आजीवन इंसाफ के लिए संघर्ष करता रहा। लेकिन तुमने कुछ न जाना, क्योंकि तुम्हें उसमें कोई रस ही न था। सत्ज्ञान के प्रति इस नीरसता का कारण यह था कि किसी भी जानवर को उसमें रस नहीं होता। गुलामी आपको जानवर ही बनाती है ताकि आपको साँकल में बाँधकर रख सके। ईराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को अभी फाँसी पर चढ़ाया गया। किस बात के लिए? उसके अपने दुष्कर्मों के लिए। जब तक सद्दाम था, ईराक में स्कूल नहीं चलने दिया। शिक्षक कहते हैं कि हमको वेतन भी नहीं देता था, खुद सोने के टब में स्नान करता था। ईराक के एक शिक्षक का बयान था अखबारों में। उसने कहा कि वह तो पुस्तकें भी नहीं छपने देता था, फोटोकॉपी करके हम लोग पढ़ाते थे बच्चों को, और घर का खर्चा चलाने के लिए सब्जी की ठेलिया लगाने का धंधा करते थे। ये राजनैतिक लोग शिक्षा को रोकते हैं। शिक्षा बढ़ाने की बात करते हैं और शिक्षा दबाने का काम करते हैं। आज भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 60 वर्षों में आपके देश में शिक्षा का बजट आप सुनोगे तो दंग रह जाओगे। पढ़े-लिखों को पता होगा। कभी 2% तो कभी 3% शिक्षा बजट पास होता है। बहुत ज्यादा दबाव पड़ा, इंटरनेशनल दबाव पड़ा, तो भारतीय नेता बहुत रोते-गाते अब शिक्षाबजट 6% करने को तैयार हुए हैं। रोजगार का तो पिछले 60 वर्षों से बजट ही नहीं बना। सुखसुविधा केवल 10% लोग ही भोग रहे हैं। संरक्षण केवल 5% लोगों को प्राप्त है। ये राष्ट्रीय आँकड़ें नंगी आँखों से सबको स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं।*

शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण आदि सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने सम्बन्धी चार ही सार्वजनिक कार्य होते हैं। पाँचवाँ कोई सार्वजनिक कार्य होता ही नहीं। सरकार के ये चार ही कार्य हैं। पहला कार्य है- शिक्षा प्रदान करने का। दूसरा कार्य है- रोजगार प्रदान करने का। तीसरा कार्य है- सुविधाएँ प्रदान करने का। सुविधाओं में सड़क, पानी, बिजली, डाक, संचार आदि सार्वजनिक सेवाएँ है। चौथा कार्य है- संरक्षण प्रदान करने का। जिसमें सुरक्षा, चिकित्सा, बीमा आदि सार्वजनिक सेवाएँ सम्मिलित होती हैं। किसी भी राष्ट्रीय सरकार के यही चार सार्वजनिक कार्य होते हैं। पाँचवा कौन सा कार्य करोगे? जरा सोचकर देखो! बहुत जोर पड़ेगा दिमाग पर! सारे राजनेता मिलकर दिनभर सोचें, फिर भी समझ में नहीं आएगा कि सरकार को पाँचवा कौन सा कार्य करना है। लेकिन मजे की बात यह है कि जनता से करवसूली द्वारा अरबों-खरबों डॉलर का राष्ट्रीय कोष बनाने के बाद भी आप इन चारों सार्वजनिक कार्यों पर उसे व्यय नहीं कर रहे हैं। तो फिर सर्वकार कर क्या रही है? जिसे आप सरकार या गर्वनमेंट कहते है इसे संस्कृत में 'सर्वकार' कहते हैं। इसका मूल नाम 'सर्वकार' ही है। सर्वकार यानि सार्वजनिक कार्य करने वाली संस्था। मैं सरकार से पूछता

*हूँ कि जब चार ही सार्वजनिक कार्य हैं तो पाँचवा कौन सा कार्य करते हो? जनता अशिक्षित है, जनता बेरोजगार है, जनता असुविधाग्रस्त है, जनता असुरक्षित है, तो फिर इतना सारा बजट कहाँ गया, पिछले 60 वर्षों का? अगर मैं सुप्रीमकोर्ट में यह याचिका दायर कर दूँ तो कौन जवाब देगा इसका? जवाब कौन देगा? कौन खा गया इतना पैसा? सात लाख गाँवों में अभी तक न्यायपूर्वक ठीक से पैसा नहीं पहुँचाया गया। वहाँ धूल फाँक रही हैं सड़कें। बिजली के पोल वहाँ नहीं पहुँचे हैं। लाखों स्कूलों की आज भी कमी है। राष्ट्र के अधिकांश नागरिकों को न शिक्षा मिली, न रोजगार मिला, न सुखसुविधा मिली, न संरक्षण मिला। सार्वजनिक कोष से उन लाखों गाँवों के हिस्से की राशि कहाँ गई? कौन खा गया उनका हिस्सा? सार्वजनिक धन रूपी राष्ट्रकोष में तो देश के प्रत्येक नागरिक का समान हिस्सा होता है। भोली-भाली जनता के साथ धोखा-**'अंधा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर खुद को देत। दाँए से बाँटत फिरे बाँए से धर लेत ॥'** आप कर क्या रहे हो? अगर मैं पूछूँ कि सार्वजनिक कोष से आपने सार्वजनिक कार्य न्यायपूर्वक क्यों नहीं किया तो आप क्या जवाब देंगे? कहाँ जायेंगे बचकर? ये तो बड़ी मुसीबत हो जाएगी। जब आप 2% या 3% ही शिक्षा का बजट बनाते हो। रोजगार का बजट बनाते ही नहीं। अब आप देखो सुखसुविधाओं का उपभोग सार्वजनिक कोष से केवल 10% लोग कर रहे हैं। ये कहाँ की चालाकी है? संरक्षण केवल 5% लोगों अर्थात नेता और उनके चमचों को प्राप्त हो रहा है। आपके यहाँ अगर चोरी हो जाए। आप रिपोर्ट लिखवाने जाइये अभी समझ में आ जायेगा कि संरक्षण का क्या हाल है? पहले तो आपका प्रशासक आपको 10 गाली देगा, फिर रिपोर्ट लिखाई घूस माँगेगा वरना रिपोर्ट ही नहीं लिखेगा। पुलिसप्रशासन आपको गाली बकता है। कभी सोचा भी है आपने कि आपकी क्या इज्जत है इस देश में? यही है आचारसंहिता आपके 'नेशनल करेक्टर' की। हर पुलिस वाले को गाली देना सिखाया जाता है।* ***'दिस इज योर नेशनल करेक्टर !'***

हम क्या कर रहे हैं? शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा और संरक्षण आदि चारों जनाधिकार हमसे छिने हुए हैं। साधारण जनता का सब कुछ छिना हुआ है। थोड़े से लगभग 10% लोग 90% लोगों का हिस्सा हड़प कर रहे हैं। चार ही तो ये जनाधिकार हैं, चार ही तो ये सार्वजनिक कार्य हैं। इन्हीं चारों कार्यों के लिए 'कर' एकत्रित करना था। इन्हीं चारों कार्यों के लिए 'कर' द्वारा निर्मित राष्ट्रकोष का सदुपयोग करना था। आपने जब 2% या 3% शिक्षा पर खर्च किया। रोजगार पर खर्च ही नहीं किया। सुखसुविधाओं को मात्र 10% लोगों ने भोगा। संरक्षण मात्र 5% लोगों ने प्राप्त किया। तो क्या यही सार्वजनिकता है? क्या यही लोकतान्त्रिकता है? एक नेता की सुरक्षा पर करोड़ों रुपयों का खर्चा कर रहे हैं। केवल राजनेताओं और उनके हिमायतियों का संरक्षण हो रहा है। राजनेताओं का कार्य था, जनता को संरक्षण प्रदान करना। किन्तु वे जनता के धन से अपने संरक्षण का इंतजाम कर रहे हैं। अब मैं जनता से पूछता हूँ कि आप इस हालात में जी रहे हैं, चल रहे हैं, फिर भी आप चुप हैं क्योंकि आप जंगली जानवर हैं। आपको पर्याप्त शिक्षा नहीं दी गई है। कहा भी गया है कि ***'विद्याविहीनः पशुभिः समानः ।'*** *जनता का पहला सबसे महत्तवपूर्ण अधिकार छिन गया। ब्रह्मचर्य आश्रम की हत्या हो गई। वह 25 वर्षीय विद्यार्थीजीवन खो गया। विद्यारम्भ संस्कार नष्ट कर दिया गया। विद्यारम्भ संस्कार अब कोई नहीं कराता। कराता भी है तो वह सोचता है कि पंडित जी को बुलाकर जो पट्टी पूजा करा दी जाती है बस वही संस्कार होता है! बड़े चालाक है ये हिन्दू! ये अब भी यही कहते हैं कि इनकी संस्कार*

परम्परा जीवित है! अब भी संस्कार का पाखण्ड चल रहा है। पूर्वकाल में संस्कार का वह मतलब न था। विद्यारम्भ संस्कार का मतलब था कि संस्कार के दिन से शुरु करके निरन्तर 25 वर्ष की आयु तक शिक्षा प्रदान करना। शिक्षाप्राप्ति के बाद ही गृहस्थ में जाना निश्चित था। अर्थात् 25 वर्ष की आयु से पूर्व विवाह भी नहीं करना था। अभी तो कुछ सरकारी कानून आड़े आ रहे हैं कि स्त्री की 18 वर्ष तथा पुरुष की 21 वर्ष की आयु से पहले विवाह नहीं करना है, अन्यथा गर्भ में ही विवाह के सौदे होने लगे थे। फिर भी बड़ी निर्लज्जता के साथ तुम कहते हो कि यही तुम्हारी हिन्दू सभ्यता है। यही तुम्हारी हिन्दू संस्कृति है। अन्धे होकर देखना भी नहीं चाहते कि सनातन धर्म क्या था? भूल गए वर्णाश्रमधर्म के सात्त्विक स्वरूप को! सनातन धर्म को छोड़कर तुम तो बस हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति की रक्षा करना चाहते हो। बड़े चालाक हो तुम! चारों तरफ लोग इसी हिन्दू संस्कृति को बचाने के लिए परेशान हैं, कटिबद्ध हैं। 'आर.एस.एस' परेशान है, 'विश्वहिन्दूपरिषद' परेशान है। वे कहते हैं– 'इस हिन्दुत्व को बचाना है, बाहरी संस्कृति का हम पर हमला हुआ है।' ये क्या नाटक है? बड़ी अच्छी संस्कृति है तुम्हारी। तुम अपने धर्म की हत्या करने के बाद भी सुसंस्कृत होने का ढोंग कर रहे हो! धर्म कहता था कि 25 साल के बाद ही विवाह करना। विद्यारम्भ संस्कार कराके आपका विद्यार्थीजीवन शुरू होता था। विद्यार्थीजीवन ही ब्रह्मचर्य आश्रम था। उसीप्रकार विवाह संस्कार कराके गृहस्थजीवन शुरू होता था। लेकिन तुम पहले ही निपटा देना चाहते हो। फिर यज्ञोपवीत संस्कार कराके आपका वानप्रस्थजीवन शुरू होता था। कहाँ गया हिन्दुइज्म? उसमें न्याय तो पहले से ही था। अभी यहाँ शायद कोई मुस्लिम भाई बैठे नहीं हैं, इसलिए मैं केवल हिन्दुत्व की बात किए ले रहा हूँ। 'न्यायधर्मसभा' हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी को प्यार करती है, सबके लिए काम कर रही है। उसकी नजर में सभी समान हैं। किसी पर हिन्दुइज्म थोपने का हमारा कोई अभियान नहीं है और न ही कोई बात है। जो जैसा रहना चाहता है उसे वैसा ही रहना चाहिए। राष्ट्र में वह जिस भी योग्य है उसी पद पर रहे, काम करे। न्यायशील व्यवस्था में न हिन्दुइज्म आड़े आता है और न ही बौद्धिज्म। हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता में, प्राचीन परम्परा में ये सभी न्यायशील बातें थी। न्याय ही मानवसमाज का धर्म है। पुरातन शास्त्र कहते हैं कि पहले सब कुछ न्यायपूर्वक होता था–**'आरम्भो न्याययुक्तो यः स धर्मः इति स्मृतः'** अर्थात् 'जो कार्य न्याययुक्त है, वही धर्म कहलाता है'– ये है धर्म की व्याख्या कि जो कुछ भी न्यायपूर्वक होता है, उसे ही धर्म कहते है। श्लोक की अगली पंक्ति है–**'अन्यायस्तु अधर्मेति एतद् शिष्टानुशासनम्'** अर्थात् 'जो अन्याय है, अनाचार है, वही अधर्म है।' सीधी सी परिभाषा कर दी गई कि जो न्यायशील है वही आचरणीय है, वही सदाचार है। जो न्यायपूर्वक नहीं है, वह दुराचार है। दूसरे की खिलाफत ही दुराचार है, दूसरे से दुराव ही दुराचार है। अगर हम इसे ठीक से देखें तो दूसरे के विरुद्ध कार्य करना ही दुराचार है। दूसरों के प्रति दूसरेपन की दृष्टि ही दुष्टता है। सबके साथ अपनेपन की दृष्टि रखो–**'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।'** तुम सब हो और सब तुम्हारे हैं, यह दृष्टि ही धर्म को जन्म देती है, जो न्यायशील अधिकार देने के लिए तैयार होती है, जो सबके हित में जीना चाहती है। ऐसी दृष्टि पैदा हो जाए, तो पहले आप न्याय के लिए सहमत हो जाते हो और बाद में सबके प्रति प्रेम भी अनुभव करने लगते हो। ऐसा लगता है कि इनके लिए कुछ करो। लेकिन पहले तो न्याय का अधिकार ही दे दो। चाहे कुछ सहयोग न करो, लेकिन न्याय तो दे ही दो। न्याय करो। न्याय का मतलब है कि उन्हें भी शिक्षा दो, उन्हें

भी रोजगार दो, उन्हें भी सुखसुविधाएँ दो, उन्हें भी संरक्षण दो, जिन्हें तुम्हारे अन्याय के कारण अभी तक यह सब कुछ नहीं मिला है। ध्यान रखो धर्म तो केवल इतना ही है– ***'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।'*** *अर्थात् 'जो आचरण अपने लिए दुःखद है, वह आचरण दूसरों के साथ मत करो।' दिल्ली में तुम 70 बार सड़कें चिकनी कराना चाहते हो, किन्तु दूसरे क्षेत्र में कुछ भी नहीं? तुम्हें शर्म नहीं आती? राष्ट्र के भीतर क्षेत्र तो सब एक ही हैं, नागरिक तो सब एक ही हैं, लेकिन तुम बहुत धूर्त हो! लोकतन्त्र में भी राजतन्त्र की राजधानियों के ठाठ–बाट की लीला अभी तक चला रहे हो। जब राष्ट्र में लोकतन्त्र है। आपने कहा कि ये लोकतांत्रिक राष्ट्र है और अब गुलामी भी खत्म हो गई है। आपने मान लिया इस बात को कि लोकतन्त्र आ गया है और गुलामी खत्म हो गई है, तो उनके हिस्से का धन कहाँ गया जो अभी तक वंचित हैं? उन 90% लोगों के हिस्से का क्या हुआ? अगर इन 60 सालों का हिसाब पूछा जाए कि इसे कौन खा गया? तो बहुत लोग बँध जायेंगे। सबको सद्दाम हुसैन बनना पड़ेगा क्योंकि इन्होंने बहुतों पर दुराचार किया। सद्दाम को भी बहुतों पर दुराचार करने के आरोप में फाँसी दे दी गई थी। तो फिर भारत में जो दुराचार कर रहे हैं, इनका क्या होगा? ये दूसरों का हित मार रहे हैं, ये कौन हैं? इनकी पहचान की जाए। इन सद्दामों की खोज की जाए। भारत में कौन हैं, जो दूसरों के हितों का शोषण कर रहे हैं? लगभग 7 लाख गाँवों के हितों का शोषण किसने किया? अंग्रेजों ने? परन्तु इतिहास कहता है कि अंग्रेज तो 1947 में ही चले गए थे। तो 7 लाख गाँवों का बजट कहाँ गया? वहाँ सड़क नहीं बनी, वहाँ बिजली नहीं पहुँची, वहाँ पानी सप्लाई नहीं हुआ, वहाँ स्टेडियम नहीं बना। हे राजनीतिकों! आप अपने मोहल्ले में तो स्टेडियम बना लेना चाहते हो, लेकिन दूसरों के साथ सौतेला व्यवहार करके अन्याय की लीला करते हो। नहीं–नहीं! ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि स्टेडियम बनेगा तो पूरे देश में बनेगा, हर क्षेत्र में बनेगा। क्षेत्र निर्धारित करो कि इतनी से इतनी आबादी का एक क्षेत्र मानेंगे। जैसे 10 हजार की आबादी अथवा 5 से 10 वर्गकिलोमीटर के क्षेत्र को एक ग्रामक्षेत्र मान लो और प्रतिग्रामक्षेत्र के आधार पर सभी सुविधाएँ दो, सड़क बनाओ, बिजली लगाओ, पानी पहुँचाओ। चाहे प्रतिक्षेत्र दो–दो किलोमीटर ही बनाओ। बुरा क्या था? इसमें चालाकी बन्द करो। प्रतिक्षेत्र आधार पर सुखसुविधाएँ देने का काम करो। दिल्ली में, कानपुर में, ग्वालियर में स्टेडियम बना रहे हो। बेशर्मी की भी कोई हद होती है! बनाओ तो सारे देश में बनाओ या फिर कहीं मत बनाओ। ये क्या कि कुछ जगहों पर बनाते हो और कुछ जगहों को वंचित कर देते हो? इस अन्याय का हिसाब कौन देगा? मैं आपसे पूँछू कि अरबों–खरबों डालर का ये बजट कौन खा गया? केवल 2% तुमने शिक्षा पर खर्च किया। रोजगार पर खर्च ही नहीं किया। रोजगार भी देते हो तो* ***'100 दिन की रोजगार गारण्टी योजना'*** *चलाते हो। तुमने 100 दिनों के रोजगार की भीख तो दे दी लेकिन साल में 365 दिन होते हैं। शेष 265 दिन तक वह क्या खायेगा? अँग्रेज पूर्ण स्वराज्य नहीं देना चाहते थे और तुम देश के बच्चों को 25 वर्ष की आयु तक पूर्ण शिक्षा नहीं देना चाहते हो, प्रत्येक परिवार को पूर्ण रोजगार नहीं देना चाहते हो। प्रत्येक क्षेत्र को पूर्ण सुखसुविधा नहीं देना चाहते हो, प्रत्येक संवर्ग को पूर्ण संरक्षण नहीं देना चाहते हो। अँग्रेजों से सरदार भगतसिंह ने कहा– 'नहीं–नहीं! हम तो पूर्ण स्वराज्य की माँग कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि अँग्रेज यहाँ से इंग्लैण्ड चले जाएँ और वहाँ से हम पर शासन करते रहें। यह भी नहीं चलेगा।' बोले– ये अँग्रेज भी चले जाएँ और अपना राज्य भी यहाँ से जाएँ। यहाँ की प्रजा को छोड़ दें। पूर्ण स्वराज्य चाहिए। उन्होंने बड़ी 'रिपब्लिकन पार्टी'*

*बनाई। पूर्ण स्वराज्य की माँग की। लेकिन आज के ये अँग्रेज पूर्ण रोजगार भी नहीं देना चाहते। अब आप देखें– न्याय क्या कहता है? लोगों को पूर्ण शिक्षा दो, पूर्ण रोजगार दो, पूर्ण सुखसुविधाएँ दो, पूर्ण संरक्षण दो। वैसे भी तुम होते कौन हो देने वाले? तुमसे माँगा भी क्यों जाए? देने वाला भी कोई नहीं होना चाहिए। राष्ट्र एक सार्वजनिक व्यवस्था है। राष्ट्र या समाज में चार प्रकार के कर्म होते हैं– कृषि, वाणिज्य, प्रशासन, नेतृत्व। इन्हीं चार कर्मों के लिए योग्यतानुसार आदमी की नियुक्ति होनी चाहिए। यही तो न्याय है। प्राचीन वर्णाश्रम धर्म भी यही था। किन्तु हिन्दुओं की धूर्तता से अब वर्णव्यवस्था तो जातिव्यवस्था में परिवर्तित हो चुकी है और आश्रमव्यवस्था भी विश्रामव्यवस्था में परिवर्तित हो चुकी है। आश्रमव्यवस्था को अब श्रमनिष्ठा में रस नहीं रहा, अब विश्राम में रस उत्पन्न हो गया है। वर्णव्यवस्था को अब वरीयताक्रम में रस नहीं रहा, अब जातीयताक्रम में रस उत्पन्न हो गया है। जाति के आधार पर पदाधिकारी बनाओगे, तो सर्वनाश हो जाएगा। धृतराष्ट्रों के दुर्योधन राजगद्दी पर बैठते रहेंगे तो युद्ध और विनाश होता रहेगा। भगवद्गीता कहती है–**'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।'** अर्थात् 'गुणों के आधार पर कर्मों का विभाजन ही वर्णव्यवस्था का निर्धारण है।' लेकिन वास्तविक न्यायपूर्ण वर्णाश्रमधर्म समाप्त हो चुका है। तुम्हारे लिए कृष्ण के वचनों का कोई मतलब नहीं रहा। हरे रामा, हरे कृष्णा का खूब प्रचार करो। तुम उनका मंदिर भी बनाओगे, तो उसकी आड़ में राजनीति करोगे, धोखाधड़ी करोगे पब्लिक के साथ। वाह रे चालबाजों! बहुत ही चतुराई से काम चल रहा है तुम्हारा।*

हमें लौटने की ज़रूरत है इस उपद्रव से। 'न्यायधर्मसभा' ये उपद्रव समाप्त कर रही है। यह किसी से माँग नहीं कर रही है। तुम ऐसा कर दो या ऐसा दे दो। याचना का तो प्रश्न ही नहीं है। ऐसा किया जा रहा है। इट इज टु बी डन। न्याय स्थापित होगा और इसे कोई भी रोक न सकेगा। अब कोई भी अशिक्षित नहीं रहेगा। अब कोई भी बेरोजगार नहीं रहेगा। अब कोई भी ग्राम असुविधाग्रस्त नहीं रहेगा। अगर होगा तो पूरा राष्ट्र असुविधाग्रस्त होगा। दिल्ली भी असुविधाग्रस्त होगी। कानपुर भी असुविधाग्रस्त होगा। मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई आदि सब असुविधाग्रस्त होंगे। अन्यथा राष्ट्र के सार्वजनिक धन से जितनी सुविधाएँ किसी एक स्थान के नागरिक को मिलेंगी, उतनी ही सुविधाएँ दूसरे स्थान के नागरिक को भी मिलनी चाहिए। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप अन्यायी हैं, बेशर्म हैं, निर्लज्ज हैं। तब आपके लिए जो कुछ भी घटिया शब्द कहा जाए, आप उन सबके हकदार हैं। जब राष्ट्र सार्वजनिक है, कोष सार्वजनिक है, राष्ट्रीय सम्पदा सार्वजनिक है, राष्ट्रीय व्यवस्था सार्वजनिक है, लोकजीवन में सब कुछ लोकतांत्रिक है, तो फिर यह अन्यायकारी उपद्रव कहाँ से आया? इसे समाप्त होना पड़ेगा। इन पाँच सालों (2011 से 2015) के भीतर भारत अपनी मौलिकता को प्राप्त करेगा और 2025 तक पूर्ण न्यायशील सुविकसित एवं समुचित समृद्धि को प्राप्त हो जाएगा। मेरी बातें कुछ असंभव टाइप की हैं। आपको भी भरोसा न आए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है मुझे। बट आई एम डूइंग इट। किसी को भरोसा न आए। लेकिन हजारों सालों से अंधकार है तो क्या अंधकार कभी मिटेगा नहीं? हजारों सालों से अन्याय है, तो क्या अन्याय कभी हटेगा नहीं? हजारों सालों से कोई बात गलत चली आ रही है, इसका मतलब यह नहीं कि वह शाश्वत है। गलत तब तक चलता है, जब तक सही का अभाव है। अन्याय तब तक है, जब तक न्याय का अभाव है। विषंविधान तब तक है, जब तक संविधान का अभाव है। विषमता का विधान तब तक समाज में रहेगा,

जब तक समता के विधान का अभाव रहेगा। रामचरित मानस कहता है–**'राम राज बैठे त्रैलोका। हर्षित भए गए सब शोका॥ बयरु न करु काहू सन कोई। रामप्रताप विषमता खोई॥'** कहा गया है कि राम ने राजगद्दी सँभालते ही विषमता मिटा दी थी। विषंविधान हटाया और संविधान लाए तो क्या नुकसान हुआ? कुछ नहीं! दिनकर ने भी दिल्ली वाले राजनेताओं को कहा था। एक बार जब नेहरू जी ने उन्हें राज्यसभा का सदस्य बना दिया था, तो उन्होनें कहा कि तुम तो गलत काम करते हो और मुझे भी इसमें शामिल कर रहे हो। उन्होनें इस्तीफा दे दिया और बाहर आकर एक गीत लिखा। क्या लिखा कि **'जब तक है वैषम्य समाज सड़ेगा। कैसे होकर के एक ये देश बढ़ेगा?'** लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने राष्ट्रीय एकता की भयंकर मुहिम चला रखी है। किन्तु एकता सिद्ध होने का नाम नहीं ले रही है। पायलट बाबा विश्वशान्ति अभियान चला रहे है। हर देश का साधु शान्ति का समर्थक है। हर राजनीतिक, यहाँ तक कि अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश भी आज यही कह रहे हैं। राजीवगाँधी ने शान्ति के लिये 'पीस कीपिंग फोर्स' भारत से श्रीलंका भेजी थी। ये फौज आतंकवादियों के अड्डों पर जाकर घमासान मचाती है। भारत के कई सन्त–महात्मा जैसे श्री श्रीरविशंकर जी महाराज, स्वामी रामदेव जी महाराज, बापू आशाराम जी महाराज, शान्तिकुंज के प्रणव पण्ड्या जी आदि ने अनेक प्रकार से विश्वजीवन में शान्ति स्थापित करने का बिगुल बजा रखा है। कई सन्तों–महात्माओं को शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार तक दिया जा चुका है। किन्तु शान्ति प्रकट होने का नाम नहीं ले रही है। इस विषय में महाकवि दिनकर जैसे महापुरुष क्या कहते हैं–**'जब तक मानव-मानव का सुखभाग नहीं सम होगा। शमित न होगा कोलाहल संघर्ष नहीं कम होगा॥'** ये कोलाहल, ये अशान्ति जाने वाली नहीं है, जब तक कि प्रत्येक मनुष्य के अधिकार सम नहीं होंगे। ये आतंक जाने वाला नहीं है, दिन–प्रतिदिन यह बढ़ता जा रहा है। अगर आप जल्दी नहीं सुधरे, तो आप सबका यमलोक सिधारना तय है। कुत्ते आपस में एक–दूसरे को काट डालते हैं, इसीलिए उनका नाम श्वान रख गया है। स्वार्थी प्रवृत्ति के स्वानुगामी जो हैं, उन्हें श्वान कहते हैं। अपने हितों के लिए दूसरों के हितों को कुचल देने वाले को ही श्वान कहते हैं। भारत में शब्द बड़े गहरे अर्थ वाले हैं, सटीक हैं। कुत्ते आपस में लड़ते हैं। एक बार किसी संत से किसी ने पूछा कि स्वर्ग और नर्क क्या होते हैं? उसने कहा कि अभी दिखा देंगे, चलो! दो कमरों का प्रबन्ध हुआ। उनमें से एक में तो भेड़ों को रख दिया गया, दूसरे में कुत्तों को रख दिया और कहा कि खाने–पीने का इंतजाम दोनों में पूरा रखो। खाना–पीना और अच्छी–अच्छी चीजें दोनों में रख दो और सुबह दिखाऊँगा कि स्वर्ग क्या है? और नर्क क्या है? उसने पूछा कि सुबह क्यों दिखाओगे? तो संत ने कहा कि तरकीब ही कुछ ऐसी है। स्वर्ग और नर्क सुबह ही दिखेगा। थोड़ा इंतजार करो। सुबह पहुँचे दोनों तो उस शिष्य ने कहा– दिखाइए! संत ने कहा कि ठहरो आराम से खोलना। क्या देखना चाहोगे पहले? उसने कहा कि पहले तो नर्क ही देखना पसंद करुँगा। कहीं बाद में आँखों का टेस्ट न खराब हो जाए। संत ने कहा कि पहले अगर नर्क देखना चाहते हो, तो दरवाजा खोलो कुत्तों वाले कमरे का। बोले इसमें पक्का नर्क होगा क्योंकि इसमें सारे स्वाभिमानी बंद थे, स्वार्थी और स्वानुगामी–अहंकारी बंद थे। दरवाजा खोलकर देखे तो दंग रह गए। वहाँ बड़े बदतर हालात थे। अंदर किसी की एक टाँग इधर कटी पड़ी थी, किसी का कान उधर कटा पड़ा था, सब लहुलूहान थे और सभी चारों खाने चित्त। कोई भी उनमें संतुलित नहीं था। खाना–पीना सब बिखरा पड़ा था। एक भी दाना किसी ने टच नहीं किया था। टच करने का तो मौका ही नहीं मिला था। पहले

*तो 'स्टारवार कार्यक्रम' शुरू हो गया था वहाँ अमेरिका का। और क्या हुआ? एक-दूसरे को फाड़ डाला था उन्होंने। जैसे ही एक कुत्ता रोटी की तरफ लपका तो दूसरे कुत्ते ने उस पर हमला कर दिया। कहा- 'मेरे रहते तू रोटी पर हाथ नहीं लगा सकता।' सबकी रोजी-रोटी छीन ली किसी दबंग व्यक्ति ने, नहीं-नहीं, किसी दबंग कुत्ते ने। वहाँ आदमी कहाँ था? सबके अधिकार छीन लिए उसने। दूसरों ने भी हमला किया कि अच्छा इसको मारो, ये ऐसा कर रहा है। तो दबंग कुत्तों ने कुछ को फाँसी चढ़वा दिया, कुछ को काले पानी उतार दिया, कुछ को नमक के पानी में उतार दिया, कुछ की आँखों में मिर्ची झोंक दी। मनुष्यों के देश में भी कुछ ऐसा ही होता है। आजादी के आन्दोलन के समय सरदार भगतसिंह टाइप के भोले-भाले लोग भी थे। उन्होंने क्रांति मचा दी कि तुम हमारा अधिकार छीनकर नहीं जा सकते और कुछ अँग्रेज टाइप के लोगों ने उनको फाँसी भी चढ़ा दिया। अतः ऐसे गुजारा नहीं होगा। सरदार भगतसिंह की तरह अन्धी यात्रा न करना, वरना ये अँग्रेज टाइप के लोग तुम्हें मार देंगे। हम लोग कुत्तों की प्रवृत्ति से संघर्ष न करें। जानते रहें कि इसप्रकार फैसला नहीं होता। लड़कर किसी का फैसला नहीं होता। एक कवि सम्मेलन चल रहा था। कवि लोग अक्सर अच्छी बात कह जाते हैं। वह कवि कहता है-**'क्रोध से कोई समस्या हल न होगी। हो सकी न आज तक और कल न होगी॥'** क्रोध से, उग्रवाद से, जेहाद से, खून-खराबे से, मार-पीट से आज तक कोई समस्या हल नहीं हुई है और कल भविष्य में भी हल होने की कोई संभावना नहीं है। तुम करो क्रोध, तुम करो उग्रवाद, इससे कोई लाभ नहीं होगा। तुम आतंक फैलाओगे इससे भी कोई लाभ नहीं होगा। तुम किसी को गोली मार दोगे तो इससे भी कोई लाभ नहीं होगा। फिर तरीका क्या है? लोग हमसे कहते हैं कि न्याय कैसे आएगा? ये राजनेता इतने बदमाश हैं, फर्जी हैं, बंदूकधारी, बेईमान और मक्कार हैं। एक से एक धूर्त और करोड़पति सारे संसाधन हड़पे पड़े हैं। वहाँ सब बैठे हुए हैं। आप न्याय कैसे कर देंगे जी! लेकिन हम कहते हैं कि न्याय एक बौद्धिक मुद्दा है, नयन का मुद्दा है। जिसके पास नयन है उसे सभी कुछ दिखाई देता है और वह कर भी देगा। आप कहेंगे कि बड़े-बड़े कृष्ण, कबीर, नानक, बुद्ध, महावीर पैदा हुए, वे तो नहीं कर पाए और उसके बाद भी घोर कलियुग और अन्याय व्याप्त है और बड़े-बड़े राम पैदा हुए उनके बाद भी यही उपद्रव व्याप्त है, तो आप कैसे कर देंगे? इस विषय में हमारा कहना है कि अँधेरा अधिक घना हो तो क्या सूर्योदय नहीं होता? पहले भी सत्युग पृथ्वी पर स्थापित होने का जिक्र मिलता है ग्रन्थों में। पहले भी सत्य के अनुकूल नियम-विधान बने होंगे। सत् के अनुकूल आचार रूपी सदाचार प्रतिष्ठित हुआ होगा। सत् के अनुकूल व्यवहार रूपी सद्व्यवहार पैदा हुआ होगा। सत् के अनुकूल जन सज्जन कहलाए होंगे। इसी के विपरीत एक दुत्-सिद्धान्त है बिलकुल उलटा। जो सत् के विपरीत द्वैत-द्वन्द्व का प्रतिपादन करता है। दूषित सिद्धान्त कहता है कि सब आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हैं, इसे दुत्-सिद्धान्त कहते हैं। परन्तु सत्य यह है कि आपस में सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। **'विश्व बन्धुत्व'** और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** ही सत्-सिद्धान्त का उद्घोष है। दोनों सिद्धान्त बिलकुल ही भिन्न हैं।*

लोग कहते हैं कि फिर आप न्याय कैसे कर देंगे? हम कहते हैं- निश्चय ही ऐसे न्याय नहीं होगा। कुत्ता बनकर वही संघर्ष होगा, जो कुत्तों का संघर्ष उस कमरे में हुआ था। फिर वही हो जाएगा, जो पीछे भी हुआ है। इस देश को अगर वह नर्क वाला कमरा समझ लें, तो जिसप्रकार कुत्तों ने वहाँ अपनी-अपनी रोटी के लिए संघर्ष किया था। वहाँ क्या हाल

*हुआ कि सारे कुत्ते, पक्ष और विपक्ष दोनों घायल पड़े थे। किसी कवि ने लिखा है–**'पक्ष और प्रतिपक्ष संसद में मुखर हैं। बात इतनी सी है कोई पुल बना है॥'** ऐसा काव्य स्कूलों के पाठ्यक्रम में बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। मतलब कोई पुल बना है, जिसमें भ्रष्ट नेतागण बहुत ज्यादा खा–पी गए होंगे, तो आपस में संघर्ष चल रहा है कि तूने ज्यादा खा लिया। वे परस्पर कह रहे हैं कि नहीं! तूने दलाली खाई। संसद में छोटी–छोटी बातों पर भी भौंहे तनी हैं। रोजी–रोटी की छीना–झपटी में कुत्तों का संघर्ष हुआ है। राज्य की छीना–झपटी में ही तुम्हें स्वराज्य चाहिए, अतः तुम परराज्य हटाओगे। चाहे तुम किसी पर राज्य करो, चाहे दूसरा कोई तुम पर राज्य करे, बात तो यही है कि राज्य किया जा रहा है। किसी पर राज करना अर्थात् दूसरे का खून पीना, दूसरे को गुलाम बनाना, दूसरे का अधिकार छीनना। चाहे आपका पड़ोसी आपको मारे या आपके घर का सगा भाई आपको मारे, चाहे अँग्रेज आपको मारे, चाहे काँग्रेस आपको मारे, इससे फर्क क्या पड़ता है? बात तो वही है कि आप पर हण्टर बज रहे हैं। आपकी रोजी छिन रही है, आपकी रोटी छिन रही है, आपकी शिक्षा छिन रही है। यदि शिक्षा नहीं छिनी तो देश में 70 करोड़ आदमी अनपढ़ क्यों हैं? यदि रोजगार नहीं छिना तो देश में 20 करोड़ लोग बेरोजगार क्यों हैं? यदि देश में कोई अशिक्षित है, बेरोजगार है, असुविधाग्रस्त और असुरक्षित है, तो किसी दूसरे को शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार क्यों है? यह कैसी न्यायशीलता है? थोड़े से धूर्तों ने दूसरों का सब कुछ छीन लिया है। छीनने के कई उपाय हैं– एक तो यह कह दिया जाए कि परीक्षा में 33% से ऊपर जो अंक नहीं लाएगा, वह फेल कर दिया जाएगा, वह बाहर कर दिया जायेगा। लेकिन सही बात यह है कि सबको क्लास में बैठने दो। जो जितने नम्बर लाता है, उसे उतने नम्बर की मार्कशीट दे दो। उसको आप क्लास से क्यों भगा रहे हो? कुछ तो सीखेगा ही क्लास में बैठकर। उसे क्लास से भगा क्यों रहे हो? कोई व्यक्ति होगा जो केवल शारीरिक क्षमता वाला है तो कुछ विद्या पढ़ लेने दो उसको। भाषा तो कुछ जान लेगा। वहाँ हल्का–फुल्का पढ़ते–सुनते लोगों के बीच में उठते–बैठते कुछ तो सीख जाता है। एकदम हटा दोगे तो कुछ नहीं सीखेगा। कभी 33% से कट कर देते हो, कभी 50% से कट कर देते हो। कभी कोई दूसरी नीति ले आते हो, कि यहाँ पर फीस लगेगी 300 रुपये प्रतिमाह। माने कि 300 रुपये से नीचे वाले को हटाने का अच्छा तरीका है यह। जो नहीं दे सकता 300 रुपये प्रतिमाह उसको कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है, वह स्वतः हट जाएगा। आप की नीति सफल हो गई। एक छोटा सा नियम पारित कर दो। उससे नीचे आर्थिक स्थिति वाले बच्चे सभी स्कूल से बाहर हो जायेंगे। आप पर इलजाम भी नहीं लगेगा– **'साँप मरे और लाठी भी न टूटे।'** अगर आप शिक्षा नहीं देना चाहते, तो क्या करें? एक बेन लगा दें। कोई भी स्कूल में भर्ती होने के लिए बेन लगा दें कि इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के लिए 12 लाख रुपये चाहिए। अब 12 लाख से नीचे की आर्थिक स्थिति वाले जितने हैं वे बाहर हो गये। भले ही वे सारे प्रतिभाशाली बच्चे बाहर बैठे रहें और गैरप्रतिभाशाली बच्चे कालेज में प्रवेश कर जायें क्योंकि उनके बापुओं के पास 12 लाख रुपये थे। अतः गैरप्रतिभाशाली लोगों को उन कक्षाओं में बैठा दिया गया। अब गैर प्रतिभाशाली लोग कालेज में आये किन्तु वे धनाढ्य गधे थे। उन्होनें क्या किया? सारे फर्जी काम किये। पुल बनाया उन गधे इंजीनियरों ने और वह गिर गया, क्योंकि सारे गैर प्रतिभाशाली इंजीनियर फर्जी थे। वे 12 लाख से आये थे, वे अपनी प्रतिभा से नहीं आये थे। आप इस पर सोचो और पूरी अनैतिकता को पहचानो, पूरे अन्याय को जानो। आप इनकी चतुराई को भाँपो। इसी बीच*

में कोई दलाल पहुँचेंगे कि वहाँ जब इसीप्रकार पहुँचना है तो हमें आरक्षण दो। ***'लूट में हिस्सेदारी ही आरक्षण है।'*** *एक नयी परिभाषा सुनो आरक्षण की–**'लूट में हिस्सेदारी'**। आरक्षणवादियों का कहना है कि तुम इतने दिनों से लूट रहे हो, हमें भी हिस्सेदार बनाओ। हम भी तो किसी जाति के हैं। वे बोले– एक जाति के लुटेरे तुम, दूसरी जाति के लुटेरे हम। अलग–अलग जाति के लुटेरों का संघर्ष उस राष्ट्र में हुआ। अलग–अलग प्रकार के कुत्तों का संघर्ष उस कमरे में हुआ। दोनों ने एक–दूसरे को फाड़ डाला। सबने एक–दूसरे को मार गिराया, कोई साबुत न बचा। कहते है कि द्वन्द्व में कोई भी साबुत नहीं बचता। कबीर का वचन आप सभी को याद होगा–**'दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।'** साबुत माने पूरा–पूरा, उस द्वन्द्वात्मक संघर्ष में किसी का पूरा स्ट्रक्चर साबुत न बचा। किसी का हाथ टूट गया, किसी का पाँव टूट गया। सबकी मौलिक संरचना ही बिगड़ गई–**'चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय॥'** इस अन्याय की चलती हुई चक्की को देखकर कबीर रो पड़े और रो करके कहने लगे कि मैं तो अनपढ़ हूँ, मुझे तो पता नहीं कि ये न्याय क्या होता है? लेकिन भइया! कम से कम इस चक्की को तो बन्द करो, जिसमें दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय!*

*नर्क का दरवाजा खुलवाकर दिखाया और कहा कि देखो अन्दर क्या है? उस शिष्य ने तो देखते ही आँखें बंद कर लीं और कहा कि यह तो देखने लायक नहीं है। उसने कहा कि मुझे जल्दी से यहाँ से बाहर लेकर चलो। तो गुरु ने कहा– नहीं! तुमने देखने को कहा था। तो अब तो तुम्हें देखना ही पड़ेगा। आँखें खोलो नहीं तो बहुत मारेंगे। क्यों नहीं देखोगे? देखो यहाँ वीभत्स लाशें। सुनो यहाँ की दर्दनाक चीखें! यहाँ क्या हो रहा है? राममंदिर बनाओगे? वीभत्स लाशें देखो वहाँ जाकर! लाखों आदमियों को वहाँ पुलिस मार–मार कर घसीट रही है। किसी को नदी में डुबाए दे रहे हैं, किसी को कुछ और करे डाल रहे हैं। कोई मस्जिद तोड़े ड़ाल रहा है तो कोई मंदिर बनाये डाल रहा है। कोई कुछ किये दे रहा है। देनी थी शिक्षा, जिसपर कोई बात तक नहीं करना चाहता। देना था रोजगार, जिसकी कोई चर्चा नहीं करना चाहता। देखो इनकी चतुराई वाह रे मुस्लिम नेतृत्व! वाह रे हिन्दू नेतृत्व! वाह रे काँग्रेसी नेतृत्व! वाह रे बी.जे.पी. नेतृत्व! वाह रे बी.एस.पी. नेतृत्व! वाह रे समाजवादी नेतृत्व! वाह रे तुम्हारा समाजवाद! इसीलिए हमने कहा कि यह न्याय राजनैतिक दलों से नहीं होगा। इसके लिए तो न्यायनैतिक दल चाहिए, जो कि गैर राजनैतिक संगठन हो और वह कभी अपनी सरकार बनाने की तमन्ना से भरा न हो। वह कहे कि राजनैतिक पदों पर न्यायपूर्वक नियुक्ति हो। सार्वजनिक प्रतियोगी परीक्षणों में जो पास हों, उनमें से ही चुनावप्रक्रिया द्वारा नियुक्त किया जाए। अतः ऐसा कदापि नहीं कि **'न्यायधर्मसभा'** की सरकार बने। वहाँ जाकर हम अपना झण्डा लहरा दें, ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए। वहाँ जाकर हम अपना कानून चलायेंगे, ऐसा नहीं होना चाहिए। न्याय का नियम चाहिए, इंसाफ का कानून चाहिए। जस्टफुल लॉ चाहिए। आपको अपनी सरकार बनाने का कोई हक नहीं है। न्यायपूर्वक योग्यतानुसार जो वहाँ नियुक्त किया जाता है, वह प्रधानमन्त्री बने। न्यायपूर्वक से मतलब कि जो जिस पद के योग्य है, उसे उस पद पर बैठाना चाहिए। सीधा सा सिद्धान्त है। फिर इसमें झगड़े वाली क्या बात है? जो हवाई जहाज चलाने योग्य है, वही चलाए अन्यथा विनाश निश्चित है। न्याय कहता है–**'गुण कर्म विभागशः।'** अर्थात् 'गुणों के अनुसार कर्मों का विभाजन करो।' यही न्याय है। यही तो कृष्ण ने भी कहा था। लेकिन*

*हे कृष्ण के भक्तों! तुम बड़े बदमाश हो। तुम सारी उम्र कृष्ण-कृष्ण तो जपते रहे, लेकिन उम्रभर तुमने अन्याय किया, अन्याय जिया, अन्याय सहा और लोगों को अन्याय सहने के लिए मजबूर किया। तुम्हारा धर्म क्या कहता था?-**'आरम्भो न्याययुक्तो यः स धर्मः इति स्मृतः।'** न्यायपूर्वक जो कुछ भी किया जाता है, वही धर्म है। अतः जो कुछ भी अन्यायपूर्वक किया जाता है, वही अधर्म है। तुम्हें कृष्ण के वचनों में कोई रस न था। कृष्ण कहते हैं-**'कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।'** कुछ लोगों ने भगवद्गीता की व्याख्या कर डाली। महात्मा गाँधी ने व्याख्या कर डाली, तिलक और बिनोवा ने व्याख्या कर डाली। ओशो ने व्याख्या कर डाली। और भी कई सन्तों ने व्याख्या कर डाली। गीता की व्याख्या से नहीं, उसके जैसे जियो जिन्दगी को। वैसे काम करो। उसके जैसी व्यवस्था को प्रतिष्ठित करो। तुम व्याख्या करने में व्यस्त हो, उसे अपनी जिन्दगी में उतारना ही नहीं चाहते। रामायण का पाठ आयोजित करते हो। उसमें लिखा है-**'राम प्रताप विषमता खोई'।** और इस विषमता के हटने का परिणाम भी लिखा हुआ है-**'बयरु न करु काहू सन कोई।'** विषमता मिटते ही वैर मिट जाता है। न्याय आते ही प्रेम उत्पन्न होता है-**'सब नर करहिं परस्पर प्रीती'।** तुम क्या कर रहे हो? पहले विषमता मिटाओ तो प्रेम पैदा हो जायेगा। समता से ही एकता उत्पन्न होती है। न्याय के बिना प्रेम नहीं उत्पन्न होगा। समाज में समता के बिना एकता नहीं उत्पन्न होगी। लेकिन तुम्हारा राजनेता कहता है कि एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए संघर्ष करेंगे। समता को भुलाकर वह निरन्तर एकता की बात करता है। यह नहीं कहता कि समानता का अधिकार देंगे। उसकी चर्चा भी नहीं करना चाहता। साइड से निकल जाना चाहता है। तुम राष्ट्र में सद्भाव पैदा कर देना चाहते हो। सत्पाल जी महाराज प्रतिवर्ष सद्भावना सम्मेलन आयोजित करते हैं, किन्तु न्याय की समभावना से बचते हैं। तुम यह क्या कर रहे हो? तुम सद्भाव की बात करते हो, तुम प्रेम की बात करते हो, कौमी एकता कमेटी बनाते हो। आर.एस.एस. ने पूरा संगठन बना रखा है कि सारे हिन्दूसमाज को संगठित कर देंगे, सबको एकता के सूत्र में बाँध देंगे। वे लगभग 80 साल से यही एकता का राग अलाप रहे हैं। किन्तु लोग हैं कि एक होने के लिए राजी नहीं हैं। जिसके साथ अन्याय करोगे, वह तुम्हारे साथ एक नहीं होगा। न्याय के बिना यह निश्चित है कि इस हिन्दूसमाज में जो कमजोर रह जायेगा, उसका खून पी जायेंगे ये संगठित लोग। तुम्हारे संगठन के मजबूत आदमी इन कमजोर आदमियों का खून पी जायेंगे और गुलाम बना लेंगे, दास बना लेंगे। उनको कबीरदास कहेंगे, उनको रहीमदास कहेंगे, उनको रविदास कहेंगे। सभी कमजोरों-पिछड़ों को दास बना लो और उनका खून पियो। यही तुम्हारा धर्म है? फिर जब उनमें कोई ताकतवर पैदा हो जायेगा तो वह तुम्हारा खून पियेगा। कोई चन्द्रगुप्त खड़ा हो जायेगा, तो तुमको सतायेगा। इतिहास कहता है कि उसी गुप्त खानदान के सम्राट अशोक ने अपने 99 भाइयों का कत्ल करके राजगद्दी हथियाई और अपने अड़ोसी-पड़ोसी राज्यों में भीषण मार-काट और अत्याचार करके उन्हें लूटा और बलात् कब्जा किया। कलिंगविजय का भीषण विनाशकारी अन्धयुद्ध जगतविख्यात है। क्या यह अँग्रेजों का हमला था? तुम अँग्रेजों और मुसलमानों को गलत बता रहे हो बहुत दिनों से। बहुत धूर्त हो तुम। कलिंग पर सम्राट अशोक का जो हमला था, वह अँग्रेजों का हमला था कि मुसलमानों का? अगर मैं आप लोगों से पूछूँ तो क्या बतायेंगे आप लोग? अपने 99 भाइयों की हत्या इसलिए कि गद्दी हथिया ली जाए। राम को 14 साल का वनवास इसलिए कि गद्दी हथिया ली जाए। पाण्डवों को 12 वर्ष का वनवास इसलिए कि गद्दी हथियाई जा सके। कंस द्वारा अपने*

पिता उग्रसेन को तहखाने में बन्दी बनाकर रखा गया ताकि गद्दी हथियाई जा सके। आजादी से पूर्व इस गद्दी हथियाने के क्रम में 534 रियासतों में यह देश विभक्त था। तुम गद्दी हथियाने का संघर्ष कर रहे हो। न्यायपूर्वक योग्यतानुसार तुम पदनियुक्त होना नहीं चाहते। न्याय तो यही कहता है कि देश में खुली सार्वजनिक प्रतियोगिता परीक्षणों के द्वारा जो सबसे अधिक सुयोग्य और अधिक लोकप्रिय सिद्ध हो, वही देश के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हो। यही खरा न्याय है। यही सच्चा लोकतंत्र है।

*संसाधन–सम्पदाओं की लूट ही गद्दी हथियाने का मूल उद्देश्य है। गद्दी हथियाने के चक्कर में ही श्वानों ने एक दूसरे को काट डाला। सन्त ने कहा कि देखो तो ठीक से इन कुत्तों को! शिष्य ने कहा कि दृश्य की वीभत्सता के कारण आँख ठीक से खुल नहीं पा रही है। मेरे गुरुवर! कृपया ऐसा करो कि स्वर्ग की तरफ ले चलो। सन्त ने कहा कि चलो स्वर्ग भी देखो। सब इंतजाम है। दूसरा कमरा खोलो। दूसरे कमरे में क्या था? दूसरे कमरे में बहुत कुछ था– देखने लायक। वहाँ पर कुत्ते नहीं बन्द थे, वहाँ भेड़ें बन्द थीं। कमरा खुलवाया गया, तो एक बढ़िया सा दृश्य दिखाई दिया। वहाँ एक गोलाकार आकृति दिखाई दी। भेड़ें तो दिखी ही नहीं वहाँ। एक गोलाकार आकृति दिखाई दी। उसने पूछा कि ये क्या है? तो सन्त ने कहा कि ये भेड़ें ही हैं। वे बड़ी शान्तिपूर्वक गले से गला मिलाकर गोलाकार बैठी हुई थीं। खाने–पीने के जो बर्तन थे, वे यथास्थान पर खाली रखे हुए थे। एक–एक तिनका चुन लिया गया था। कुछ भी व्यर्थ नहीं किया गया था। कमरे के भीतर सब कुछ अपनी जगह पर था। सबके हाथ–पाँव सुरक्षित थे। किसी का कान न फटा था। किसी का खून न बहा था। किसी ने किसी के खिलाफ कोई जेहाद न छेड़ा था। दुनिया भर में हमारे मुसलमान भाई जेहाद छेड़े पड़े हैं। कहते हैं–**'मुहम्मद साहब ने कहा था कि इंसाफ के लिए जेहाद करो।'** लेकिन तुम तो जेहाद में ही नाइंसाफी कर रहे हो। न–न भइया ऐसा मत करो! मुहम्मद ने ऐसी नाइंसाफी का जेहाद करने को नहीं कहा था। ऐसा गरम जेहाद तो भारत के लोगों ने भी किया था आजादी के वक्त। पहले किसी मंगलपाण्डे ने गोली मार दी थी। बाद के आन्दोलन में भी दो दल थे। उसमें एक नरम दल था, दूसरा गरम दल था। गरम दल को तो आजादी के पहले ही अँग्रेजों ने दबा दिया था, उसकी आग ठण्डी कर दी थी। नरम दल आखिरी दिनों तक चला। यद्यपि बहुत से लोगों द्वारा कहा तो यह भी जाता है कि सन् 1947 तक कुछ बाहरी परिस्थितियों के कारण भी अँग्रेज लोग स्वयं त्रस्त होकर इस देश से भाग गये थे। वे तो दुनिया में ज्ञान–विज्ञान के विकास से जनता में अधिकारों के प्रति जागरूकता से भयभीत होने के कारण चले गये थे, न कि आपके आन्दोलनों के कारण। अन्य देशों में जहाँ आन्दोलन नहीं हुये, वहाँ से भी अँग्रेजों का सफाया हो चुका है। इसलिए आप न भी करते तो भी कोई खास फर्क पड़ने वाला नहीं था, क्योंकि ज्ञान–विज्ञान हर समस्या का समाधान है। विश्व में शिक्षा बढ़ी, ज्ञान–विज्ञान बढ़ता चला गया, लाइजनिंग बढ़ती चली गई। अब तो टी.वी., मोबाइल, इण्टरनेट का भी आविष्कार हो गया है। हर आदमी एक–दूसरे से सम्बन्धित हो रहा है। जागरूकता, सहजीविता, सभ्यता बढ़ रही है। अब यहाँ देखिये कि रिकार्डिंग हो रही है। हम कुछ न भी करेंगे तो भी हमारी बात सब जगह पहुँच जाएगी। कैसे बचाओगे आदमी को आप हमारी बातों से? बचा न सकोगे और न तुम्हीं बच सकोगे। अपने को भी न बचा सकोगे इन बातों से, क्योंकि अगर आप सोचते हैं कि सुस्ती से काम चल जायेगा तो नहीं, अब बिजली का आविष्कार हो चुका है।*

वह बड़ी तेजी से काम करती है। ट्रेन में अगर जल्दी नहीं चढ़ोगे, तो गिर पड़ोगे, क्योंकि ट्रेनें तेज हो गई हैं। अब समय आ गया है, युग बड़ी तेजी से बदल रहा है। आप भरोसा न करना हिन्दुओं पर, क्योंकि वे कहते हैं कि यह कलियुग चार लाख बत्तीस हजार (4,32,000) साल तक हटने वाला नहीं है। आप देखें कि इन्हें कलुषता से कितना लगाव है! ये सात्त्विकता का युग ही नहीं लाना चाहते। आप इनकी बातों पर भरोसा न करना। ये बहुत चालाक है। इनका भरोसा न करना क्योंकि ये कहना चाहते हैं कि कलियुग के कारण आपको शिक्षा नहीं प्राप्त हो रही है। कलियुग के कारण आप गरीबी के शिकार हो। कलियुग के कारण ही आपकी समस्यायें हैं। जबकि इन तथाकथित हिन्दुओं के मनुस्मृति जैसे बदनाम ग्रन्थ में भी लिखा हुआ है–**'राजा युगमुच्यते'** अर्थात् 'राजा ही युग है'। युग स्वयं में कुछ नहीं होता, क्या होता है– राजा। मूर्ति कुछ नहीं होती, क्या होता है– साँचा। चाणक्यनीति कहती है–**'यथा राजा तथा प्रजा।'** चाणक्य ने भी देखा कि ये बदमाश हैं, इनसे सावधान रहो। जैसा भी राज्य होता है, वैसी ही प्रजा होती है। जैसी भी व्यवस्था होती है, वैसी ही जनता होती है। राज्य ही युग का निर्धारक है। आपको जैसा राष्ट्रीय वातावरण मिलता है, आप वैसे ही हो जाते हो लेकिन कई लोग चिल्ला रहे हैं–**'युगनिर्माण कैसे होगा? व्यक्ति के निर्माण से ॥ हम सुधरेंगे युग सुधरेगा । हम बदलेंगे युग बदलेगा ॥'** वास्तव में जैसा साँचा होता है, वैसी ही मूर्ति ढलती है। व्यवस्था के साँचे में ही जनता ढलती है। व्यवस्था को ठीक किए बिना आप जनता को ठीक नहीं कर सकते। व्यवस्था को न्यायशील बनाए बिना जनता को न्यायशील नहीं बनाया जा सकता। लोकतंत्र में थोड़ी स्वतंत्रता है अन्यथा पहले तो राजा अगर मुसलमान हो जाए, तो आप सब भी मुसलमान होने लगते थे। राजा ईसाई हो जाए, तो सारे लोग ईसाई होने लगते थे। राजा हिन्दू हो जाए, तो आप सब भी हिन्दू होने लगते थे। राजा कसाई हो, तो सारे लोग कसाई होने लगते थे। आज भी कुछ तो प्रभाव है ही। राजा चोर हो, तो सारी प्रजा भी चोर होने लगती है। राजा भ्रष्ट हो, तो सभी भ्रष्ट होने लगते हैं। इसीलिए राजा बनाते समय बड़े सावधान रहो। ये न कहो–**'कोउ बृप होय हमें क्या हानी ।'** सारा हिन्दूसमाज रटे बैठा था। हिन्दुओं के कोई साधु–महात्मा सर्वेक्षण के दौरान हमारी **'जनमत सर्वेक्षण टीम'** को मिले तो कहते हैं–**'हमें क्या मतलब इस बात से? हम लोग तो संसार से बाहर है ।'** अब देखो इनकी लीला– ये संसार का खा रहे हैं, संसार का पहन रहे हैं, संसार की मिल का कपड़ा ओढ़ रहे हैं, संसार की गुरियाँ फेर रहे हैं माला और कहते हैं– 'हमें संसार से क्या लेना–देना?' दाँत निकाल रहे हैं ये कमीने! आप देखें इन महात्माओं की दुर्दशा। कहते हैं– 'हमें संसार से क्या। हमें संसार सागर से उतरकर पार जाना है।' संसार को ये भवसागर बताते हैं और उससे पार उतर जाने का उपाय करने में लगे हैं। इन्होंने यह नहीं सोचा कि औरंगजेब आया और उसने ऐसे एक संसारातीत महात्मा को पकड़ा। उनका नाम था– गुरु अर्जुनदेव। उनको पकड़कर एक जलती हुई भट्ठी में डालकर फ्राई कर दिया। अब आप देखिए उन्हें गर्म तवे पर आमलेट बना दिया। अब बोलो–**'कोउ बृप होय हमें क्या हानी ।'** उस आमलेट के बनते समय यह वचन ध्यान में नहीं आता। उस समय तो सिर्फ दर्द होता है, बड़ा खतरनाक होता है। सिखों के एक और गुरु को आरे से चीरकर शिर से पैर तक दो फाँक कर दिया गया था। यह भी किसी राजा का ही फरमान था। गुरु गोविन्द सिंह के दोनों बच्चों को दीवार में जीवित ही चिनवा दिया था किसी बादशाह ने। एक और नृप ने ईसामसीह जैसे सीधे सादे आदमी को भी क्रूस पर टाँगकर मार डाला था। सावधान रहना! गलत आदमी जब भी नृप

बन जायेगा, तो तुम्हारी चमड़ी उतार देगा, तुम्हारी बखिया उधेड़ देगा। सम्राट अशोक नृप बना। उसने भी अड़ोसियों, पड़ोसियों की चमड़ी उधेड़ दी। अँग्रेज नृप बने, तो उन्होंने सारी दुनिया की चमड़ी उधेड़ डाली। हिटलर जब नृप बना, तो उसने विश्वयुद्ध तक छिड़वा दिया, जिसमें साढ़े तीन करोड़ (3,50,00,000) आदमी मारे गए। आँकड़ों के अनुसार बीसवीं सदी में कुल ग्यारह करोड़ (11,00,00,000) मनुष्यों की हत्या हुई। इसलिए सावधान रहो! अपने लिए सही नृप का इंतजाम करो। बहुतों को हमने चेताया कि ये नृप की व्यवस्था ठीक करो। ध्यान रखो– ***'यथा राजा तथा प्रजा'।*** *अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा बच्चा चोर न बने तो राजा के पद पर ईमानदार आदमी को बैठाओ, जो चोर न हो ऐसा आदमी बैठाओ। वी.पी.सिंह ने अपना कैंसर का इलाज कराने में 15 करोड़ रुपये सरकारी धन लगा डाला, इंग्लैण्ड में इलाज करवाया। यह क्या था? उनके व्यक्तिगत इलाज पर खर्च किया गया सार्वजनिक धन किसलिए था? जनता की सेवा करने के लिए! क्या इनका व्यक्तिगत इलाज जनता की सेवा है? जनता की सेवा करनी थी तुम कैंसर का दर्द थोड़ा सह लेते। कौन से तुम बड़े महत्त्वपूर्ण आदमी हो? जनता की सेवा तो केवल न्याय से ही होगी। न्यायशील जनाधिकार देना ही जनता की मूल सेवा है। जनता की सेवा के लिए तो राष्ट्रकोष का समुचित वितरण होना चाहिए था। वह तो तुमने किया नहीं। अपना इलाज सार्वजनिक धन से करवा रहे हो, हद हो गई। हमने पढ़ा अखबार में तो हम दंग रह गये। ये तो बड़े कलाकार आदमी हैं। ऐसे ही बहुत से मगरमच्छ है, इस राजनीति के भवसागर में, जो सार्वजनिक धन से लम्बा–लम्बा अमाउण्ट अपने ऊपर खर्च करते हैं। बड़े हाई ग्रेड से रहते हैं, बड़ी मस्ती से रहते हैं ये रायबहादुर लोग। आप देखो इन सबकी लीला– गरीबों के मसीहा हैं ये। ध्यान रखना सब गरीबों के मसीहा हैं ये। मैं इनके खिलाफ कुछ नहीं कहता। यहाँ जो उनके भक्त हों, मैं उन भक्तों का भी सम्मान करता हूँ, क्योंकि उनके साथ भी उनके मालिकों ने अन्याय ही किया है। अब उनके भक्तों को भी अन्याय से छुटकारा मिलेगा। समय आ गया है। बेचारों ने बहुत सहन किया है। ये सब अन्याय हटेगा। ऐसा मत सोचना कि यह अँधेरा कायम रहेगा! अँधेरा अवश्य हटेगा, न्याय का नयन अवश्य खुलेगा!*

उस सन्त ने दिखाया ले जाकर अब स्वर्ग वाले कमरे में– तो पाया कि सब गोलाकार हुए बैठे हैं और वहाँ सारा एक–एक अन्न का दाना खा लिया गया था। कोई लड़ाई न हुई थी, कोई आतंक न फैला था। जैसे ही दरवाजा खुला तो सबने एक साथ मिमियाते हुए सिर उठाया और कहा– 'मेंऽऽऽऽ.....' यानि स्वागत है। अपनी भाषा में कहा– 'बन्धुओं! आ जाओ आप भी कमरे में, आपका भी स्वागत है।' शिष्य को कुछ समझ में नहीं आया। उसने पूछा कि भगवन्! मेरे गुरुवर! ये क्या चक्कर है? यहाँ तो परिस्थिति ही कुछ और है। वहाँ तो परिस्थितियाँ बिलकुल ही डिफरेंट थी। वहाँ तो मुद्दा ही कुछ और था। आप लोगों को कौन सी परिस्थिति पसंद है? अगर आप लोगों से यह पूछा जाए तो सही बात कहने में डरो नहीं! डरने की जरूरत नहीं है, किसी से। हमारे पास लोग आने से घबराते हैं। अभी पिछले लगभग 10 साल से हम एकान्तिक हो गये थे कि पहले इस 'धर्मस्थापना अभियान' का ग्राउण्ड बना दें। उसके बाद ही धर्मस्थापना का कार्य करेंगे। महात्मा हमसे डरता है। साधु हमसे डरता है कि ये इतनी खतरनाक बातें करते हैं कि अभी फाँसी पर चढ़वा देंगे, अपने साथ। समय से पहले ही उतार देंगे संसार सागर से पार। हम

*कहते हैं– डरने और घबराने की जरूरत नहीं है। न ही तुम्हें कोई मार सकता है, न ही काट सकता है, न ही गला सकता है। हमसे दूर रहते हुए भी तुम्हें अन्यायी लोग फाड़े खा रहे हैं। तो अच्छा यही है कि न्यायपूर्वक जियो, डरो नहीं। न्याय की व्यवस्था को ही स्वीकार करो। न्याय के अनुसार जिन्दगी जियो। इसमें परेशानी की क्या बात है? हम आपको गारन्टी देते हैं कि न्याय के पथ पर आपको कोई भी तकलीफ नहीं होगी। हमारे साथ जो लोग हैं उन्हें भी कोई तकलीफ नहीं होगी। उन सबके लिए उत्तरदायी हम हैं। उनका जिम्मा हमारे पास है। उनको अगर कोई कुछ कहेगा भी तो यमलोक में भी गुजारा नहीं हो पायेगा उसका। क्योंकि स्वर्ग और नर्क की चाबियाँ हमारे पास हैं। मैं जिसे चाहूँ उसे वहाँ भेज सकता हूँ। आप लोग जहाँ जाना चाहें तो मैं वहाँ का टिकट आपके लिए बुक करा सकता हूँ। दोनों की चाबियाँ मैंने बना रखी हैं। स्वर्ग का द्वार भी खोल सकता हूँ और नर्क का द्वार भी खोल सकता हूँ– जनता के लिए। जनता जो चाहे वह स्वीकार कर ले। हम न्याय की स्थापना के लिए कार्य कर रहे हैं। हम इस धरती को ही स्वर्ग बनाना चाहते हैं–**'मैं बसाना चाहता हूँ स्वर्ग धरती पर, आदमी जिसमें रहे बस आदमी बनकर। उस नगर की हर गली तैयार करता हूँ, आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।'** सन् 2011 से हम न्याय की स्थापना का अभियान प्रारम्भ करेंगे ही, जो सन् 2054 तक निरन्तर चलता रहेगा और **'विश्व-बन्धुत्व'** एवं **'वसुधैव-कुटुम्बकम्'** का चिरपुरातन सत्यात्मक स्वप्न साकार करके रहेगा। आप यह न समझें कि ये कार्यक्रम रुक जायेगा, ये तो हम करेंगे ही। इसे तो हम करेंगे ही। इसे न तो कोई सरकार रोक सकती है और न ही कोई कानून रोक सकता है और न ही कोई व्यक्ति रोक सकता है और न ही कोई संस्था रोक सकती है। न्याय ही नियम है। तो अगर हम यह कहें कि हम नियम की रक्षा कर रहे हैं, तो इसमें नियम–कानून हमारे खिलाफ क्यों बोलेगा। हम तो नियम के भक्त हैं। जनता के साथ न्याय करने वाली ही नीति है–**'नयति इति नीतिः।'** हम तो नीति के भक्त हैं। अतः नीति–नियम, विधि–विधान या कानून के हमारे खिलाफ जाने की कोई स्थिति है ही नहीं। हम तो विधान के भक्त हैं। 'विद्' शब्द में हमें बड़ा रस है। 'विद्वता' में हमें बड़ा रस है। 'वेद' में हमें बड़ी रुचि है। 'विज्ञान' में हमें बड़ा रस है। सही बात में हमें बड़ा रस है और इसके लिये हम करोड़ों बार जन्म ले सकते हैं। करोड़ों बार इस पर न्यौछावर हो सकते हैं। हमें शक्ति की साधना में कोई रस नहीं है। हमें सत्य की साधना में रस है। हमें सत्य के बोध में रस है। हमें सत्य के ज्ञान में रस है और कहा भी गया है कि जीतता सत्य ही है। कहीं नहीं लिखा– 'शक्तिमेव जयते।' सर्वत्र यही उल्लेख मिलता है–**'सत्यमेव जयते।'** आप सत्य पर भरोसा करके देखो, आप ही जीतोगे। जो लोग शक्ति के द्वारा अँग्रेजों से लड़े, उनको अँग्रेजों ने परास्त कर दिया। गाँधी ने कहा– 'मैं तो सत्य से, सत्य के द्वारा, सत्य के लिए कार्य करूँगा।' गाँधी का अपना ट्रैक था– सच्चाई का। लोग कहते हैं आजादी के बाद भी बुद्ढा जिन्दा रहा। अँग्रेजों की दृष्टि में गाँधी जी की बूढ़ी हड्डियों में भी बड़ा दम था। किन्तु जिनके लिए आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, उनको गाँधी जैसे पवित्र व्यक्ति का जिन्दा रहना कुछ बुरा लगा। उन्होंने कहा– यह तो ठीक नहीं है। इसको रास्ते से हटाओ। जिन गुलामों के लिए संघर्ष किया था स्पार्टाकस ने– उन्हीं लोगों ने स्पार्टाकस को फाँसी पर चढ़वा दिया। जिनके लिए संघर्ष किया गाँधी ने उन्हीं लोगों ने गाँधी को मरवा डाला क्योंकि ये गुलाम लोग मूर्ख थे, अपना हित और अहित न जानते थे। जिनके लिए ईसामसीह ने संघर्ष किया, उन्हीं लोगों ने ईसा को फाँसी पर चढ़वा दिया। जिन*

*यहूदियों के उद्धार के लिये वह जीवन भर संघर्ष करता रहा उन्हीं यहूदियों ने ईसा को सूली पर चढ़ा दिया। अब देखें कि खतरा किससे है? लोग कहते हैं-**'अपनो की दोस्ती ने सिखाया है ये सबक। गैरों की दुश्मनी भी इनायत से कम नहीं।'** आप लोगों के लिए जो संघर्ष करता है आप लोग सोचते हो कि वह आपके साथ कुछ गलत कर रहा है। आपको ऐसी प्रतीति आपकी श्वानवृत्ति के कारण होती है। कुत्ते को दवा लगाने के लिए जाओ, उसके घाव पर मरहम लगाने के लिए जाओ तो वह काट लेता है। महात्मा गाँधी ने तुम्हारे घावों पर मरहम लगाना चाहा तो तुमने उन्हें गोली मार दी। तुम्हें अपने मर्ज से इतना प्यार हो जाता है, तुम्हें अपनी गुलामी से इतना प्यार हो जाता है कि तुम भक्त बन जाते हो गुलामी के। पहले तुम अँग्रेजी गुण्डों के गुलाम थे, अब हिन्दुस्तानी गुण्डों के गुलाम हो। न्याय ही स्वतंत्रता है, अन्याय ही गुलामी है। अन्यायकारी चाहे अँग्रेज हो, चाहे काँग्रेस हो, चाहे बी. जे.पी हो, चाहे बी.एस.पी. हो, चाहे कम्युनिस्ट हो, चाहे पूँजीवादी हो, जो कोई भी अन्याय करता है वह जनता को गुलाम बनाता है। शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण आदि चारों जनाधिकारों को बड़ी धूर्ततापूर्वक छीनता है, सार्वजनिक धन को सार्वजनिकतापूर्वक समानरूप से वितरित नहीं करता, वह अन्यायी है। विवेकानन्द ने अपनी पुस्तक 'हे भारत! उठो, जागो!' में लिखा है-**''स्वाधीनता पाने का अधिकार उसे नहीं, जो स्वयं औरों को स्वाधीनता देने को तैयार न हो। मान लो, अँग्रेजों ने राज्य तुम्हारे हाथों में सौंप दिया तो होगा क्या? तब तो तुम प्रजा को दबाओगे और उन्हें कुछ भी अधिकार न दोगे। गुलाम तो शक्ति चाहता है- दूसरों को गुलाम बनाने के लिये। 'सबका समान अधिकार है', 'सभी समान हैं'- ये जो तत्त्व पूर्वकाल में आचार्य शंकर, रामानुज और चैतन्य आदि द्वारा प्रचारित हुए थे, उन्हीं के आधार पर समाज को पुनः गठित करने का प्रयत्न करो।''***

*अधिक दिन तक तुम गुलाम रहते हो तो उस गुलामी के अभ्यस्त हो जाते हो। गलत बातों के तुम भक्त हो जाते हो, तो सही बातें समझने में तुम्हें देर लगती है। कई लोग सोचते हैं कि हम जिनके खिलाफ बोल रहे हैं उनसे हमें खतरा है। न-न वे लोग हमें बड़ा प्यार करते हैं। वे चाहते हैं कि उनका उद्धार हो। रावण भी तो चाहता था कि राम उसका उद्धार करें। हर रावण चाहता है कि राम उसका उद्धार करें लेकिन ये कैकयी और दशरथ जैसे लोग राम को स्वीकार नहीं कर पाते। उसे रास्ते से हटा देना चाहते हैं क्योंकि ये अपने लोग मूर्खता के कारण घर की मुर्गी दाल बराबर समझते हैं। किसी शायर ने ठीक ही कहा है-**'अपनो की दोस्ती ने सिखाया है ये सबक। गैरों की दुश्मनी भी इनायत से कम नहीं॥'** इनायत माने कृपा। अतः जो दुश्मन है वह ज्यादा खतरनाक नहीं है। रावण राम का दुश्मन है लेकिन रावण चाहता है कि राम उसका उद्धार कर दें। अन्यायी चाहता है कि कोई न्यायी व्यक्ति आये और उसका उद्धार कर दे, क्योंकि अन्याय के पाप से वह भी बहुत ही परेशान रहता है। न्याय तो उसे भी मिल नहीं रहा है। उसके साथ जब न्याय हो जाता है तब वह भी दूसरों के साथ अन्याय नहीं करता। ध्यान रखना कि आज का दबा हुआ कल दूसरों को दबाता है। आज का चिढ़ा हुआ कल दूसरों को चिढ़ाता है। आज का शोषित हुआ व्यक्ति ही कल दूसरों का शोषण करता है। आज का पिछड़ाया हुआ व्यक्ति ही कल दूसरों को पिछड़ाता है। आज का सताया हुआ व्यक्ति ही कल दूसरों को सताता है। आज जिसके साथ अन्याय हुआ है, कल वह दूसरों के साथ अन्याय करता है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि वह सोचने लगता है- 'जब किसी ने मेरे साथ अच्छा नहीं किया तो मैं भी किसी के साथ अच्छा नहीं करुँगा।' ऐसा सोचकर*

वह उपेक्षित, उत्पीड़ित, दलित, दमित, शोषित व्यक्ति ऐसी कुण्ठित मनोवृत्ति से ग्रस्त हो जाता है। वह प्रतिक्रियात्मक स्वरूप धारण कर लेता है। अतः यदि समाज को स्वच्छ बनाना है, राष्ट्र को सभ्यता और सुखशान्ति देनी है तो न्यायरूपी सामाजिक एवं राष्ट्रीय धर्म को स्वीकार करना होगा। आप देखें– ये मुद्दे बड़े ही गम्भीर हैं।

न्याय से किसी को डरने की जरूरत नहीं है। न्याय तुम्हारा मसीहा है। न्याय तुम्हारा भाग्यविधान है क्योंकि न्याय के बिना तुम्हारा भाग्य तुमसे रूठ जाता है। अगर अन्याय करके तुम बड़ी भारी चीजें दूसरों से छीन भी लेते हो, तो भी तुम उसके भार से दबकर मर जाते हो। दोनों तरफ से मृत्यु का ताण्डव नर्तन होता है। शोषित गरीब जिसप्रकार गरीबी के बोझ से दबकर मरता है, शोषक अमीर भी उसीप्रकार अमीरी के बोझ से दबकर मरता है। अमीर और गरीब दोनों का जीवन कठिन है। लेकिन मैं गरीब और अमीर को बराबर करने की बात नहीं कर रहा हूँ कि दोनों को काट–पीट कर बराबर कर दिया जाए। बल्कि मैं यह कहता हूँ कि जो अमीर है उसकी अमीरी भी सुरक्षित नहीं रह पाती गरीबी के कारण। क्योंकि गरीब डाकू हो जाता है। गरीब चोर हो जाता है, गरीब आतंकवादी हो जाता है, गरीब उग्रवादी हो जाता है। चाहे उसका नेतृत्व कोई अमीर ही कर रहा हो! सोमालिया में वे लोग बन्दूक लिए घूमते हैं जिनके पैरों में चप्पल नहीं है, तन पर कपड़ा नहीं है, पेट में रोटी नहीं है। इस देश में नक्सलवादी कौन हैं?– अभावग्रस्त गरीब लोग। चीन, रूस, जर्मनी, इटली आदि राष्ट्रों में कम्यूनिज्म, सोसलिज्म के आन्दोलन में गरीबों ने अमीरों को काट डाला। खून की नदियाँ बहा दी। अतः वस्तुस्थिति को समझो।

डर–डर कर अगर चार दिन की जिन्दगी जी भी लोगे तो उससे क्या? तुम अगर सत्य के पक्ष में हो, तो सत्य तुम्हारा संरक्षण करने में सक्षम है। सन्मार्ग पर घबराहट कैसी? लोगों को डरा–डरा कर ही अन्यायी अन्याय करता है। अगर आप लोग न डरो तो वह खुद ही डरकर भाग जाता है। अन्यायी डरपोक होता है। पशु डरता है। अज्ञानी डरता है। बच्चे डरते हैं। अल्पबुद्धि वाले डरते हैं। गाँधी नहीं डरे तो वे अँग्रेज लोग ही डरकर भाग गये। यद्यपि उनको भगाना नहीं था! गाँधी से गलती हुई। ***'अँग्रेजों भारत छोड़ो'*** *आन्दोलन नहीं चलाना था। यह आन्दोलन असत्य था और गाँधी जी सत्याग्रही थे। सत्य कहता है कि दूसरा कोई नहीं है। सबमें निज को और निज में सबको देखना ही सत्य है। समदर्शिता ही सत्य है। सत्यज्ञ वही है जो समदर्शी है। गाँधी जी सत्य के भक्त थे, सत्यज्ञ नहीं। तो भी उन्होंने समता का, न्याय का पक्ष लिया। सत्य का भक्त भी न्यायकारी होता है। सत्य क्या है? शास्त्रवचन है–* ***'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।'*** *अर्थात् सभी प्राणियों में जो स्वयं को स्थित देखता है वही ज्ञानी है। तो गाँधी जी को क्या करना चाहिए था? न्याय की व्यवस्था लानी चाहिए थी। उन्हें कहना था कि अँग्रेजों यदि रहना चाहो तो भारत में ही रहो लेकिन परस्पर न्यायपूर्वक। अँग्रेजों से भारत छुड़वाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वर्तमान काँग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाँधी अँग्रेज ही हैं। घुमा–फिराकर भारत पर अँग्रेजों का शासन पुनः आ चुका है। आजादी की लड़ाई में व्यर्थ ही इतना संघर्ष किया गया।* ***'अँग्रेजों भारत छोड़ो'*** *आन्दोलन व्यर्थ सिद्ध हो चुका है। आज भी बहुत सारे ईसाई भारत में रह रहे है। सारे ईसाई अँग्रेज ही हैं। हिन्दू भी जो अँग्रेजी बोलते हैं, वे सब अँग्रेज ही हैं। अँग्रेज चले भी जायेंगे तो किसी को भाई बनाकर छोड़ जायेंगे और वह अँग्रेजियत का ढिंढोरा पीटता रहेगा। आज के अधिकांश राजनेता अँग्रेजों के ही*

*अवतार हैं। मुसलमान को खदेड़ोगे तो वह तुमको मुसलमान बना जायेगा। जिसको तुम खदेड़ते हो वह तुम्हारे भीतर अपनी छाया छोड़ जाता है। भागते समय भूत अपनी लँगोटी छोड़ जाता है। देखो, जब आप किसी बात को साफ दर्पण में देखते हो, तो सब कुछ साफ दिखता है। अँग्रेजों को खदेड़ना नहीं था। मुसलमानों को खदेड़ना नहीं है। बल्कि राष्ट्रीय व्यवस्था के अर्न्तगत न्यायपूर्वक जिसकी जितनी योग्यता है वह उतनी योग्यता वाले पद पर रहे। हिन्दू की जितनी योग्यता है वह वैसी योग्यता वाले पद पर रहे। मुसलमान की जैसी योग्यता है वह वैसी योग्यता वाले पद पर रहे। ईसाई की जैसी योग्यता हो वह वैसी योग्यता वाले पद पर रहे। पद क्या है? मानव समाज में चार प्रकार के पद होते हैं– कृषक, वणिक, प्रशासक, नायक। मनुष्यों की चार ही क्षमताएँ होती हैं– शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, चेतनात्मक। इन चारों क्षमताओं की जाँच करो। जो जिस क्षमता वाला सिद्ध हो उसे उस पद पर बैठा दो। वह चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो, ईसाई हो, इससे क्या फर्क पड़ता है। प्राचीन भाषा में कहें तो शारीरिक क्षमता को ही ऋषि लोग शूद्र कहते थे। आजकल तो हिन्दुओं ने जाति का शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण बना दिया है। पहले ये चार वर्ण थे, जाति नहीं। वर्ण देखें तो 'वृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है–'वरीयता'। वरीयता अर्थात् गुणवत्ता, योग्यता, क्षमता, कौशल आदि। इसप्रकार वरीयताक्रम ही वर्णव्यवस्था है। जातीयताक्रम से वर्णव्यवस्था का कोई सम्बन्ध नहीं था। गुणवत्ता का क्रम, क्षमता का क्रम, योग्यता का क्रम, कौशल का क्रम ही वरीयता क्रम है। न्यायशील व्यवस्था के अंतर्गत आप वरीयताक्रम के अनुसार ही कार्य कर सकते हो। न्याय कहता है– जिसमें स्कूटर चलाने की योग्यता नहीं है, क्या वह स्कूटर चला पाएगा? जिसमें नेतृत्त्व की क्षमता नहीं है, क्या वह नेतृत्त्व कर सकता है? अंधा क्या किसी को राह दिखा सकता है? अंधा यदि नेतृत्व करने की कोशिश करेगा तो वह खुद भी गढ्ढे में गिरेगा और दूसरों को भी गढ्ढे में गिराएगा। कहावत प्रसिद्ध है–**'अन्धो अन्धा ठेलिया दोनों कूप पड़न्त।'** इसीप्रकार जिसमें प्रशासनिक क्षमता नहीं है क्या वह प्रशासनिक कर्म कर पाएगा? जिसमें सेवा का भाव ही नहीं है क्या वह लोकसेवा कर पाएगा? उसके द्वारा की गई जनसेवा निश्चित ही जानलेवा सिद्ध होगी। वर्तमान लोकसेवा आयोग को यह बात सोचनी चाहिए। इसीलिए मैं आपसे कहता हूँ कि न्याय बहुत जरुरी था, जरूरी है और जरूरी रहेगा। न्याय से किसी को कोई ऐतराज नहीं है। एक डाकू को भी कोई ऐतराज नहीं है। बशर्ते कि वह मूर्ख या धूर्त न हो, क्योंकि मूर्खों और पशुओं को अपना हित और अहित दिखाई नहीं पड़ता। वे अपने लिए भी न्याय नहीं चाहते। जैसे कि यदि तुम किसी भैंस से पूछो कि तुम्हें शिक्षा चाहिए तो वह कहेगी– 'पता नहीं!' उससे पूछो कि तुम्हें रोजगार चाहिए तो कहेगी– 'पता नहीं!' और ठीक से जवाब भी कुछ न दे पायेगी क्योंकि बौद्धिक तल उसका विकसित नहीं होता। इसीप्रकार धूर्तों को दूसरों का हित नहीं दिखाई पड़ता। मूर्ख अपना हित नहीं चाहते, धूर्त दूसरों का हित नहीं चाहते। अतः जानवरों को छोड़ दो, बाकी मनुष्यों के रुप में जो हैं और जो पागल या मूर्ख या धूर्त नहीं हैं वे सब अपने लिये और दूसरों के लिए भी न्यायशील अधिकारों की इच्छा वाले हैं। मैं आपसे पूछूँ क्या आपकी शिक्षा का अधिकार छीन लिया जाए? आपको 25 साल तक शिक्षा न दी जाए तो आप क्या कहेंगे? क्या आप राजी हैं इस बात से? फिर आपसे कहें आपका रोजगार छीन लिया जाए, आपकी रोजी–रोटी का कोई साधन आपके हाथ में न रहे, तो क्या आप इससे सहमत हो जायेंगे? क्या आपके क्षेत्र की सुविधा छीन ली जाए? क्या आपको संरक्षण न दिया जाए? इस बात से आप सहमत हो जाएँगे? कदापि नहीं, बल्कि आप*

कहेंगे– ये न्याय तो होना ही चाहिए। शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए, रोजगार तो मिलना ही चाहिए। रोजगार के बिना तो हम भूखे ही मर जायेंगे। अन्न, वस्त्र, आवास सभी कुछ चाहिए जीने के लिए। आपसे पूछें कि क्या आपके ग्रामक्षेत्र को सुखसुविधाएँ नहीं दी जानी चाहिए? क्या सड़क, पानी, बिजली आदि सार्वजनिक सुविधाएँ आपके क्षेत्र को नहीं दी जायें, तो आप क्या कहेंगे? निश्चय ही आप कहेंगे– हाँ, मिलनी ही चाहिए। क्या 'नहीं' बोलकर धूल फाँकोगे? कीचड़ में लोटोगे? अँधेरे में रहोगे? दुःखदुविधा में रहोगे? सुख–सुविधा नहीं मिलेगी तो असुविधाग्रस्त हो जाओगे। फिर आपसे पूछें– क्या आपका संरक्षण समाप्त कर दिया जाए? जो कोई भी गुण्डा–बदमाश, कीटाणु–विषाणु, आपदा–विपदा आपका शोषण करे, आपका नाश करे उसे करने दिया जाए? जो आपको सताये उसे सताने दिया जाए? जो आप को लूटे उसे लूटने दिया जाए? क्या आप राजी हैं? आप कहते हैं– 'नहीं'। जब आप लुटने–पिटने के लिए राजी नहीं हैं, तो इसका मतलब यह है कि संसार में कोई भी मनुष्य (पागलों, मूर्खों, धूर्तों, भैंसों को छोड़कर) शेष सभी न्याय चाहते हैं। भैंस जैसों को छोड़ दें, क्योंकि जिनके लिये काला अक्षर भैंस बराबर हो अथवा जिनकी बुद्धि में ही कालिख पुत गयी हो, उनमें न्याय और अन्याय, नीति और अनीति, संविधान और विषंविधान, उचित और अनुचित, सही और गलत की समझ नहीं होती। केवल उन नासमझों को छोड़ दिया जाए। ऐसे लोग जिनमें जंगली पशुओं जैसी स्थिति हो, उनको छोड़कर शेष सभी मनुष्य अपने लिये न्याय चाहते हैं। फिर हजारों सालों से न्याय क्यों नहीं हुआ? चाहते सब थे कि न्याय हो, लेकिन बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे? यदि एक बार इसकी व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जाए और पता ही न रह जाए कि न्याय कैसे करें? क्या करें? तब दिक्कत हो जाती है। न्याय की व्यवस्था क्या है? कैसे, क्या प्रतिष्ठित करना है? न्यायशील अधिकार क्या हैं? यह भी नहीं पता हो तो न्याय कैसे होगा? मुश्किल पड़ेगी! इसीलिए न्यायशील व्यवस्था का प्रतिपादन जरूरी था। अतः हमने विगत दश वर्षों में एंकातिक रहते हुए उसका प्रतिपादन कर दिया है। अब इस न्यायशीलता के प्रतिपादन पर सर्वेक्षण चल रहा है कि आप इससे सहमत हैं या नहीं? क्या आप इन न्यायशील जनाधिकारों से सहमत हैं? तो जनमत सर्वेक्षण में जनता से जो लिखित जवाब आया है, वह मैं आपके सामने रखना चाहूँगा। अपने देश में न्यायधर्मसभा द्वारा सर्वेक्षणकार्य निरन्तर जारी है और जनता का जवाब यह सामने रखा है। हमारे पास देखिए, यह लिस्ट है। यह लिस्ट सर्वेक्षण कार्य के दौरान बढ़ती जा रही है। पूरे देश में बड़े–बड़े पदाधिकारी, एस.पी, कलेक्टर, डी.एम., तहसीलदार, सांसद, विधायक, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, व्यवसायी, उद्योगपति, व्यापारी, नेता, समाजसेवक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सन्त, महात्मा, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, बहाई सबके नाम आपको मिलेंगे इस लिस्ट में। जो हमारे पास अब तक अपना मत भेज चुके हैं। भारतसहित सम्पूर्ण विश्व को जो न्यायव्यवस्था हम दे रहे हैं, उससे पूरी तरह सहमत हैं ये लोग और सभीप्रकार का सहयोग भी करने तैयार हैं। कुछ लोग तो अपनी जिन्दगी तक दाँव पर लगाने को तैयार हैं कि यदि इसके लिए आप कुछ करते हैं, तो हम पूरी तरह से आपके साथ हैं। इस न्यायस्थापना अभियान में बाहरी या वैचारिक समर्थन तो सब कर ही रहे हैं। इस न्यायकार्य के लिए आर्थिकसहायता, कार्यसेवा, जीवनदान तक करने को तैयार हैं लोग हमारे साथ।

इस जनमत सर्वेक्षण में चारों न्यायशील जनाधिकारों की स्थापना हेतु सहमत होने वालों का प्रतिशत क्या है? आपको जानकर आश्चर्य होगा– लगभग 99%। वास्तव में 99%

*से भी अधिक लोग इस न्यायस्थापना अभियान के पक्ष में हैं। जो 1% से भी कम लोग पशुओं या भैंसों या भेड़ियों की स्थिति में हैं, उन्हें छोड़कर बाकी लोग न्याय से पूर्णतः सहमत हैं। इस न्यायशील व्यवस्था का सर्वेक्षण प्रपत्र पूर्णतः प्रेसक्राइब्ड है। इसका फारमैट है। इस सर्वेक्षण में जनता के साथ-साथ सांसदों का, विधायकों का भी सर्वेक्षण कराया जा रहा है ताकि न्यायस्थापना के पश्चात् कोई यह न कह सके कि उसके साथ जबरदस्ती की गई है अथवा यह व्यवस्था जबरन थोपी गई है। जो सहमत हैं, हम लोग केवल उनके लिए ही न्यायशील व्यवस्था स्थापित कर रहे हैं। जो इस न्यायशीलता से सहमत सिद्ध होंगे, हम उनके लिए सन् 2011 से 2054 के बीच एक न्यायशील सार्वभौमिक राष्ट्र बनाने जा रहे हैं। जिसमें विश्व के सभी लगभग 350 देशों के न्यायशील नागरिकों का समावेश होगा। उनका न्यायशील संविधान होगा, न्यायशील व्यवस्था होगी, न्यायशील नियुक्तियाँ होंगी, न्यायपूर्वक शिक्षा प्रदान की जाएगी, न्यायपूर्वक रोजगारों की सुलभता होगी, उसमें न्यायपूर्वक संसाधनों का वितरण होगा, न्यायशीलतापूर्वक ही सुखसुविधाओं का वितरण होगा, न्यायशीलतापूर्वक ही सबको संरक्षण प्राप्त होगा। न्यायशीलतापूर्वक अर्थात् समान और उचित रूप से। शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण आदि इन्हीं चारों कार्यों के लिए ही उस न्यायशील राष्ट्र में समुचित 'कर' एकत्रित किया जायेगा। इन्हीं चारों सार्वजनिक कार्यों में से प्रत्येक पर 25% बजट निर्धारण किया जायेगा समानुपातिक रुप से। और यही चारों सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करना राष्ट्रीय सरकार का कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व होगा। यही सब जनमतसंग्रहप्रपत्र में लिखकर सर्वेक्षण कराया जा रहा है। एक ही प्रपत्र में संक्षिप्त रूप से सब कुछ लिख दिया गया है। आप चाहें तो प्रपत्र यहाँ उपलब्ध है। जो मित्र लेना चाहते हैं वे ले सकते हैं। जिन्होंने यह प्रपत्र अभी तक न भरा हो, न देखा हो वे देखने और भरने के लिये यह जनमत प्रपत्र ले सकते हैं। हम जो यह न्याय स्थापना का अभियान चला रहे हैं, उससे आपके सांसद भी सहमत हो रहे हैं। ये कहते हैं कि हम भी सहमत हैं। कई लोगों ने तो हमको फोन भी किया और कहा- 'हाँ जी! हम भी सहमत हैं'। पिछले वर्ष में एक महीना पूरी जुलाई में 'साधना चैनल' ने हमारा कार्यक्रम दिखाया। हम साधना चैनल को धन्यवाद देते हैं। सुबह आठ बजे यह कार्यक्रम आता था। इस कार्यक्रम को देखकर लगभग 13 राज्यों से हमारे पास फोन आए। उन सभी ने कहा-**'यह तो आप बहुत अच्छा कह और कर रहे हैं। यह तो होना ही चाहिये था। अभी तक नहीं हुआ, बड़े ही शर्म की बात है।'** लोग सहमत हैं। पत्रकार, संपादक सभी प्रकार के आदमियों की सहमति का हमारे पास एक रिकार्ड रखा हुआ है। सबका नाम, पता, सील, ठप्पा, मोहर सहित सहमतिपत्र उनके स्वयं के करकमलों द्वारा लिखित एवं हस्ताक्षरित रूप में हमारे पास मौजूद है। हमारे पास पूरा रिकार्ड मेनटेन किया जा रहा है। प्रथमतः भारत में पाँच साल तक सर्वेक्षण कार्य चलेगा, जो 1 जनवरी 2006 से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर 2010 तक चलेगा पूरे भारत में। इसके बाद फिर विदेशों में भी जनमत सर्वेक्षण किया जाएगा। न्याय की प्यास सिर्फ भारत को ही है ऐसा नहीं है। बाहर के लोगों को भी वही मिलना चाहिये जो हमें मिलना चाहिए। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि एक भी आदमी भूखा क्यों रहे, एक भी आदमी परेशान क्यों रहे, एक भी आदमी शोषित क्यों रहे। एक शायर ने कहा है-**'जहाँ इक आदमी रातों को भूखे पेट सोता है। वहाँ बस्ती की बस्ती से खुदा नाराज होता है॥'** खुदा इंसाफपसंद है, परमेश्वर न्यायप्रिय है। तुम खुदा को अन्याय से प्रसन्न कर लोगे क्या? यह आपको भरोसा है? यह किसी भी भक्त से पूछो कि अन्यायपूर्वक जिन्दगी जीने वाले ऐ भक्त! क्या तेरे भगवान तुझसे प्रसन्न हो जायेंगे? कभी*

नहीं होंगे! क्या ये सब साधू–सन्यासी, पादरी–पुरोहित, लामा–इमाम, भक्त–पुजारी, योगी–वैरागी मिलकर अपने देश के भगवान को प्रसन्न कर पायेंगे या नहीं कर पायेंगे? भीख माँग रहे हैं ये। खुद ही हालत खराब है इनकी। लगभग ४० लाख साधु भारत में घूम रहा है। भगवान प्रसन्न नहीं हुआ आज तक इनसे। होता भी कैसे? ये भगवान के भक्त अन्याय कर रहे हैं और अन्याय देख रहे हैं। अन्याय देखते हुए चुप हैं और फिर भी कहते हैं कि हम साधु हैं। साधु का मतलब है कि ***'परमारथ के कारने साधू धरे शरीर।'*** *अरे साधुओं! तुमने तो अपने लिए भी शरीर नहीं धरा। परमार्थ की तो बात ही चली गई। अब देखें कि नीति वचन क्या कहता है–* ***'परोपकाराय सतां विभूतयः।'*** *अर्थात् साधुओं की जीवनसम्पदा तो परोपकार एवं लोककल्याण के लिए ही होती है। शास्त्रों की सारी बातें क्या कह रही हैं? संत तो कुछ और ही होता है और ये हमारे साधु–महात्मा क्या कर रहे हैं? इनको देखो कि ये अन्याय के मुद्दे पर कितने चुप हैं? ये अन्याय सहते हैं, अन्याय करते हैं, अन्याय जीते हैं, अन्याय में रहते हैं, अन्याय देखते हैं।*

एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को काटता है और दूसरा कुत्ता पहले कुत्ते को काटता है, दोनों कुत्ते आपस में लड़ रहे हैं। देखो– पड़ोस में, घरों में, आपस में लड़ाई शुरू हो जाती है। विचित्र आवाजें आने लगती हैं। दूसरों की जिन्दगी को नर्क बनाने का ठेका ले रखा है इन्होंने। मैंने कहा– कितनी बड़ी बात है? ये लिस्ट क्या कह रही है? आज जनमत सर्वेक्षण लिस्ट यह कह रही है कि 99% से भी अधिक जनता इस न्यायस्थापना अभियान से सहमत सिद्ध हो रही है जिसका प्रतिवेदन हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। यह भारत में न्यायस्थापना संबधी प्रस्ताव है। आप सभी देख रहे हैं। यह सरकारों के नाम भी एक साल पहले जारी किया गया था कि पाँच साल के भीतर आप जनता को न्यायशील जनाधिकार दे दीजिये अन्यथा हम यह साबित कर देंगे कि लोकतंत्र में लोकमत आपके पक्ष में नहीं है। लोकमत 99% से ज्यादा हमारे पक्ष में है। सभी नेता यदि एक साथ मिल करके चुनाव लड़ें तो भी शायद हमको हरा नहीं पायेंगे। सब नेता अपनी पूरी लोकप्रियता के साथ भी यदि इकट्ठे हो जायें तो भी हमसे हार जायेंगे, लेकिन ऐसे ही खुले मतदान में। गुप्त मतदान में तो ये लीलाधारी लोग ही सफल होंगे, क्योंकि गुप्त रूप से ये सब हेराफेरी करना जानते हैं। कितनी विचित्र बात है यह। यदि पुराने नेताओं को भी ये इकट्ठा कर लें, जैसे– इंदिरा जी, नेहरू जी, लालबहादुरशास्त्री जी आदि कोई भी इनके साथ इकट्ठे हो जायें तो भी ये लोग हार जायेंगे। क्योंकि हम तो खुला मतदान करवा रहे हैं, हमें गुप्त मतदान पर भरोसा नहीं रहा। हमें ऐसा डाऊट है कि गुप्त मतदान में कुछ फर्जी वोटिंग करवाते हैं ये महान नेतागण। फर्जी अर्थात् जो मत इन्हें नहीं भी मिलने हैं, उन्हें भी ये अपने पक्ष में डलवा देते हैं, मतपेटी के भीतर। गुप्त मतदान में पता ही नहीं चलता कि आप क्या कर रहे हैं?

न्यायस्थापना अभियान की परिचयपुस्तिका उपलब्ध है हमारे पास। आज स्थिति ये हो गई है कि 99% से भी ज्यादा लोग हमारे इस न्यायस्थापना अभियान से सहमत हो रहे हैं। आप पूरे क्षेत्र का सर्वेक्षण करा लीजिए या तो पूरे देश का सर्वेक्षण करा लीजिए। आप चाहें तो दूसरे क्षेत्र में भी सर्वेक्षण कराके देखें। हमने सर्वेक्षण करवाया, बहुत सारे क्षेत्रों में करवाया। सभी जगह आलम वही है, कोई फर्क नहीं पड़ा। न्याय के मुद्दे पर सबका एक ही मत है। लोग हर प्रकार का सहयोग करने को तैयार हैं। सर्वेक्षण के रिजल्ट में, क्षेत्र के कारण कोई फर्क नहीं पड़ा, जाति के कारण कोई फर्क नहीं पड़ा, धर्म के कारण

कोई फर्क नहीं पड़ा। मुसलमानों के सारे इमाम हमसे सहमत हो रहे हैं। हरिद्वार में हिन्दुओं के प्रायः सभी सन्तों–महामण्डलेश्वरों का सर्वेक्षण हो चुका है। सबने पीठ भी ठोकी सर्वेक्षकों की और कहा कि बेटे! बहुत अच्छा काम कर रहे हो। हम सभी आपके साथ हैं। जैसा सहयोग चाहिए वैसा करने को तैयार हैं। किसी महामण्डलेश्वर ने मना नहीं किया और कहा कि ये तो बहुत ही पहले हो जाना चाहिए था। देर क्यों हो गई?

अब आप देखें कि हमारे पास सबका रिकार्ड है। यह जनमत सर्वेक्षण हो रहा है। आपके घर–घर में इसकी लिस्ट पहुँचा दी जायेगी कि कौन लोग न्याय से सहमत हैं और कौन लोग कमीने हैं जो न्याय से असहमत हैं अथवा मतदान करने में आनाकानी और टालमटोल कर रहे हैं। इनको कमीना क्यों कहा हमने? क्योंकि ये सभी जानवर हैं। दूसरों के लिए नहीं तो कम से कम अपने लिए तो न्याय चाहो, शिक्षा चाहो, रोजगार चाहो, सुविधा चाहो, संरक्षण चाहो। लेकिन यह क्या कि तुम दूसरों को तो मार ही रहे हो और अपने को भी मारना चाहते हो। भूखे मर जाना चाहते हो या दूसरे को भूखे मार देना चाहते हो। ये तो कमीनापन ही है। कमीनापन नहीं तो क्या कहोगे आप इसे? ये चारों जनाधिकार न दिए जाएँ जनता को, तो बताओ इस देश की जनता क्या करेगी? जो लोग सहमत नहीं हैं, उनका भी एक राष्ट्र बनेगा– धरती पर ही अलग से। इस पृथ्वी के लगभग 1% लोग, जो असहमत सिद्ध होंगे, उनके लिये भूगोल की 1% जमीन छोड़ दी जायेगी। इसप्रकार हम धरती को दो भागों में बाँट रहे हैं– मंगलराज और जंगलराज। लेकिन एक सज्जन आये और कहने लगे कि बात तो आपकी एकदम ठीक है, पर इससे देश की एकता और अखण्डता का क्या होगा? नेताओं को एकता और अखण्डता की बहुत फिक्र है। बड़े प्रेमी हैं बेचारे! एकता, सद्भाव, भाईचारा, बन्धुत्व इन्हें बहुत प्रिय है। केवल न्याय से एलर्जी है इनको! उन्होंने कहा कि एकता और अखण्डता का क्या होगा? हमने कहा– ***'एक बात बताइये कि हम 350 राष्ट्रों को दो राष्ट्र में समायोजित कर रहे हैं। जबकि आपने इतना अधिक खण्डित कर रखा है– लगभग 350 राष्ट्र। हम तो सिर्फ इतना कह रहे हैं कि न्याय से सहमत होने वाली 99% जनता एक तरफ रहे, और जो 1% लोग न्याय से असहमत हो रहे हैं, वे लोग दूसरी तरफ रहें। तो इसमें एकता और अखण्डता कहाँ से गड़बड़ हो रही है? यदि 350 राष्ट्रों को मिलाकर दो राष्ट्रों में समायोजित कर दिया जाए, तो इसमें कौन सी बुरी बात है? उनमें दो राष्ट्र भी कहाँ बचेंगे? समाज तो एक ही रहेगा, राष्ट्र तो एक ही रहेगा, क्योंकि दूसरा तो जंगल ही सिद्ध होगा। वह तो जंगल के साथ ही संयुक्त रहेगा। अन्याय पशुता है। पशुओं की राष्ट्रीयता तो जंगल ही है। एक ओर समाज और दूसरी ओर जंगल! माने कि एक न्यायशील स्थान और दूसरा अन्यायशील स्थान। अतः धरती पर मानवीय राष्ट्र तो एक ही रहेगा, दूसरा तो जंगल ही है।'***

जब 99% लोग इस न्यायशीलता से सहमत हैं। हमारी यह सर्वेक्षण लिस्ट बता रही है। जनमत प्रपत्र पर मतदाताओं के हस्ताक्षर के साथ सर्वेक्षकों के रूप में गवाह के हस्ताक्षर भी करा लिये गए हैं। मतदाताओं के निजी हस्तलेख में जनमत प्रपत्र भरवाए जाते हैं। चाहे वह मजिस्ट्रेट हो, चाहे वह एस.पी. हो, चाहे वह कलेक्टर हो, चाहे वह सांसद हो, चाहे वह अधिवक्ता हो। मध्यप्रदेश के किसी अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष का सर्वेक्षण होकर आया है अभी जबलपुर से। सर्वेक्षण के समय उन्होंने एक सांसद को फटकारा भी, जब वे सांसद महोदय

*सर्वेक्षण प्रपत्र को जेब में रखकर भागने की कोशिश कर रहे थे। क्योंकि नेता किसी तरह भाग जाना चाहता है, सच्चाई से, न्याय से वह दूर हो जाना चाहता है। जनकल्याण के मुद्दे से हटकर स्वकल्याण में रस है उसे। किन्तु अधिवक्ता महोदय ने उस सांसद से कहा कि कहाँ जा रहे हो? यह जनमत प्रपत्र अंदर जेब में क्यों रख रहे हो? उसमें जो लिखा है, अभी देख लो और पढ़ करके बताओ कि इन बातों से आप सहमत हो या नहीं? लेकिन आज का नेता कितना धूर्त है? इस बात का अंदाजा लगाओ। वह जनता के मंच पर ये भी कहता है खुलकर कि हम जनता को शिक्षा देंगे, जनता को रोजगार देंगे, जनता को सुविधा देंगे, जनता को संरक्षण देगे। किन्तु ऐसा करने के अवसर पर वह जनाधिकारों का जनमत प्रपत्र लेकर भाग रहा है कि कहीं पार्टी हाईकमान ये न पूछ ले कि तुमने ऐसा लिखकर क्यों दिया? बोलकर मुकर सकते हैं, लेकिन लिखकर नहीं मुकर सकते हैं। वे कहते हैं-**'अगर ये चारों जनाधिकार जनता को न्यायपूर्वक दे दिया, तो जनता पर राज कैसे करेंगे? जनता को लूटेंगे कैसे? जनता के अधिकारों को लूटकर ही तो ठाठ-बाट से रहते हैं। कर्म कुछ नहीं करते, फल बहुत प्राप्त करते हैं।'** कैसी विचित्र बात है? यदि प्रधानमन्त्री ने यह बात लिखकर दे दी, तो फिर प्रधानमन्त्री उस पार्टी का अध्यक्ष नहीं बन सकेगा। क्यों नहीं बन सकेगा, बताओ? न्यायशील व्यवस्था में योग्यतापूर्वक पदनियुक्ति होती है। भाषा, गणित, संज्ञान, दर्शन आदि चारों विषयों के प्रतियोगी परीक्षणों द्वारा जो योग्य सिद्ध होता है वही नियुक्त होगा। यदि आप इस शैक्षणिक योग्यता को भी लो, तो जो 25% तक नम्बर लायेंगे वे ही कृषिकर्म करेंगे, उससे अधिक 50% तक नम्बर लाने वाले वाणिज्यकर्म करेगे, उससे अधिक 75% तक नम्बर लाने वाले प्रशासनिककर्म करेंगे, उससे अधिक 100% तब नम्बर लाने वाले नेतृत्वकर्म करेंगे। ये हुई शैक्षणिक योग्यता के आधार पर पदनियुक्ति। फिर ऐसे ही चारित्रिक गुणवत्ता का भी निश्चय कर लो। चरित्र के चार स्तर हैं- अल्पसत्, अर्धसत्, अधिसत् और पूर्णसत्। जो सादगी भरा, पूर्ण सात्त्विक चरित्र वाला हो, उसे नेतृत्वकर्म में लगा दो। गाँधी जैसे लोगों को बना लो प्रधानमन्त्री। गाँधी जैसे सात्त्विक जनों को ले आओ नेतृत्व के लिए। गाँधी, बिनोवा, विवेकानन्द, स्वामी अग्निवेश, डा.ए.पी.जे.अब्दुलकलाम, अमर्त्यसेन, रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे बहुत से लोग होंगे जिनके नेत्र समदर्शी हो। उनको नेतृत्व पद हेतु चुन करके ले आओ। पचासों और सैकड़ों आदमियों को क्यों बैठा रखे हो? पाँच ही आदमी पर्याप्त हैं, अगर लोकतंत्र आ जाए। लोकपंचायतप्रणाली ही भारत का इतिहास है। पंचनिर्णय ही न्याय और नीति का निर्धारक है। पाँच ही आदमी पंचायत में पर्याप्त हैं। लोकनेतृत्व के लिए 500 सांसदों की इतनी भीड़ की क्या जरूरत है? वहाँ अपने-अपने क्षेत्र के लिए फाइट करने की जरूरत खत्म हो गई, क्योंकि न्यायपूर्वक ही हर क्षेत्र को शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण आदि सब कुछ मिलेगा। अतः क्षेत्रवादी राजनीति करने की कोई जरूरत ही नहीं रह गई। आप देखें कि जरूरत किस बात की है? आप न्यायपूर्वक अपनी व्यवस्था को प्रतिष्ठित करो। इससे आप न डरो, न घबराओ। आप खुलकर इस पर बात करो। किसी के खिलाफ आन्दोलन करने की क्या आवश्यकता है? या फिर किसी के खिलाफ क्रान्ति मचाने की क्या जरूरत है? बन्दूक उठाने की क्या जरूरत है? बस सीधे-सीधे पूछ लो। यदि लोग न्यायशीलता से सहमत हैं, तो करो। यदि नहीं सहमत हैं, तो मत करो। अब जनता चूँकि सहमत हो रही है। लगभग 99% से भी ज्यादा लोग सहमत हो रहे हैं। तो हम इस न्यायस्थापना के कार्य को अंजाम दे रहे हैं। इसप्रकार का नियम, इसप्रकार का विधान, इसप्रकार की सरकार, इसप्रकार की करप्रणाली, इसप्रकार की*

कार्यप्रणाली, इसप्रकार के अधिकारों का विभाजन और निर्धारण जो कि न्यायशील है, यह सब न्यायधर्मसभा द्वारा प्रेसक्राइब्ड है, उसकी पुस्तकों में पढ़ लो। पिछले लगभग 10 वर्षों से एक जगह बैठकर हमने सारी चीजें प्रतिपादित की हैं। कुछ ज्यादा सोचने और विचारने की जरूरत नहीं है। हमने इतना कुछ कर दिया है और इतने हाई लेवल के (उच्चस्तरीय) मस्तिष्क से कर दिया है कि अब ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी आपको। सारी तार्किक बातें, जितनी हम कर रहे हैं अगर दुनिया के सारे वकीलों को बैठाकर उनसे बात कराओ तो इसके विपरीत कोई तर्क न बनेगा उनसे। इस न्यायशीलता को स्वीकार करने के अलावा कोई रास्ता न बचेगा उनके पास। जो बातें हम कह रहे हैं, वे सारी तार्किक बातें स्पष्ट और सर्वस्वीकार्य हैं, जिनका कोई विरोध नहीं है। यह बात केवल जबानी दादरा नहीं है। हमने सार्वजनिक तल पर सर्वेक्षण कराके यह बात सिद्ध कर दी है। अब ये सारी बातें प्रमाणित हो चुकी हैं। यह जनमत सर्वेक्षण लिस्ट अब घर-घर पहुँचा दी जायेगी। कौन-कौन लोग इन न्यायपूर्ण जनाधिकारों से सहमत हैं और कौन असहमत हैं? अथवा कौन आनाकानी और टालमटोल करने वाले हैं? इन्हें भी असहमत ही माना जाएगा। अथवा न्याय के समय ये जिस तरफ जाना चाहेंगे चले जायेंगे। इन नपुंसको के लिए छूट है। वे जिधर चाहें उधार जा सकेंगे। असहमत होने वालों की संख्या कुल 1% से भी कम सिद्ध हो रही है, जिनमें मूर्ख, धूर्त, पागल, भयभीत एवं दुष्ट लोग शामिल होते हैं। राजनेता, सांसद, विधायक, मन्त्री, प्रशासक, अधिकारी, कर्मचारी, इमाम, पुरोहित, पादरी, लामा, साधू, महात्मा, सिद्ध, योगी, सन्त, महन्त, शिक्षित, अशिक्षित, चोर, डाकू, आतंकवादी, क्रान्तिकारी, समाजवादी, साम्यवादी, पूँजीवादी, अध्यात्मवादी, धर्मवादी, क्षेत्रवादी, लिंगवादी, रंगवादी, जातिवादी, भाषावादी, राष्ट्रवादी इत्यादि जो कोई भी 1% लोग इस बात से असहमत हैं, हम उनके लिए धरती की 1% भूमि खाली कर देंगे। जो नेता, जो प्रशासक, जो प्रवचनकर्ता कुल मिलाकर जो 1% संख्या हमारे पास आ रही है, इनको इनके हाल पर छोड़ देंगे। इनसे कहेंगे कि हम ट्रक मँगवा देते हैं। जो कुछ तुमने सब लूट रखा है, सब उस ट्रक में लोड कर लो और ले जाओ। हम तुम्हारा कुछ नहीं छीनेंगे। न तो हम माओवादी हैं, न तो मार्क्सवाद में हमें कोई रस है, लेनिनवाद में भी हमें कोई रस नहीं है। हमें उन सब बातों में कोई रस नहीं है, जिनमें जनता के ये चारों न्यायशील अधिकार प्रदान नहीं किए जाते। हमारे लिए तो सब सम है। सबके साथ न्याय होना चाहिए। बस हमारी तो इतनी सी ही बात है। सबको न्यायशील अधिकार मिलने चाहिए। इसमें माओवाद और मार्क्सवाद का क्या मतलब है? लालकिले पर लालनिशान लगा देने से हिन्दुस्तान का कल्याण नहीं होगा। हिन्दुस्तान में लाल निशान कहाँ कोई माँग रहा है? लगभग 99% से भी अधिक हिन्दुस्तान तो यह माँग रहा है- कि ऐसा न्याय करो। चारों जनाधिकार न्यायपूर्वक प्रदान करो। सार्वजनिक धनरूपी राष्ट्रकोष का नियोजन इन्हीं चारों जनाधिकारों को प्रदान करने वाली सार्वजनिक सेवाओं पर समानुपातिक रूप से परिव्ययित करो। लाल या भगवा निशान कहाँ कोई माँग रहा है? सर्वेक्षण कराके देख लो- कौन क्या माँग रहा है? यदि हम आपसे पूछें कि आपको न्यायपूर्वक शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा और संरक्षण प्राप्ति का जनाधिकार चाहिए अथवा लाल, नीला, भगवा निशान; तो आप क्या कहेंगे? क्या अशिक्षित, बेरोजगार, असुविधाग्रस्त, असुरक्षित जीवन किसी भी हिन्दुस्तानी को चाहिए? ऐसी दुर्दशा में वे लाल, नीला या भगवा निशान को लेकर क्या चाटेंगे? हम जो करवा रहे हैं, इस बात से लगभग सभी लोग सहमत हैं, कुछ एक विक्षिप्तों को छोड़कर। अतः ऐसा होगा। सारे राजनेता भी

इस न्याय के विपरीत अपनी बात का सर्वेक्षण कराके देख लें। अगर उनकी अपनी अन्यायकारी बात पर बहुमत सिद्ध हो जाए, तो वे अपनी बात लागू करें, अन्यथा न्यायशील जनाधिकार की बात को स्वीकार करे। यही लोकतन्त्र है। किन्तु यदि वे शिक्षा, रोजगार, सुविधा, संरक्षण आदि चारों जनाधिकार न्यायशीलतापूर्वक जनता को प्रदान करने के विपरीत अपनी किसी बात पर अपने पत्नी–बच्चों से ही पूछ लें, तो यह संभव है कि शायद उनके पत्नी–बच्चे ही उनसे सहमत न हों। क्योंकि यदि वे उनकी बात से सहमत होंगे, तो उन्हें भी शिक्षा, रोजगार, सविधा, संरक्षण आदि का जनाधिकार प्राप्त नहीं हो सकेगा। वे भी अनपढ़ बेरोजगार, असुविधाग्रस्त एवं असुरक्षित हो जाएँगे। अतः उनके भी पत्नी–बच्चे उन अन्यायकारियों की रीति–नीति से सहमत नहीं होंगे। कैसे? जैसे आपने डाकू रत्नाकर की कहानी सुनी है, जो महर्षि वाल्मीकि हो गए थे। एक बार उन्हें सात ऋषि मिले। उन्होंने कहा कि 'हे रत्नाकर! जो कुछ आप कर रहे हैं, एक बार घर जाकर अपने पत्नी–बच्चों से तो पूछो कि क्या वे तुम्हारे इस डकैती के काम से सहमत हैं? क्या वे भी तुम्हारे इस पाप में भागीदार बनने को तैयार हैं?' ऋषियों ने उस डाकू से ही उसके घर का जनमत सर्वेक्षण कराया। बोले कि जाओ अपने घर जा करके पूछो। उसने कहा– 'वाह! ऐसे तो तुम भाग जाओगे।' उन्होंने कहा कि तुम हमें बाँध करके चले जाओ। न तलवार चली और न ही हण्टर भँजा। ऋषि बोले कि हमें तुम बाँध करके चले जाओ, ताकि हम भाग न सकें। तुम बाँध करके जाओ और तुम्हीं आ करके खोलना। उसने ऋषियों को एक पेड़ में रस्सी से बाँध दिया और घर में जा करके बीवी–बच्चों से पूछा– क्या तुम मेरे अनैतिक कार्यों में पाप के भागीदार हो? जवाब क्या है? सब जानते हैं। उन्होंने कहा कि न जी, हम तो इस बात से सहमत नहीं हैं। हम तो इस अन्यायकारी पाप में भागीदार नहीं हैं। अब क्या हुआ रत्नाकर को? साँप सूँघ गया उसे, वह एकदम सहम गया, काटो तो खून नहीं। वह भागा वहाँ से, लौट करके आया और बोला कि आप तो बिलकुल ही ठीक कह रहे थे। उनकी रस्सी खोली और बोला– 'हाँ, आप तो ठीक ही कह रहे थे कि मेरे पत्नी–बच्चे भी मुझसे सहमत नहीं होंगे।' इस घटना के बाद वह डाकू रत्नाकर महर्षि वाल्मीकि हो गया। आज के राजनीतिक लोग भी जनमत सर्वेक्षण के पश्चात् डाकू रत्नाकर से महर्षि वाल्मीकि हो जाएँगे। ध्यान रहे, अगर आप अन्यायी प्रवृत्ति के हैं तो आप कहीं न कहीं अपने बीवी–बच्चों के साथ भी अन्याय कर रहे होंगे। क्योंकि अन्यायी केवल अन्यायी होता है। छिपकली अपने बच्चे को खा जाती है। साँप अपने बच्चों को निगल जाता है। सिंह और बिडाल अपने ही बच्चे को काट डालते हैं। अब यह सब कुछ उल्टा कैसे हो रहा है? डायनासोर ही डायनासोर को खा जाता है। उनका हश्र क्या हुआ? वे समूल विनाश को प्राप्त हो गए सारे डायनासोर। न्यायपूर्वक जियो पशुतापूर्वक नहीं। समाजपूर्वक जियो, जंगलपूर्वक नहीं। कितने ही राजाओं और राजनेताओं के पूरे परिवार का नाश हो रहा है। नेपाल के महाराजा का परिवार, सद्दाम हुसैन का परिवार, प्रमोद महाजन का परिवार, नेहरू का परिवार आदि अनेक राजपरिवार इसी जंगलराज के कारण विनष्ट होते देखे गए हैं। राजभोग करने वाले बुरे लोगों के साथ कई अच्छे लोग भी पिस रहे हैं।

जंगलराज से त्रस्त होकर अब 99% जनता हमसे सहमत सिद्ध हो रही है, तो हमें क्या करना चाहिए? कहने का मतलब ये है कि 99% आदमी अगर हमसे सहमत है, तो यदि हम यह न्यायशील जनाधिकारों की स्थापना का कार्य न करें तो बहुत ही गलत बात

होगी। लेकिन अभी हम चार साल तक भारत में जनमत सर्वेक्षण का कार्य और करेंगे। क्योंकि अभी जनमत सर्वेक्षण दूसरे क्षेत्रों में बकाया है। अभी पाँच साल में उनका भी सर्वेक्षण कराके हम न्याय के पक्ष में यह लोकमत साबित कर दें, ताकि कोई यह न कहे कि ये तो बस उत्तरांचल में ऐसा है, बाकी जगहों पर तो ऐसा नहीं है। दक्षिण वालों के लिए जहाँ लोग हिन्दी कम समझते हैं, वहाँ के लिए अँग्रेजी में हम इस जनमत प्रपत्र का ट्रांसलेशन करा चुके हैं। क्योंकि जहाँ पर लोग हिन्दी नहीं समझते हैं, वहाँ पर अँग्रेजी में ही सर्वेक्षण चल रहा है। जो हिन्दी नहीं समझते हैं, उनके लिए अँग्रेजी का फारमैट तैयार है। हमने तो कुछ विदेशियों तक का भी सर्वेक्षण करवा रखा है। भारत की जनता तो सहमत है ही, कुछ विदेशियों तक के सर्वेक्षण हमारे पास हैं। वे भी इस न्यायशीलता से सहमत हैं। इसका मतलब ये है कि बाहर का आदमी भी न्याय चाहता है। सर्वेक्षण की स्थिति तो कुछ ऐसा ही कह रही है। यह तो खुला मतदान है कि ये-ये लोग न्याय से सहमत हैं। यह सर्वेक्षण उच्च पदाधिकारियों और सारी सेना से करा लेंगे, सभी पुलिसवालों से करा लेंगे, ताकि जब दिल्ली के लालकिले से यह बात कही जाए कि आज से न्यायशील व्यवस्था लागू होने जा रही है, तो वहाँ पर कोई विरोध न हो। इसीलिए सबका पहले से ही सर्वेक्षण करा लेंगे कि आप सहमत हैं। जनरल जितने हैं, सब सेनाओं के, उनसे पहले ही सर्वेक्षण करा लेंगे। अब तो मतदान कर चुके लोगों की लिस्ट देखकर दुष्टों के पसीने छूट जाते हैं। दुष्प्रवृत्ति के कारण जो इस खुले मतदान में आनाकानी करने वाला है, वह भी घबराने लगता है। लेकिन हम कहते हैं- अब आप घबराइये नहीं। हर एक चोर का इलाज है हमारे पास। हम अगर इतने सक्षम न होते, तो इतना बड़ा काम न करते। सबका समाधान है हमारे पास। हर एक उपद्रवी का समाधान हमारे पास मौजूद है। हर गुण्डे, हर बदमाश, हर चालाक, हर धूर्त का जवाब है हमारे पास। हम घर की मुर्गी नहीं जो कोई हमें दाल बराबर समझे। हमेशा ये ध्यान रखना कि सत्य ही जीतता है। ***'सत्यमेव जयते'*** *हमारे भारतराष्ट्र का मूलमन्त्र है। सत्य के अनुकूल नियम-नीति ही न्याय है। सत्य कहता है- न्याय ही राष्ट्रीय धर्म है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी, बहाई सबका राष्ट्रीय धर्म न्याय है। जहाँ पर न्यायरूपी धर्म होगा, वहीं पर जीत होगी-* ***'यतो धर्मस्ततो जयः'****। सत्य के अनुकूल व्यवस्था ही धर्म है-* ***'यो वै स धर्मः सत्यं वै तत्'****। न्याय को ही धर्म कहते हैं-* ***'आरम्भो न्याययुक्तो यः स धर्मः इति स्मृतः'****। अर्थात् 'जो कार्य न्यायपूर्वक होता है, वही धर्म कहलाता है।' यह महाभारत का वचन है। अब देखें कि आर.एस.एस. की पुस्तकों में भी ऐसा ही श्लोक लिखा है-* ***'न्यायमूलं सुराज्यं स्यात्'*** *अर्थात् 'न्याय ही सुराज्य का मूल है'। एक दिन आर.एस.एस. के एक कार्यकर्ता से हमने कहा कि तुम राष्ट्र में ये न्याय की बात लिख रहे हो और इसके लिए करते कुछ भी नहीं हो। तुम्हें शर्म नहीं आती? तो उन्होंने कहा कि अब ऊपर के पदाधिकारी जैसा कर रहे हैं हम भी वैसा ही कर रहे हैं। हमने कहा कि फिर जाकर ऊपर वालों को समझाओ-* ***'न्यायमूलं सुराज्यं स्यात्।'*** *यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का श्लोक है। हम कहते हैं-* ***'यतो न्यायस्ततो राष्ट्रं न्यायनीति महाबलम्'*** *न्याय की बात से कन्नी काट रहे हैं लोग। आर.एस.एस. कहता है-* ***'संघमूलं महाबलम्'****। लेकिन हम कहते हैं-* ***'सत्यमूलं महाबलम्।'*** *सत्य में ही बल है। सत्य ही जीतता है। सत्य के बिना संघ भी बिखर जाएगा। विश्व के हिन्दुओं को भी सत्य के बिना संगठित नहीं किया जा सकता, क्योंकि समाधिकारिता के बिना सामाजिकता नहीं सधती।*

*अभी विश्वहिन्दूपरिषद् के प्रमुख श्री अशोक सिंघल जी से मुलाकात हुई सन्देश जी की। सन्देश जो न्यायधर्मसभा के संचालकमण्डल में है। कानपुर में सिंघल जी की सभा थी। सन्देश ने बातचीत की उनसे और उनको न्यायधर्मसभा का साहित्य भी दिया। उन्होंने कहा कि बात तो ठीक है लेकिन और ज्यादा जानकारी चाहूँगा इस विषय में। उन्होंने पूछा कि कहाँ से चल रहा है यह अभियान? संदेश जी ने कहा– हरिद्वार से। इस पर उन्होंने कहा कि कभी हरिद्वार आयेंगे तो मिलने के लिए जरूर आयेंगे। सन्देश जी विश्वहिन्दूपरिषद् के एक प्रान्तीय पदाधिकारी श्री अवधबिहारी मिश्र जी का सर्वेक्षण कराके ले आये और आर.एस.एस. के कानपुर प्रान्त के प्रान्तप्रचारक श्री नवल जी का भी सर्वेक्षण कराके ले आये। सर्वेक्षण सबका जारी है और पूरे देश में जारी है। सर्वेक्षण कराने वाले भी तैयार होते जा रहे हैं। कहते हैं कि हम करा देंगे। हर क्षेत्र का आदमी तैयार है। सर्वेक्षण कार्य करवा भी रहा है। सर्वेक्षण करवाकर यहाँ भिजवा भी रहा है। अब तक के सर्वेक्षण की पूरी लिस्ट जारी की जा रही है। आज यह एक साल की लिस्ट जारी करेंगे। जिन्हें चाहिए वे न्यायधर्मसभा के कार्यालय से यह लिस्ट प्राप्त कर सकते हैं। लोगों को शिक्षा, रोजगार, सुविधा और संरक्षण मिले और वह भी समान और उचित रूप से। सभी लोग इससे सहमत होते जा रहे हैं। लोग सहमत हैं। अब आप देख लें कि इस कार्य को करने में हमें कितनी देर लगेगी? बहुत से लोग डरते हैं, घबराते हैं और कहते हैं कि आप कैसे कर देंगे ये सब? खरगोश को लगता है कि बरगद का पेड़ हिलाना असंभव है। पर हाथी के लिए वह सब संभव है। हम सक्षम हैं। हम कर देंगे। अभी कर सकते हैं। तुम क्यों चिंता करते हो कि ये पेड़ नहीं हिलेगा। आप देखें कि इसमें कितना समय लगेगा। जब सारा लोकमत यही चाहता है तो कितनी देरी लगेगी इसे करने में? कुछ लोग सोचते हैं कि ये सारी भविष्यवाणियाँ हैं। एक सज्जन आये और बोले कि ऐसी बहुत सी भविष्यवाणियाँ उन्होंने भी सुनी हैं। लेकिन हम ऐसा कर रहे है तो जरूर ऐसा ही हो रहा होगा। भविष्यवाणियाँ आपकी एकदम ठीक हैं। हमने कहा कि वे भविष्यवाणियाँ इसीप्रकार की होंगी, तो उन्होंने कहा कि हाँ वे इसीप्रकार की हैं। उसने कहा कि मैंने भी पढ़ी थी, उन भविष्यवाणियों में लिखा है कि अब न्याय का युग होगा, न्याय का ही कानून होगा, न्यायशील अधिकारों का निर्धारण होगा। धरती पर कोई गरीबी और मूर्खता (अशिक्षा) का चिन्ह तक न बचेगा। सभी शिक्षित होंगे–**'नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना'।** जैसे रामराज्य में हो गया था। फिर इस न्यायशीलता के प्रतिष्ठित होते ही राष्ट्र में **'सब नर करहिं परस्पर प्रीती'** का वचन चरितार्थ होता है। न्याय होते ही सब आपस में प्रेम करने लगते हैं। अभी प्रेम क्यों नहीं पैदा होता? क्योंकि विषमता रूपी अन्याय ही वैर का कारण है। राम हो जाओ, विषमता मिटाओ, वैर मिट जाएगा! रामराज्य की चौपाई देखें–**'बयरु न करु काहू सन कोई। रामप्रताप विषमता खोई॥'** दशरथ बनोगे तो अन्याय फैलाओगे। राम बनो, न्याय करो! मुहम्मद बनो, इंसाफ करो! जीजस बनो, जस्टिस करो! नहीं तो फिर **'दो पाटन के बीच में साबुत न बचोगे कोय।'** न्याय का कार्य करो, न्याय की बात करो, न्यायशील बनो, न्याय को स्वीकार करो! आप देखो कि सभी स्वीकार कर रहे हैं, अब न्याय को।*

आज यह एक साल का सर्वेक्षण कार्य पूरा हुआ। पिछले साल 1 जनवरी 2006 को हमने यह सर्वेक्षण कार्य शुरू करवाया था। तैयारी इसके पिछले 16 या 17 सालों से कर रहे हैं। अब काम शुरू किया जब पूरा ग्राउण्ड तैयार कर दिया। न्याय का हर साहित्य

*तैयार है, हर प्रकार की पुस्तक उपलब्ध है। हर प्रकार का सभी कुछ इस न्यायस्थापना अभियान के लिए तैयार है। हर एक बात का जवाब प्रस्तुत है। अब कोई परेशानी नहीं, आराम से करो! पाँच साल सर्वेक्षण करो। जो लोकमत की दशा है, उसकी प्रामाणिकता को अंजाम दे दो। कोई विरोधी नहीं मिलेगा। यह न्याय बिलकुल सुनिश्चित होना है। न कोई अशिक्षित बचेगा, न कोई बेरोजगार बचेगा, न कोई गरीब होगा। संसाधन सबके पास न्यायपूर्वक सुलभ होगा। रोजगार सबके पास न्यायपूर्वक होगा। जो जितना काम करेगा, उसे उतना धन मिलेगा, रोजगार से। कृषकों को कृषिभूमि उपलब्ध करा दी जायेगी। जितनी मेहनत करोगे, उतना ही उपार्जन तुम्हारे पास होगा। तब तुम यह नहीं कहोगे कि मेरे पास कुछ संसाधन नहीं है, कैसे कमाऊँ? अतः संसाधन सबके पास सुलभ कराया जाएगा, धन नहीं। धन तो परिश्रम से मिलेगा आपको। कृषिभूमि सरकार से मिलेगी, वाणिज्यिकपूँजी सरकार से मिलेगी, दुकान बना करके दे दी जायेगी, रोजगारबजट से, निःशुल्क। क्योंकि हे सरकारों! एक बार टैक्स ले लिया गया है, अब बार-बार क्यों लोगे? अब शिक्षा के लिये फिर से फीस माँग रहे हो? आपने करोड़ों रुपयों का 'कर' इकट्ठा ले लिया पहले। अब रोजगार के लिए अलग से कहते हो कि पहले 3 लाख रुपये जमा करो, तब तुम्हें रोजगार देंगे, घूस लेकर। रोजगार के लिए जनता को पात्रतानुसार न्यायपूर्वक संसाधन सुलभ कराना तो सरकार का कार्य है। वह आपको बुलाए और न्यायोचित रोजगार दे। आपको एक भी दिन बेरोजगार रहने की जरूरत नहीं है। ये रहा आपका रोजगार और जाइए आप कार्य कीजिए। स्कूल से निकलने के पहले ही दिन आपका रोजगार सुरक्षित रहेगा। आप ये मत समझना कि इतने संसाधन कहाँ से आयेंगे? संसाधन तो अभी भी फालतू हैं। अभी अगर एक करोड़ आदमी और पैदा हो जायें तो भी भारत उन्हें खिलाने को तैयार है। गरीबी का कोई चक्कर नहीं है। गरीबी तो राजाओं अथवा राजनेताओं द्वारा जनता के लिए प्रायोजित कार्यक्रम है। धरती पर संसाधनों की कोई कमी नहीं है। पंचतत्त्वों की अतिरेकता है क्योंकि यह ब्रह्माण्ड अनन्त है। यह जगत पंचतत्त्वों से बना है। ये पाँचों तत्त्व ही मूल संसाधन हैं। ब्रह्माण्ड में ऐसी करोड़ों पृथिवियों का अस्तित्त्व संभव है-**'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'** लेकिन **'बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता'**। ये भी कहते हैं साधु लोग कि जब तक कोई रास्ता दिखाने वाला न हो, तब तक चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा रहता है। सूरज जब तक पैदा न हो जाए, तब तक अँधेरा ही अँधेरा रहेगा। आप देखें कि आज न्याय का सूर्योदय हो रहा है। लगभग 99% आदमी इससे सहमत हो रहे हैं। यहाँ तक कि जो अन्याय कर रहा है, कई पीढ़ियों से वह भी अब कह रहा है कि अब तो न्याय होना ही चाहिए। घबराने की बात नहीं है। जब न्यायव्यवस्था आती है तो जो अपराधी प्रवृत्ति का आदमी होता है, उसे मानसिक चिकित्सालय में भर्ती करा दिया जाता है। न्यायशील राष्ट्र में जेलें नहीं होतीं, चिकित्सालय होता है। क्योंकि यह प्रमाणित हो चुका है कि अपराध मनोवैज्ञानिक कारणों से होता है। किसी को ऐसा न समझो कि यह अपराधी है। मनोचिकित्सा के जरिये उसका उद्धार करो, उसे स्वस्थ बनाओ। पकड़कर ले जाओ, उसका इलाज करो। इतने पर भी न माने तो कहा गया है कि इसको जंगल में छोड़ आओ। यह पशुता ही वर्त रहा है। पशु भी मनोरोगी जैसा होता है। जो आदत उसके अन्दर बैठ जायेगी, उसी के पीछे भागता रहेगा। इसका मतलब है कि उस अपराधी मनुष्य को भी वहीं पशुओं के बीच जंगल में छुड़वा दो, उसे मारो नहीं, फाँसी मत दो, उसे सताओ नहीं, उसे गाली मत दो। पुलिस गाली दे रही है। कहते हैं थाने में शाम को जब पी करके आता है पुलिसवाला, तो अपराधियों की खैर*

नहीं, बहुत बुरी तरह से मारता है। खुदा न करे कि आपको कभी जेल जाना पड़े नहीं तो कभी स्वस्थ न हो पाओगे। सारी उम्र दर्द होता रहेगा। खुदा न करे कि ऐसा नसीब किसी को उपलब्ध हो। बचो उस बात से। चारों ओर हैवानियत है। चोरी कोई और करता है, पकड़ किसी और को ले जाते हैं और बहुत ही बुरी तरह से धुनाई करते हैं। आप कहते हैं कि आप प्रेमी हैं और संवेदनशील हैं, साधु हैं, महात्मा हैं। लानत है तुम पर! हर जगह निर्दोष पिट रहे हैं। ज्यादातर जेलों में निर्दोष बन्द हैं। दोषी सब बाहर घूम रहे हैं, क्योंकि जो दोषी है, वह तो पहले ही इंतजाम कर लेता है। ऊपर-ऊपर ही अपनी जमानत करा लेता है वह। बीसों साल तक न्यायालयों में फैसले नहीं होते। करोड़ों रुपये डकार चुके लोग, उसी पैसे से मुकदमा लड़ते रहते हैं। बैठे हैं मजे से घर में और सभी कुछ लूट रखा है। अरबों डालर का घोटाला हो गया सभी जगह। एक नहीं हजारों घोटाले हो गये। घोटालेबाज उसी पैसे से केस लड़ रहे हैं बीसों सालों तक। ऐसे ही जीवन बीत जाता है। चोर-डकैत मौज उड़ाते हैं, साधारण जन लुटते-पिटते हैं। राष्ट्र में और भी बहुत सी दिक्कतें हैं। लेकिन घबराने की जरूरत नहीं है। न्यायशील राष्ट्रीय व्यवस्था आ रही है, जिसमें अगर कोई गलत काम करता है, तो उसे समाजव्यवस्था से बाहर निकाल दिया जायेगा। उसे अन्त्यज कहा गया है वेदों में। अन्त्यज माने जो अवैधकार्य करता हुआ पकड़ा जाए। जो कार्य वैध नहीं है, निषिद्ध है, वही अवैध कहलाता है। जो विधान के अनुकूल नहीं है, ज्ञान के अनुकूल नहीं है, सत्य के अनुकूल नहीं है, वही अन्याय कहलाता है। सत् के अनुकूल निर्णय ही न्याय कहलाता है। सत् क्या है? इस संसार में दूसरा कोई नहीं है, यही सत्दर्शन है। गीता में कहा गया है कि परमेश्वर सभी प्राणियों में समान रूप से विद्यमान है। भगवद्गीता कहती है-**'समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्'**। ज्ञान ये कहता है कि किसी दूसरे को नहीं सताओ, क्योंकि परमेश्वर ही परमेश्वर को कैसे सताये? दायाँ हाथ यदि बायें हाथ को मारे, तो ये कौन सी बुद्धिमत्तापूर्ण बात हुई? जब सारे हाथ उसी के हैं-**'ईशावास्यमिदं सर्वम्।'** ईशावास्योपनिषद् भारत का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो कहता है-**'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।'** दूसरा कोई नहीं है, सबमें एक ही ईश्वर का वास है। भगवद्गीता कहती है-**'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति'।**

मैं आप सबको इस न्यायस्थापना अभियान के लिये आमन्त्रित करता हूँ कि आएँ और न्याय के कर्ता-धर्ता बनें, न्याय के प्रतिष्ठापक बनें, न्याय के संस्थापक बनें, न्याय के नेता बनें, न्याय के कार्यकर्ता बनें। लेकिन अन्यायी राजनेता न बनें। खुलकर कहें कि आप न्यायनेता हैं, राजनेता नहीं। राज माने तो दूसरों को सताने की कोशिश, दूसरों पर राज करने की कोशिश। अब न्यायनीति का युग आना चाहिये, राजनीति का नहीं। यह व्यवस्था बदली जानी चाहिये। आप सबका भी आवाहन है इस कार्य के लिये। दूसरों को भी प्रेरित करें कि वे भी न्यायनैतिक बनें, न्यायशील राष्ट्र की स्थापना करें, न्यायशीलता के अनुसार ही जीवन को स्वीकार करें। अन्याय सहन करना भी उतना ही गलत है, जितना कि अन्याय करना। अन्याय देखना भी उतना ही गलत है, जितना कि अन्याय करना। अनैतिक बात है यह कि आपके सामने कोई निर्दोष बच्चा पिट रहा हो, जबरदस्ती डाकू उसे मार रहे हों और आप चुपचाप उसे देख रहे हों। तो आप भी उसमें भागीदार हैं कहीं न कहीं। किसी न्यायालय में अभी एक फैसला हुआ था कहीं पर, जिसमें जज ने गवाह पर जुर्माना ठोक दिया। इस पर जज से गवाह ने पूछा कि हे भगवन्! इसमें मेरा क्या कसूर है, आपने मेरे ऊपर क्यों

जुर्माना लगा दिया? तब उस जज ने कहा कि तुम उसके गवाह हो। जब वह पिट रहा था, तो तुम वहाँ चुपचाप खड़े रहे। तुम साक्षी मात्र बने रहे। तुम ओशो बन गये। तुम तो संत बन गए, तुम निस्पृह हो गए, तुम साक्षी हो गए। अतः इस साक्षी पर भी फाइन होना चाहिए। यह अन्याय होते हुये देख रहा था चुपचाप। तुम पर भी जुर्माना पड़ना चाहिये, क्योंकि तुम भी अन्याय के भागीदार हो। जब वहाँ पर अन्याय हो रहा था तब तुम चिल्लाए नहीं, किसी को जाकर यह नहीं बताया कि वहाँ पर अन्याय हो रहा है। तुमने उसे बचाया क्यों नहीं? और अगर तुम्हारे भीतर बचाने की क्षमता नहीं थी, तो बाहर आकर चिल्लाए क्यों नहीं? पुलिस को फोन क्यों नहीं किया? तुम चुपचाप अन्याय देखते रहे और ऐसा काम होता रहा। तुम पूरी घटना बता रहे हो। इसका मतलब कि तुम तो बहुत ही धूर्त हो। इसका मतलब कि तुम सहयोगी थे उस घटना में। अब लो, फँसा वह गवाह भी। अतः राष्ट्र में जब फाइन की बात आयेगी, तो उन लोगों पर भी फाईन लगेगा, जो देख रहे हैं राष्ट्र में अन्याय होते हुए। एक शायर ने बहुत अच्छा लिखा है–***'ऐ मौजे बला उनको भी दे दो चार थपेड़े हल्के से। जो बैठ अभी तक साहिल पर तूफाँ का नजारा करते थे।'*** शायर कहता है कि 'हे खतरनाक लहरों! दो–चार थपेड़े उनको भी हल्के से दो, जो अभी तक चुपचाप किनारे बैठकर साक्षी की भाँति तूफान को देखा करते थे।' तो इसीलिए दूसरों को सताए जाने का नजारा ही न देखें, बल्कि आवाज उठाना सीखें। अगर चुपचाप बैठे हो, तो इसका मतलब है, कि अभी न्याय पूरी तरह से स्वीकार नहीं है। महाकवि दिनकर ने ठीक ही लिखा है–***'समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध। जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध॥'*** वास्तव में जो तटस्थ हैं, जो किनारे पर बैठे हैं, जो साहिल पर बैठकर अन्याय के तूफान का दृश्य देख रहे हैं, वे कमीने भी दण्डनीय हैं, वे भी अपराधी हैं।

हमने आपके सामने संक्षेप में यह न्यायस्थापना अभियान का परिचय दिया। थोड़ी बहुत बातें कहीं। सारी बातें तो नहीं कही जा सकतीं। ***'न्यायधर्मसभा'*** वास्तव में ***'धर्मसंस्थापकसंघ'*** की एक उपसंस्था है जो भारतसहित सम्पूर्ण विश्व में न्यायस्थापना के लिये कार्य कर रही है। आप कहेंगे कि पूरे विश्व में ऐसा कैसे संभव है? हम कहते हैं– हाँ, यह संभव है, क्योंकि जब भी किया है किसी श्रेष्ठ कार्य को, तो बहुत थोड़े से लोगों ने ही किया है या किसी एक व्यक्ति ने ही किया है। आम जनता में इतना जोश कहाँ? और इतना साहस कहाँ? उसे तो बस अपने घर पर ही रहने दो। भैसों को तो केवल एक चरवाहा ही चराता है। हजारों चरवाहे भैसों के लिये नियुक्त नहीं करने पड़ते। हजारों भैसों के लिये कहा जाता है कि एक ही चरवाहा बहुत है। बिगाड़ने अथवा बनाने के लिए एक ही पर्याप्त है। जैसे ***'एक ही उल्लू काफी है बरबाद गुलस्तां करने को।'*** वैसे ही ***'एक ही हंस काफी है आबाद गुलस्तां करने को।'*** भीड़ कुछ नहीं करती। ये मत सोचो कि भीड़ कुछ कर देती है। हजारों भेड़ों की भीड़ हो, तो भी एक ही खूँखार सिंह की दहाड़ सुनकर सारी भीड़ भागने लगती है। भीड़ व्यर्थ है। आर.एस.एस. जैसे कई संगठन भीड़ एकत्रित करना चाह रहे हैं। ***'एकता में बल है'***– वे नारा लगाते चले जा रहे हैं। ***'एक बनेंगे नेक बनेंगे'***– श्रीरामशर्मा आचार्य जी के सारे अनुयायी चिल्लाते चले जा रहे हैं, लेकिन न एक बन सके, न नेक बन सके। उनके बीच हुए घमासान और विखण्डन को कौन नहीं जानता? आर.एस.एस. में भी यही हाल था। वे भी कहते चले जा रहे हैं कि जब हम एकीकृत हो जायेंगे तो मुसलमानों को मुँहतोड़ जवाब देंगे। मुसलमान सोचते हैं कि वे जब एक हो जाएँगे, तो हिन्दुओं अथवा

*ईसाईयों को मुँहतोड़ जवाब देंगे। हर जाति अपना गिरोह तैयार कर रही है। हिन्दू कहते हैं– 'हम भी अपनी जनसंख्या बढ़ाएँगे। एक–एक को छह–छह बच्चे पैदा करने का फरमान हिन्दू नेताओं एवं महात्माओं ने जारी किया है। हम कहते हैं– अँग्रेज मात्र 1 लाख 5 हजार थे और तुम 30 करोड़। तब भी तुम बुरी तरह से जूते खाए 200 वर्षों तक, और अब एक होने की असंभव कोशिश कर रहे हो? एक नहीं सम हो जाओ, समाधिकारी हो जाओ। एकता तो परिवार में हो सकती है, समाज में नहीं। समाज में कोई कहेगा कि हम एक जैसा कपड़ा पहनेंगे और एक जैसा ही खाना खायेंगे, एक जैसा घर बनाएँगे, एक ही सम्पत्ति रखेंगे। यह परिवार में तो संभव है परन्तु समाज में नहीं। अतः एकता नहीं समता की बात करो। समाधिकारी समझो एक दूसरे को और समान अधिकार देने की बात करो। सबको समुचित शिक्षा दो, समुचित रोजगार दो, समुचित सुखसुविधा दो और समुचित संरक्षण दो, एकता स्वतः सध जाएगी। समता से ही एकता का द्वार खुलता है। समाज में सीधे एकता की बात न करो। भूखे पेट रहते हुए सत्य और प्रेम नहीं होता–***'भरा हो पेट तो संसार जगमगाता है। लगी हो भूख तो ईमान डगमगाता है ॥'*** सीमा फिल्म का यह गीत तुम्हारी आँख खोलने के लिए पर्याप्त है। समाज में एकता, प्रेम, भाईचारा का पाखण्ड छोड़ दो। समाज को समता की धुरी पर ही खड़ा होने दो। समाधिकारिता के बिना सामाजिकता नहीं पनपेगी। मैं जैसा भी वस्त्र पहन लूँ, तू भी वैसा ही पहन ले। मैं चोटी रखूँ, तो तू भी चोटी रख ले। क्योंकि मैं हिन्दू हूँ तो तू भी हिन्दू हो जा। समाज से चोटी का क्या सम्बन्ध है? न्याय के बिना हिन्दुत्व का क्या मूल्य है। न्याय स्वतन्त्रता देता है– किसी को चोटी रखनी है, तो रखे और किसी को कटानी है तो कटाये। आप क्यों परेशान हो रहे हो? कोई कहता है कि हम बुर्का ओढ़ेंगे, तो उसे ओढ़ने दो। कोई कहता है कि हम माला जपेंगे, तो उसे जपने दो। कोई कहता है कि हम नमाज पढ़ेंगे, तो उसे पढ़ने दो। कोई राम की भक्ति करता है, उसे करने दो। कोई रहीम की भक्ति करता है, उसे करने दो। कोई नानक की भक्ति करता है, उसे करने दो। काई जीसस की भक्ति करता है, उसे करने दो। किसी की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में बाधक मत बनो। व्यक्तिगत मामलों में किसी को रोकने–टोकने की जरूरत नहीं है, जब तक कि वे किसी दूसरे की निजी स्वतन्त्रता को बाधित न करें।*

अब आप देखें कि न्याय के लिए जनता तैयार हो रही है। 'न्यायधर्मसभा' सबका सर्वेक्षण कराके इसे लोकसभा में पुट–अप करेगी। वहाँ पहले ही लोकसभा के सभी सदस्यों से इसपर सर्वेक्षण करा लिया जाएगा। तब वे इसका विरोध करने की स्थिति में नहीं होंगे। लोकसभा में अगर इन न्यायशील जनाधिकारों को पास न करेंगे, तो उन्हें जनता और सुप्रीमकोर्ट का मुकाबला करना पड़ेगा, क्योंकि लोकतन्त्र में लोकमत का उल्लंघन नहीं कर सकते। लोकसभा का जन्म ही लोकमत से होता है और 99% से भी अधिक लोकमत इस पक्ष में सिद्ध हो रहा है। सुप्रीमकोर्ट के जज से भी सर्वेक्षण करा लिया जाएगा। अब क्या करेंगे फैसला? वे क्या कहेंगे कि मैं अपनी इच्छा और जमीर के खिलाफ फैसला दे रहा हूँ कि न्याय न किया जाए? क्या न्यायालय का न्यायाधीश न्याय के विरुद्ध खुलकर अपना फैसला दे सकता है? लोकतन्त्र में लोकमत और लोकहित को न देखा जाए– क्या वे ऐसा कहेंगे? उच्च पदों पर यदि कोई न्याय को स्वीकार नहीं करेगा, तो उसे जनता का मुकाबला करना पड़ेगा, उसे भारी मुसीबत हो जायेगी। राष्ट्र के 99% लोगों की इच्छा को दबाया नहीं जा सकता। उनके मत को दबाया नहीं जा सकता। ये 99% लोकमत तो सच्चाई है। मैं तो दूर बैठा हुआ इस काम को अंजाम दे दूँगा और देखता रहूँगा कि आप स्वयं ही अपना समाधान कर लेंगे। मैं तो जनता को बस जागरूकता दे रहा हूँ कि जाग जाओ। जंग मत

लड़ो, जागरूक हो जाओ। जंग की क्या जरूरत है? सूर्य को अंधकार से जंग नहीं लड़नी पड़ती। जागरूक हो जाओगे, तो सब कुछ अपने आप सही हो जायेगा। तुम समझ जाओ बात को बस। दुष्क्रांति मत करो। क्रांति तुम्हारी दुष्क्रांति हो जाती है। सहमतिपूर्वक कर्म करो, संघर्षपूर्वक नहीं। इसके लिये क्रियाशील बनो और मैं कह रहा हूँ कि ज्यादा समय नहीं लगेगा इस कार्य में। आप बिलकुल भी शंका न करें। आपके बच्चों को अशिक्षा, बेरोजगारी, असुविधा और असुरक्षा नहीं झेलनी पड़ेगी।

*मैं अपनी बात यहीं समाप्त करना चाहूँगा। आप सभी यहाँ पर आये और इतनी देर तक मुझे सुना, सहन किया। इस कष्ट के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ कि आपको इतनी दूर आना पड़ा और हमने बुलाया इसलिये कि सम्मेलन बीच-बीच में करा देना जरूरी होता है, जिससे कि लोगों को यह पता चलता रहे कि ये सब क्या है? ये सब क्या चल रहा है? क्या किया जा रहा है? कैसा कार्य चल रहा है? कैसे न्याय होता है? आप सब भी जानें और समझें। सभीप्रकार के लोगों को जानकारी होनी चाहिये। सम्मेलन इसीलिये हर साल कराया जा रहा है। हर साल 1 जनवरी को ये सम्मेलन होगा और हर सम्मेलन में आप सभी लोग सादर आमंत्रित हैं। आगे के सम्मेलनों के लिये यदि निमन्त्रणपत्र न पहुँचे तो भी आप सादर आमंत्रित हैं। मैं आप सभी को आमंत्रण दिये देता हूँ अभी से। आप सभी आमंत्रित हैं। इसमें सभी विधायकों, सभी सांसदों, सभी राजनेताओं, सभी आध्यात्मिकों, धार्मिकों, पुरोहितों, मठाधीशों, सन्तों, जनसेवकों, समाजसेवकों, राष्ट्रसेवकों सभी को आमंत्रित किया जा रहा है। राष्ट्रहित में हल्का-फुल्का कष्ट भी उठा लेना चाहिए। आप सब जनमत सर्वेक्षण आदि कार्यों में सहयोग करें, तो शीघ्र ही न्याय हो जाएगा और ये बिल्कुल संभव है और सरल है-**'उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।'***

❁❁❁

गीत

बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ।
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।।

हूँ बहुत नादान करता हूँ ये नादानी।
बेचकर खुशियाँ खरीदूँ आँख का पानी।।
हाथ खाली हैं मगर व्यापार करता हूँ।
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।।

मैं बसाना चाहता हूँ स्वर्ग धरती पर।
आदमी जिसमें रहे बस आदमी बनकर।।
उस नगर की हर गली तैयार करता हूँ।
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ।।

❁❁❁

अपील

'न्यायधर्मसभा' भारतसहित सम्पूर्ण विश्व के समस्त सामुदायिक, धार्मिक, आध यात्मिक, राजनीतिक, सरकारी, गैरसरकारी संगठनों, संघों, संस्थाओं, पार्टियों, दलों और व्यक्तियों से अपील करती है कि वे भारतसहित सम्पूर्ण विश्व में न्यायस्थापना अभियान के अन्तर्गत संचालित किए जा रहे जनमत सर्वेक्षण कार्यक्रम में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। भारत में यह जनमत सर्वेक्षण 1 जनवरी, 2006 से 31 दिसम्बर, 2010 के बीच पंचवर्षीय कार्यक्रम के रूप में संचालित किया जा रहा है। इन पाँच वर्षों के भीतर ही भारत के समस्त नागरिकों का जनमत संग्रह करके भारत में न्यायस्थापना की प्रक्रिया को सन् 2011 से प्रारम्भ किया जा सकता है। सन् 2011 से सन् 2015 के बीच चारों न्यायशील जनाधिकारों को प्रतिष्ठित करके भारत को विश्व का प्रथम न्यायशील राष्ट्र होने का गौरव प्रदान किया जा सकता है। भारतसहित सम्पूर्ण विश्व के किसी भी राष्ट्र में वर्तमान समय में जनाधिकारों का समुचित निर्धारण और वितरण नहीं है। जनता के हित असुरक्षित हैं। सार्वजनिक जीवन अन्यायजनित भीषण समस्याओं से ग्रस्त और त्रस्त है। अन्याय करने वाले और अन्याय सहने वाले दोनों ही अशान्त, भयभीत, दुःखी एवं शोकग्रस्त हैं। अन्याय के कारण चारों ओर हिंसा, हत्या, लूट, बलात्कार, अपहरण, चोरी, आतंक, शोषण, दलन, दमन, उत्पीड़न, आन्दोलन, हड़ताल, उपद्रव का वातावरण दिखाई पड़ता है। साधु-महात्मा और सरकारें भाँति-भाँति के उपाय करके राष्ट्र और विश्व में शान्ति की स्थापना का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। जड़ी-बूटी, योगा, ध्यान, प्रार्थना, पूजा, प्राणायाम, चिकित्सा, नशा, नींद की गोली, बन्दूक की गोली आदि अनेकानेक उपाय विफल सिद्ध हो रहे हैं। हजारों वर्षों से जीवन की समस्याओं का दूर-दूर तक कहीं कोई समाधान दिखाई नहीं पड़ रहा है, क्योंकि समस्या के मूल कारण का उपचार नहीं किया जा रहा है। घाव पर मलहम का ऊपरी लेप लगाया जा रहा है। मैल पर चन्दन छिड़ककर सुखशान्ति पाने का अथक प्रयत्न किया जा रहा है। किन्तु मैल को धोए बिना बार-बार वही दुर्गन्ध उभरकर सामने आती है। अच्छा तो यही है कि अब इस मैल को ही धो दिया जाए। 'गरीबी हटाओ' आन्दोलन छोड़कर संसाधनों का न्यायशील बँटवारा किया जाना चाहिए। रोग के मूल कारण का ही उपचार कर दिया जाए, जिससे कि बार-बार उसी दुर्दशा का सामना न करना पड़े।

भारत के बड़े-बड़े संगठनों, बड़े-बड़े लोगों, बड़े-बड़े सन्तों, बड़े-बड़े धनाढ्यों और सर्वसमर्थ सरकारों से विशेष करके यह अपील की जाती है कि वे न्याय की स्थापना के लिए आगे आएँ और सार्वजनिक जीवन को अन्याय की पीड़ा से मुक्त कराएँ। न्याय की स्थापना के बिना अन्यायजनित समस्याओं का समाधान किसी अन्य उपाय से कदापि संभव न होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्वहिन्दूपरिषद, विवेकानन्द का रामकृष्णमिशन, दयानन्द का आर्यसमाज, श्रीरामशर्मा का शान्तिकुंज एवं सम्पूर्ण गायत्रीपरिवार, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीयविश्वविद्यालय, राधास्वामी एवं निरंकारी संगठन, ओशो सम्प्रदाय, श्री श्रीरविशंकर जी का आर्ट ऑफ लिविंग मिशन, श्री रामदेव बाबा का हठयोग मिशन आदि से विशेषतः निवेदन किया जाता है कि वे सब न्यायशील राष्ट्र की स्थापना करके भारत की भारतीयता, मानव की मानवता, समाज की सामाजिकता, राष्ट्र की राष्ट्रीयता, लोकतन्त्र की लोकतान्त्रिकता, सर्वकार की सर्वकारिता, संविधान की सम्वैधानिकता की रक्षा करें और जनता को अशिक्षा,

बेरोजगारी, असुविधा एवं असुरक्षा से मुक्ति प्रदान करें। ये सभी संगठन यदि न्याय के पक्ष में खड़े हो जाएँ, तो न्यायशील भारतराष्ट्र की स्थापना होते देर नहीं लगेगी। इन सभी संगठनों से अपील की जाती है कि वे अपने-अपने निजी कार्यक्रमों को चलाते हुए भी न्यायस्थापना कार्य के लिए परस्पर सहयोगी बनकर भारतराष्ट्र की रक्षा करके सम्पूर्ण विश्व में न्यायशीलता की स्थापना का द्वार खोल दें।

*भारत के राजनीतिक दलों से भी अपील की जाती है कि वे सन् 2011 से 2015 के बीच इस न्याय की घड़ी में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करके भारत सहित सम्पूर्ण विश्व की राजनीति पर लगे हुए अन्यायजनित पाप को धोकर राष्ट्रीय व्यवस्था के क्षितिज पर मँडराते हुए काले बादलों को न्याय के प्रखर वायुप्रवाह से खदेड़कर स्वच्छ बनाने में न्यायधर्मसभा का सहयोग करें। न्याय के बिना विश्वशान्ति संभव नही है। न्याय में सत्य की वह शक्ति छिपी हुई है जो **'विश्व-बन्धुत्व'** और **'वसुधैव-कुटुम्बकम्'** के चिरपुरातन स्वप्न को साकार का देगी। समता ही धरती की एकता और अखण्डता को सुरक्षित करती है। हे राजनैतिक दलों! वर्तमान विश्व में राजनीति पर लगे हुए जंगलराज के बदनुमा दाग को धोकर स्वच्छ पवित्र मंगलराज की स्थापना के लिए आप सभी का आह्वान किया जाता है।*

*हे कांग्रेस! राजनैतिक दल के रूप में आजादी के समय से ही आप का लक्ष्य रहा है गाँधी के सपनों का भारत निर्मित करना। लेकिन गाँधी का नाम, गाँधी की टोपी, गाँधी की खादी की आड़ में आपने भरतीय जनता से मत प्राप्त करके विगत 60 वर्षों तक गाँधी के सपनों के विपरीत राज किया है। आपसे निवेदन है कि गाँधी के न्यायशील सपने को साकार करने में न्यायधर्मसभा को अपना बहुमूल्य सहयोग देकर प्रायश्चित और कृतज्ञता ज्ञापित करें। तभी महात्मा गाँधी की आत्मा को शान्ति मिल सकती है। महात्मा गाँधी का सपना क्या था? देखिए-**'वर्गयुद्ध भारत के मूलस्वभाव के खिलाफ है। भारत में समान न्याय और सबके बुनियादी हकों के विशाल आधार पर स्थापित एक उदार किस्म का साम्यवाद निर्माण करने की क्षमता है। मेरे सपने के रामराज्य में सबके अधिकार सुरक्षित होंगे।' -(महात्मा गाँधी, ग्रन्थ : मेरे सपनों का भारत)***

दीनदयाल उपाध्याय का जनसंघ भी एकात्म मानववाद के सत्यात्मक अद्वैत दर्शन को आधार मानकर परस्पर एकता (प्रेम) और समता (न्याय) के व्यवहार को प्रतिष्ठित करने के लिए उत्पन्न हुआ था। दीनदयाल जी आकस्मिक रूप से चल बसे। तो जनसंघ ही कुछ परिवर्तित होकर रामराज्य के स्थापना के नारे के साथ भाजपा के रूप में सामने आया। यह भारतीय जनता पार्टी लगातार करवटें बदलती रही। रामराज्य पीछे छूट गया। रामराज्य का न्यायशील विराट स्वप्न राममंदिर के संकुचित स्वप्न में परिवर्तित हो गया। रामराज्य में प्रजा का कल्याण निहित था। जबकि राममंदिर में राजनेताओं का कल्याण निहित है।

*हे भारतीय जनता पार्टी! **'राम प्रताप विषमता खोई'** के न्यायशील रामराज्य का स्वप्न टाला नहीं जा सकता। गाँधी के सपनों का रामराज्य कांग्रेस ने साकार नहीं किया। तो वही चिरपुरातन जनकल्याणकारी न्यायशील समतामूलक रामराज्य का स्वप्न भाजपा ने कांग्रेस से छीन लिया। पारस्परिक वैर मिटाने के लिए समता का राज्य प्रतिष्ठित किया जाना आवश्यक है। तभी जनता के बीच परस्पर प्रेम उत्पन्न होगा। तभी पारस्परिक एकता और*

*भाईचारा आएगा। समता के बिना एकता-अखण्डता सिद्ध न होगी। विषमता मिटती है, तो परस्पर वैर मिट जाता है। रामराज्य का वर्णन करने वाली रामचरितमानस की चौपाई देखिए-**'बयरु न करु काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।'** न्यायकारी समता के प्रतिष्ठित होते ही विषमता मिट जाती हे। वैषम्य ही वैर का मूल कारण है। समता आते ही एकता पनपने लगती है, भाईचारा बढ़ने लगता है, परस्पर प्रीति जागने लगती है। रामराज्य की चौपाई आगे कहती है-**'सब नर करहिं परस्पर प्रीती।'** अतः सार्वजनिक धन रूपी राष्ट्रकोष से सबको समुचित शिक्षा, समुचित रोजगार, समुचित सुखसुविधा, समुचित संरक्षण प्रदान करके जनता के बीच फैली हुई विषमता रूपी अन्याय को मिटाने का प्रयत्न करके सच्चे नेतृत्वकर्ता सिद्ध होने का गौरव प्राप्त करें।*

*हे बहुजन समाज पार्टी! आपका उद्देश्य ही **'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय'** और **'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय'** के रूप में सर्वविदित है। शोषित, दलित, दमित, उत्पीड़ित वर्ग के उत्थान और लोकजीवन की अन्धी दौड़ में पिछड़ गए लोगों को आगे बढ़ाने और जीवनविकास की संभावनाओं को साकार करने के लिए ही आपका राजनैतिक संगठन प्रतिबद्ध है। आपके उद्देश्य और आपकी प्रतिबद्धता से यह भलीभाँति स्पष्ट होता है कि आप समाज में न्यायशीलता के पक्षधर हैं। बहुजनसमाज ही नहीं बल्कि किसी भी समाज के जीवन उत्थान एवं विकास हेतु समुचित शिक्षा, समुचित रोजगार, समुचित सुविधा, समुचित संरक्षण प्राप्त होना आवश्यक है। आशा है कि आप राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक धनरूपी राष्ट्रकोष में जनता को उसके समुचित जनाधिकार को प्रतिष्ठित करने में प्रसन्नतापूर्वक अपनी सहमति और सहयोग प्रदान करेंगे ताकि राष्ट्र में शोषण, दलन, दमन, उत्पीड़न और पिछड़ेपन की भीषण और असहनीय दुर्दशा को हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त किया जा सके।*

हे समाजवादी पार्टी! हे समता पार्टी! आप सबसे न्यायशीलता की आशा तो की ही जानी चाहिए, क्योंकि आप सभी अपने नाम के अनुरूप न्यायकारी समतावादी हैं। समान जनाधिकारों की बातें आप कैसे इन्कार कर सकते हैं? एक व्यक्ति को शिक्षा मिले दूसरे को न मिले, एक परिवार को रोजगार मिले दूसरे को न मिले, एक ग्राम को सुखसुविधा मिले दूसरे को न मिले, एक संवर्ग को संरक्षण मिले दूसरे को न मिले, ऐसी विषमता आपको निश्चय ही स्वीकार्य नहीं होगी। आशा है आप जनता के साथ न्याय करने के लिए अपनी सहमति और सहयोग प्रदान करने में किंचित भी नहीं हिचकिचाएँगे, बल्कि आगे बढ़कर न्यायशीलता को प्रतिष्ठित करेंगे।

भारतीय संविधान सभा की संकल्पना के सार अंश

''संविधान सभा भारत को स्वतंत्र प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य के रूप में घोषित करने के अपने दृढ़ और सत्यनिष्ठ संकल्प की और भारत के भावी शासन के लिए संविधान बनाने की घोषणा करती है :-

- *प्रभुत्वसंपन्न स्वतंत्र भारत की सभी शक्तियाँ और प्राधिकार, उसके संघटक भाग और शासन के सभी अंग लोक से व्युत्पन्न हैं।*
- *भारत की जनता को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय; प्रतिष्ठा और अवसर की तथा विधि के समक्ष समता; विचार-अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना, व्यवसाय, संगम और कार्य की स्वतन्त्रता विधि और सदाचार के अधीन रहते हुए होगी।*
- *अल्पसंख्यकों के लिए, पिछड़े और जनजाति क्षेत्रों के लिए और दलित और अन्य पिछड़े हुए वर्गों के लिए पर्याप्त रक्षोपाय किए जाएँगे।*
- *गणराज्य के राज्यक्षेत्र की अखंडता और भूमि, समुद्र तथा आकाश पर उसके प्रभुत्वसंपन्न अधिकार, न्याय और सभ्य राष्ट्रों की विधि के अनुसार बनाए रखे जाएँगे।''*

❀❀❀

भारतीय संविधान के ध्येय और उद्देश्य

''हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसंपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को 'सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार-अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता (पारस्परिक प्रेम) बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26-11-1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् 2006 विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।''

❀❀❀

मानवाधिकार

गुण धन सुख स्वतन्त्रता सबको पाने का अधिकार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

गुण के बिना दोष बढ़ते हैं गुण ही धर्म कहाए।
शुभ शिक्षा संस्कार मिलें तो मानवीय गुण आए।।
सद्‌गुण पाने का अधिकारी मानव का अधिकार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

धन के बिना गरीबी बढ़ती धन ही अर्थ कहाए।
शुभ रोजी के संसाधन से धन यह मनुज कमाए।।
धन पाने के लिए नियत हो मानवीय अधिकार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

सुख के बिना बढ़े दुःख भारी सुख ही काम कहाए।
सम्बन्धों सुविधाओं भोगों से सुख मानव पाए।।
भौतिक बौद्धिक हार्दिक आत्मिक सुख से सबको प्यार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

स्वतन्त्रता के बिना दासता मिटती नहीं किसी की।
स्वस्ति स्वास्थ्य स्वामित्व स्वावलम्बन है चाह सभी की।।
मुक्ति मोक्ष कल्याण सभी को मिले न्याय व्यवहार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

गुण ही धर्म अर्थ ही धन है सुख ही काम कहाए।
स्वतन्त्रता ही मोक्ष जानिए भेद यही बतलाए।।
कर्म अर्थ भी काम मोक्ष भी हैं पुरुषारथ चार।
मानव के समाज में सोहे मानवीय व्यवहार।।

❀❀❀

जनाधिकार

शिक्षा रोजगार सुखसुविधा संरक्षण सब पाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

शिक्षा से ही जनजीवन यह योग्य वरीय बनेगा।
शिक्षा और प्रशिक्षण पाकर अन्तःकरण खिलेगा।।
मानवीय व्यक्तित्व कुशल हो कर्म स्वयं कर पाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

रोजगार भी मिले सभी को समुचित संसाधन हो।
कृषि वाणिज्य प्रशासन नियमन का समुचित वितरण हो।।
निज परिवार पालने को सब आजीविका कमाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

सुखसुविधा से ही जनजीवन निश्चित सुखी बनेगा।
बिजली पानी सड़क आदि से ग्रामक्षेत्र विकसेगा।।
आवासीय क्षेत्र को समुचित सुविधा चलो दिलाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

संरक्षण से ही जनजीवन पूर्ण सुरक्षित होगा।
शोषण दलन दमन उत्पीड़न बहुत सभी ने भोगा।।
हो समष्टि जीवन संरक्षित दूषण सभी मिटाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

व्यक्ति सुशिक्षित होगा परिवारों को रोजी होगी।
क्षेत्रों को सुखसुविधा प्राणियों का संरक्षण होगा।।
व्यक्ति कुटुम्ब समाज सृष्टि को आओ धन्य बनाएँ।
चारों जनाधिकार प्राप्त हों जन-गण-मन हरषाएँ।।

❀❀❀

अश्रुपात

शहरों की झोपड़पट्टी से देती चीख सुनाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

अस्सी प्रतिशत जर्जर तन हैं रोगी हैं नर-नारी।
और करोड़ों लोग घूमते बनकर आज भिखारी।।
पशुओं से ऊपर मानवता अभी नहीं उठ पाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

अनगढ़-अनपढ़ और गँवारों की भरमार बहुत है।
और चंद चतुरों के हाथों में अधिकार बहुत है।।
स्कूलों तक में भी अब तो होती नहीं पढ़ाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

इन्हीं गरीबों से पत्थरदिल काम खूब करवाते।
बाल वृद्ध स्त्री तक इनके सारे हुकुम बजाते।।
सिखे-पढ़ों ने भी तो केवल सीखी है चतुराई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

लूट-खसोट मची चौतरफा अंधी मारा-मारी।
जिसकी जेब भरी है जितनी उतना बड़ा भिखारी।।
धर्म देश की हालत ऐसी और देश हैं भाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

प्यार दुलार मिले तो पशु-पक्षी विनम्र हो जाते।
और प्रशिक्षण पाकर तो कितने कौतुक दिखलाते।।
घृणा अशिक्षा अनगढ़ता से है जीवन दुःखदाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

शिक्षा रोजगार सुखसुविधा संरक्षण की धारा।
जाकर गिरती है समुद्र में हो न सका बँटवारा।।
चारों जनाधिकार छीनकर मौज करे अन्यायी।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

लौट चलो ढाई अक्षर की ओर नहीं कुछ बिगड़ा।
वरना फट जाएगी धरती काम न देगा थिगड़ा।।
समझदार चेतें यदि देती हो आवाज सुनाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

चलो एक-दूजे को आगे बढ़कर गले लगाएँ।
सुख-दुःख सबके साथ भाइयों बाँटें और बटाएँ।।
'सत्यमेव जयते' की 'अंकुर' देते तुम्हें दुहाई।
भारत के दस लाख गाँव में निपट गरीबी छाई।।

❁❁❁

राष्ट्रीय अन्याय

न्यायसूर्य उग सका न अब तक पीड़ित है समुदाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

संसाधन संस्कृति विलुप्त है और सभ्यता डूबी।
सत्-सिद्धान्त गँवाकर सबने पायी कैसी खूबी।।
लुट-पिट करके बैठ गए सब भूले सभी उपाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

शिक्षा का अधिकार खो गया अनपढ़ हैं नर-नारी।
मूर्ख बनाकर राजभोगरत है कुनबा सरकारी।।
विद्या बिना अशिक्षित जनता पशुओं सी बँध जाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

अनाजीविका से पीड़ित हैं देखो कितने प्राणी।
रोजी-रोटी की चिन्ता में पड़े सभी कल्याणी।।
समुचित आजीविका न हो तो घर-परिवार नशाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

सुखसुविधा को भोग रहे जो वे तो शहर कहाते।
जिन क्षेत्रों को मिली न सुविधा वही पिछड़ते जाते।।
बिजली पानी सड़क न जिसको वही गाँव कहलाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!
संरक्षण न मिला प्रकृति को पाप-प्रदूषण छाया।
शोषण दलन दमन उत्पीड़न से जीवन थर्राया।।
कुजन सुरक्षित हैं समाज में सुजन सताया जाय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

शिक्षा रोजगार सुखसुविधा संरक्षण सब पाएँ।
राष्ट्रकोष पर अब तो सब जन निज अधिकार जताएँ।।
जन-जन हों समुचित अधिकारी यह समाजिक न्याय रे!
सदियों से छाया है देखो धरती पर अन्याय रे!!

❀❀❀

पुनर्स्वतन्त्रता

लेंगे अभी आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
भारत के लोग फिर से करेंगे बड़ा कमाल।।
जय जय न्यायनीति की जय हो!

शिक्षा भी रोजगार भी सुविधा सुखद सभी।
रक्षा भी सब समष्टि की अधिकार हैं जो भी।।
चारों जनाधिकार की जागी है फिर मशाल।
भारत के लोग फिर से करेंगे बड़ा कमाल।।
जय जय न्यायनीति की जय हो!

गुणवान भी होंगे सभी धनवान भी होंगे।
होंगे सुखी समस्त और स्वस्थ भी होंगे।।
ये मानवाधिकार से होंगे सभी निहाल।
भारत के लोग फिर से करेंगे बड़ा कमाल।।
जय जय न्यायनीति की जय हो!

आर्थिक अनय अनीति सभी दूर करेंगे।
संस्कार में भी न्याय का हम नूर भरेंगे।।
व्यवहार में अध्यात्म में भी न्याय हो बहाल।
भारत के लोग फिर से करेंगे बड़ा कमाल।।
जय जय न्यायनीति की जय हो!

धरती पे न्यायनीति का मंगलविधान हो।
जंगल की राजनीति का अब क्यों बखान हो।।
मानव के शुभ समाज से दानव को दें निकाल।
भारत के लोग फिर से करेंगे बड़ा कमाल।।
जय जय न्यायनीति की जय हो!

❀❀❀

न्यायमहिमा

न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।
जिस समाज में न्याय न होगा, वह समाज मर जाएगा।।

ग्राम समाज देश का अपने, यदि तुमको प्रिय है कल्याण।
सामाजिक सभ्यता के लिए, न्यायधर्म को रखो प्रमाण।।
न्यायधर्म ही इस समाज को, स्वर्ग स्वरूप बनाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

समुचित अधिकारों का वितरण, न्यायधर्म का मूलाधार।
न्यायशील अधिकारों से ही, होता सामाजिक उद्धार।।
समता बिना समाज न कोई, सामाजिक हो पाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

सम हो और उचित हो सबके, अधिकारों का निर्धारण।
नहीं विषमता वर्ती जाए, जग में कभी किसी कारण।।
समुचित अधिकारों कर्तव्यों, से समाज हरषाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

आर्थिक सांस्कारिक व्यावहारिक, आध्यात्मिक तल पर हो न्याय।
हो न कहीं वैषम्य विश्व में, सुखी रहे सारा समुदाय।।
राजनीति को छोड़ राष्ट्र जब, न्यायनीति अपनाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

शिक्षा रोजी सुखसुविधा, संरक्षण पाने का अधिकार।
न्यायशील हो संविधान तो, समुचित जनहित हो स्वीकार।।
चारों जनाधिकारों से यह, राष्ट्र धन्य हो जाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

नहीं अशिक्षा नहीं गरीबी, नहीं असुविधा असुरक्षा।
धरती स्वर्ग समान सिद्ध हो, सबके जीवन की रक्षा।।
'अंकुर' न्यायधर्म से भारत, फिर स्वर्णिम कहलाएगा।
न्यायधर्म से ही समाज यह, सुन्दर जीवन पाएगा।।

❀❀❀

यह पुस्तक पढ़कर चुप मत बैठो !

इस पुस्तक को पढ़ते समय यदि आपकी अन्तरात्मा, आपका विवेक, आपकी भावना, आपकी बुद्धि आपको इस न्याय स्थापना अभियान में संलग्न होने के लिए प्रेरित करे तो आप संकीर्ण विचारधाराओं से ऊपर उठकर, सर्वव्यापक दृष्टिकोण अपनाकर सार्वजनिक कल्याण के इस महान भगवत् कार्य में संलग्न होने के लिए न्यायधर्मसभा से सम्पर्क अवश्य करें।

राष्ट्रनिर्माण और जनकल्याण के इस अद्वितीय और अद्भुत कार्य में सहयोगी बनकर अपने जीवन को कृतार्थ करें, सार्थक बनाएँ। जंगलराज में अपने मानवीय जीवन को पशुओं की भाँति व्यतीत करने के लिए विवश न हों। ध्यान रखें तटस्थ रहकर तमाशा देखने वाला भी पापी है, अपराधी है। महाकवि दिनकर कहते हैं– ***'समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध। जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध॥'*** *आजादी के पश्चात् गाँधी जी ने भी कहा था कि अभी सबकी आजादी नहीं हुई है। केवल भारतीय राजनीतिज्ञों की आजादी हुई है। अभी साधारण जनता तो गुलाम ही है। अपने आखिरी वसीयतनामा में महात्मा गाँधी ने लिखा–* ***'शहरों और कस्बों से भिन्न उसके सात लाख गाँव की दृष्टि से हिन्दुस्तान की सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है। लोकशाही के नकसद की तरफ हिन्दुस्तान की प्रगति के दरम्यान सैनिक सत्ता पर नागरिक सत्ता को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है।'*** *न्यायशीलता ही स्वतन्त्रता है। अन्याय ही परतन्त्रता है, गुलामी है। गुलामी और अन्याय पर्यायवाची शब्द हैं। यदि किसी गुलाम के साथ न्याय हो तो वह गुलाम क्यों कहलाएगा। समाधिकारिता ही तो न्याय है। शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण प्राप्ति का समुचित जनाधिकार मालिकों की भाँति यदि किसी गुलाम को भी प्राप्त हों तो उसकी गुलामी कहाँ बची। स्पष्ट है कि न्यायशील जनाधिकारों के बिना गुलामी का अन्त नहीं है। सुभाष ने कहा था–* ***''गुलाम रहना मनुष्य के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। अन्याय और अनौचित्य को सहन करना सबसे बड़ा अपराध है। असमानता (विषमता अथवा अन्याय) के विरुद्ध संघर्ष करना ही सबसे बड़ा गुण है, चाहे इसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े।'' -(सुभाषचन्द्रबोस, विज्ञापन : सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारतसरकार; हिन्दुस्तानटाइम्स : 23/01/05)***

अँग्रेजों के शासन के समय भी प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा नहीं मिलती थी, प्रत्येक परिवार को रोजगार नहीं मिलता था, प्रत्येक ग्राम को सुखसुविधा नहीं मिलती थी, प्रत्येक संवर्ग को संरक्षण नहीं मिलता था। आज के भारतीय शासन में भी यही हाल है। गुलामी तब भी थी, गुलामी अब भी है। हमें कोई विदेशी लूट रहा है अथवा कोई स्वदेशी लूट रहा है, हमारा लुटना तो जारी है। न्यायशील अर्थव्यवस्था ही राष्ट्रीय जीवनव्यवस्था है। आर्थिक न्याय में ही सामाजिक और राजनैतिक न्याय भी अप्रत्यक्ष रूप से समाहित रहते हैं।

हे भारत के नागरिकों जागो! हे विश्व के समस्त राष्ट्रों के नागरिकों जागो! चुप मत बैठे! आगे आओ! अन्यायियों-अत्याचारियों से डरो मत! भारतीय संविधान की संकल्पना और उद्देशिका में वर्णित आर्थिक न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए सार्वजनिक धन रूपी राष्ट्रकोष को सार्वजनिक जनजीवन के हितार्थ शिक्षा, रोजगार, सुखसुविधा, संरक्षण आदि चारों सार्वजनिक सेवाओं में समुचित रूप से विनियोजित करने सम्बन्धी राष्ट्रीय न्यायशीलता की स्थापना हेतु न्यायधर्मसभा द्वारा संचालित इस सर्वजनकल्याणकारी अभियान में सम्मिलित होकर अपना जीवन धन्य बनाएँ और अपने मानवीय कर्तव्य का पालन करें।

❀❀❀